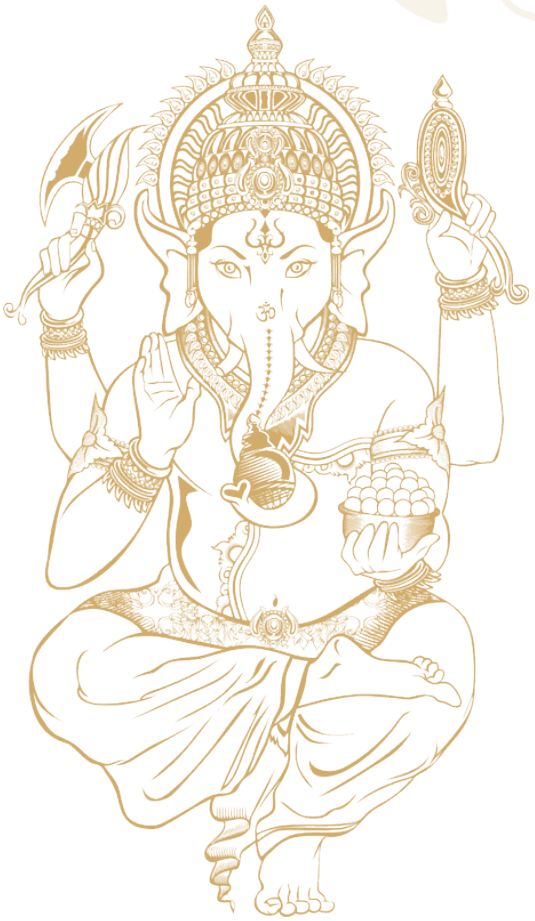

Mr.

05 May 2008

05:15 PM

Tonk

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121866801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**05/05/2008**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**17:15:00 घंटे**
इष्ट	28:40:58 घटी
स्थान	**Tonk**
राज्य	Rajasthan
देश	India

अक्षांश	26:10:00 उत्तर
रेखांश	75:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:26:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	16:48:20 घंटे
वेलान्तर	00:03:19 घंटे
साम्पातिक काल	07:43:12 घंटे
सूर्योदय	05:46:36 घंटे
सूर्यास्त	19:00:30 घंटे
दिनमान	13:13:53 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	21:22:30 मेष
लग्न के अंश	29:06:18 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**भरणी - 3**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	सौभाग्य
करण	नाग
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ले-लेखपाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1930	वैशाख	15
पंजाबी	संवत : 2065	वैशाख	23
बंगाली	सन् : 1415	वैशाख	22
तमिल	संवत : 2065	चिथिराई	22
केरल	कोल्लम : 1183	मेदम	22
नेपाली	संवत : 2065	वैशाख	23
चैत्रादि	संवत : 2065	वैशाख	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2065	चैत्र	कृष्ण 15

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ___: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 17:48:13
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ___: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 26:05:20 घंटे
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय कालीन योग ___: आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____: 13:39:54 घंटे
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण ___: चतुष्पाद
करण समाप्ति काल _____: 07:41:55 घंटे
जन्म करण _____: नाग
भयात _____: 30:25:36
भभोग _____: 52:31:26
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 8 वर्ष 5 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

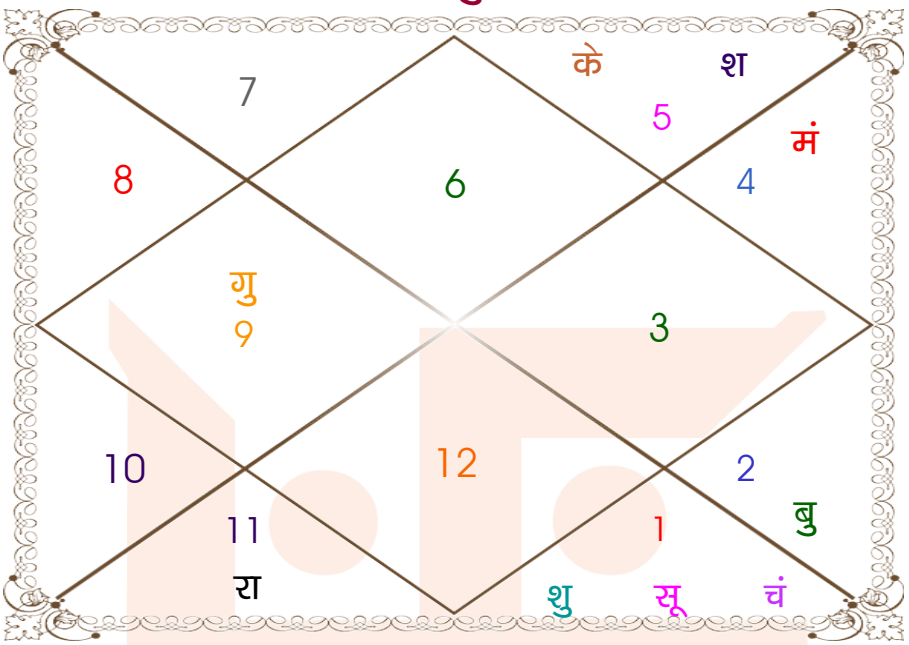

चन्द्र कुंडली

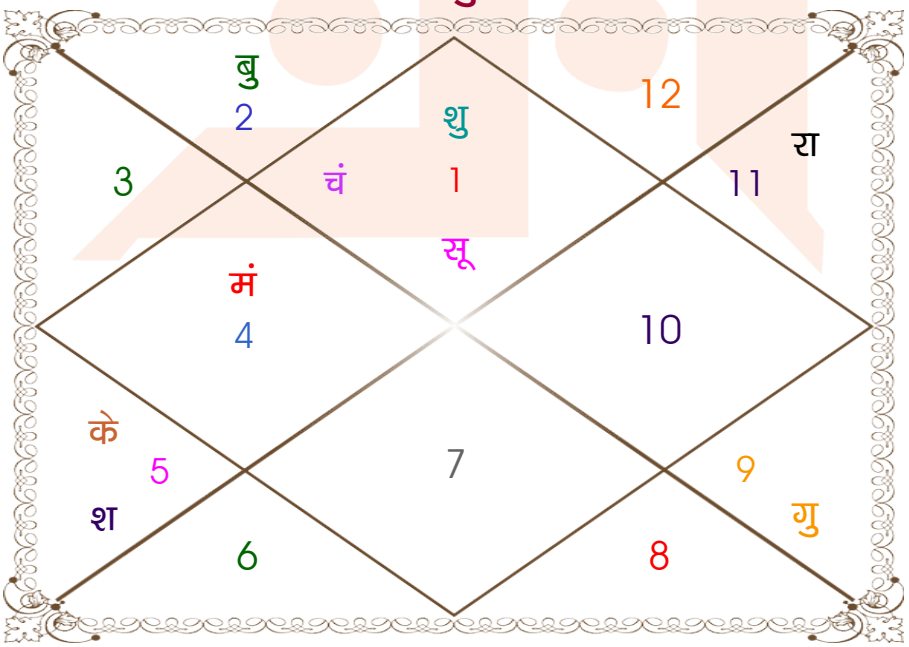

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

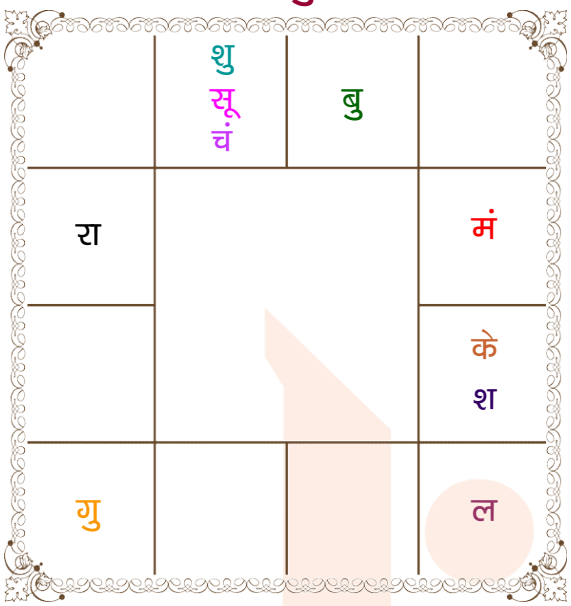

लग्न कुंडली

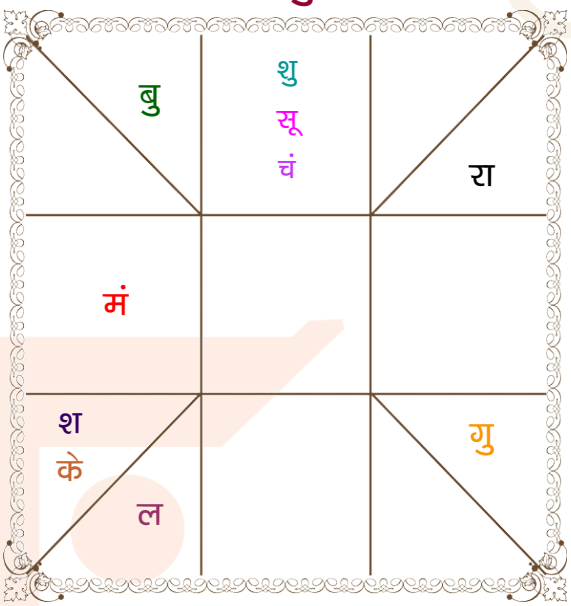

विंशोत्तरी
शुक्र 8वर्ष 5मा 5दि

शुक्र

05/05/2008

11/10/2116

शुक्र	10/10/2016
सूर्य	10/10/2022
चन्द्र	10/10/2032
मंगल	11/10/2039
राहु	10/10/2057
गुरु	10/10/2073
शनि	10/10/2092
बुध	11/10/2109
केतु	11/10/2116

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 1मा 8दि

संकटा

14/06/2023

14/06/2031

संकटा	25/03/2025
मंगला	14/06/2025
पिंगला	23/11/2025
धान्या	25/07/2026
भ्रामरी	14/06/2027
भद्रिका	24/07/2028
उल्का	23/11/2029
सिद्धा	14/06/2031

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	29:06:18	320:07:07	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	---
सूर्य			मेष	21:22:30	00:58:08	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	उच्च राशि
चंद्र			मेष	21:02:44	15:14:44	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	सम राशि
मंगल			कर्क	03:42:23	00:31:41	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	नीच राशि
बुध			वृष	10:23:10	01:33:40	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	मित्र राशि
गुरु			धनु	28:22:00	00:00:46	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	चंद्र	स्वराशि
शुक्र		अ	मेष	12:05:14	01:13:52	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	सम राशि
शनि			सिंह	07:42:32	00:00:15	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	शत्रु राशि
राहु	व		कुंभ	00:01:33	00:10:52	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	00:01:33	00:10:52	मघा	1	10	सूर्य	केतु	केतु	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	27:36:28	00:02:20	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
नेप			कुंभ	00:09:23	00:00:41	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	---
प्लूटो	व		धनु	06:53:47	00:00:58	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
दशम भाव			मिथु	29:56:44	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:58:33

लग्न-चलित

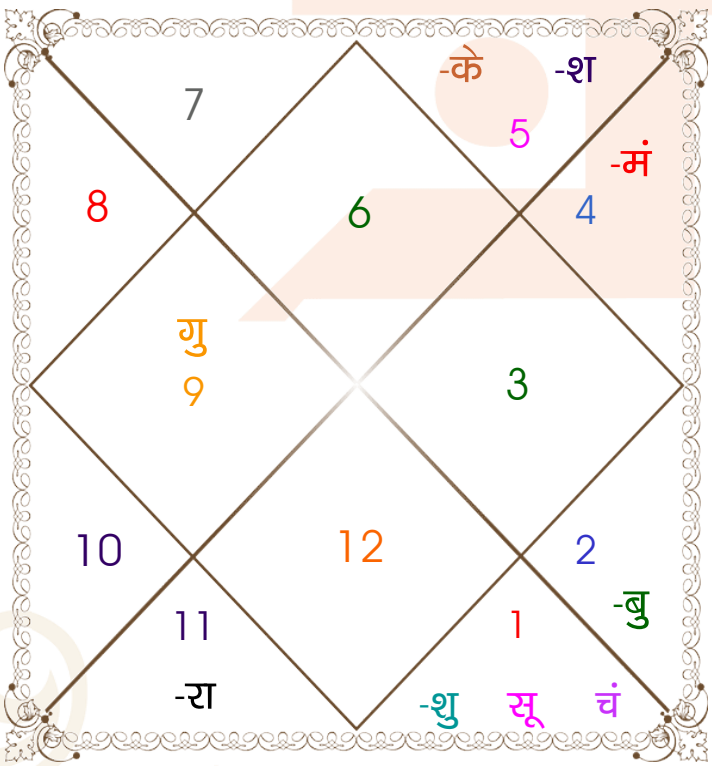

चन्द्र कुंडली

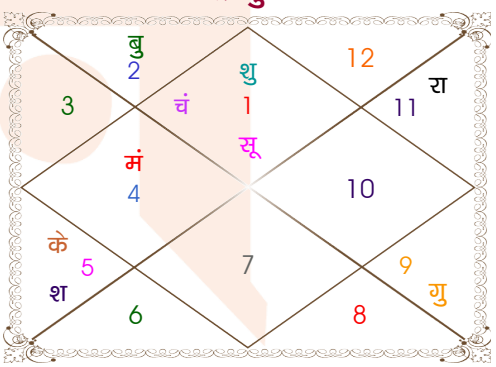

नवमांश कुंडली

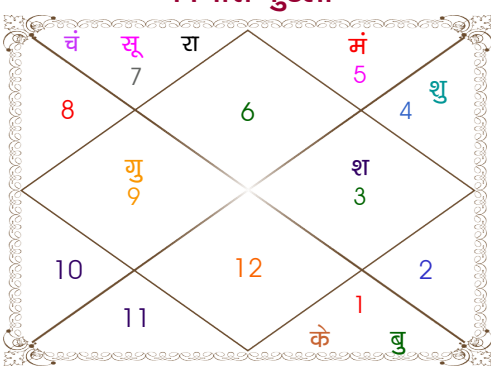

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	14:14:43	कन्या	29:06:18
2	तुला	14:14:43	तुला	29:23:07
3	वृश्चिक	14:31:31	वृश्चिक	29:39:56
4	धनु	14:48:20	धनु	29:56:44
5	मकर	14:48:20	मकर	29:39:56
6	कुम्भ	14:31:31	कुम्भ	29:23:07
7	मीन	14:14:43	मीन	29:06:18
8	मेष	14:14:43	मेष	29:23:07
9	वृष	14:31:31	वृष	29:39:56
10	मिथुन	14:48:20	मिथुन	29:56:44
11	कर्क	14:48:20	कर्क	29:39:56
12	सिंह	14:31:31	सिंह	29:23:07

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	29:06:18
2	तुला	28:01:17
3	वृश्चिक	28:26:36
4	धनु	29:56:44
5	कुम्भ	01:43:52
6	मीन	02:01:10
7	मीन	29:06:18
8	मेष	28:01:17
9	वृष	28:26:36
10	मिथुन	29:56:44
11	सिंह	01:43:52
12	कन्या	02:01:10

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

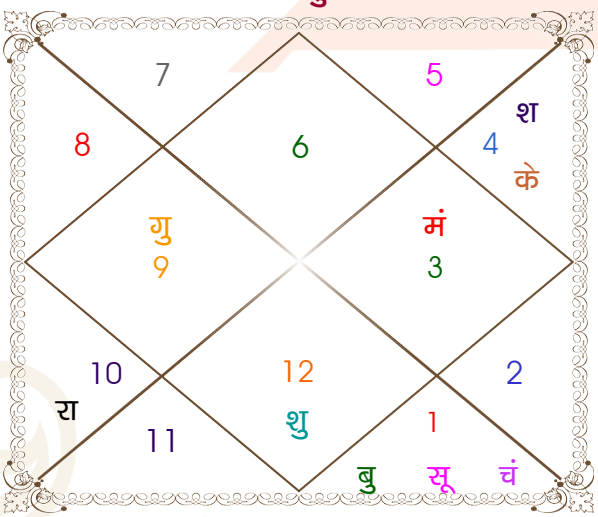

भाव कुंडली

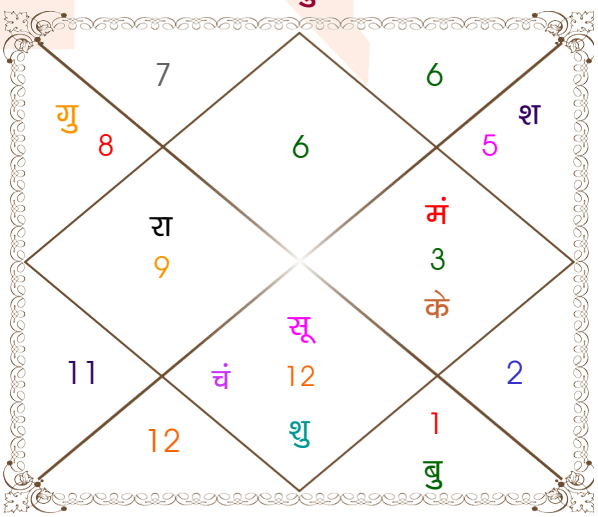

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	वृद्ध	दीप्त	उपवेशन	28.10	71 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध	निपीदित	प्रकाश	10.08	58 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	मृत	भीत	निद्रा	0.90	68 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	वृद्ध	मुदित	प्रकाश	2.05	34 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत	स्वस्थ	भोजन	0.39	24 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा	विकल	निद्रा	8.80	16 %
शनि	ज्ञाति	आयु	कुमार	खल	आगमन	1.20	50 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	मुदित	प्रकाश	0.00	97 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	खल	आगमन	0.00	97 %
कुल						51.52	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

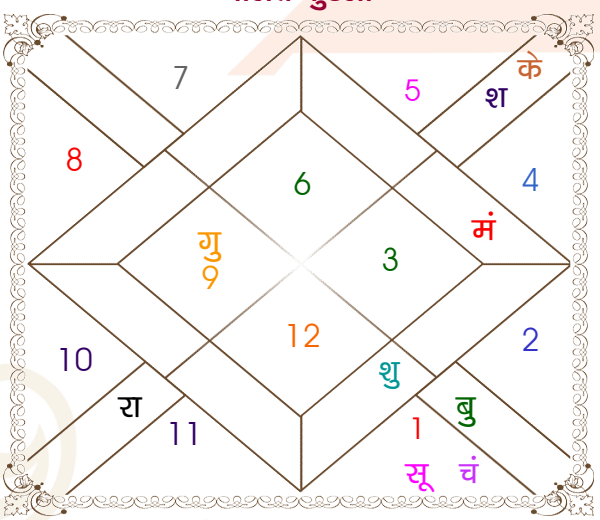

लग्न-चलित

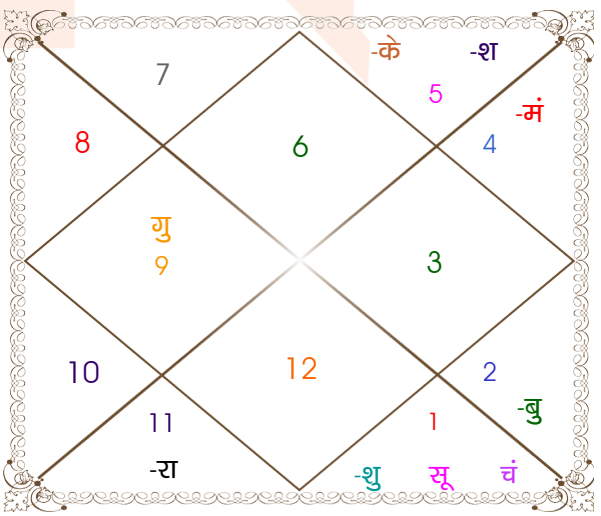

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

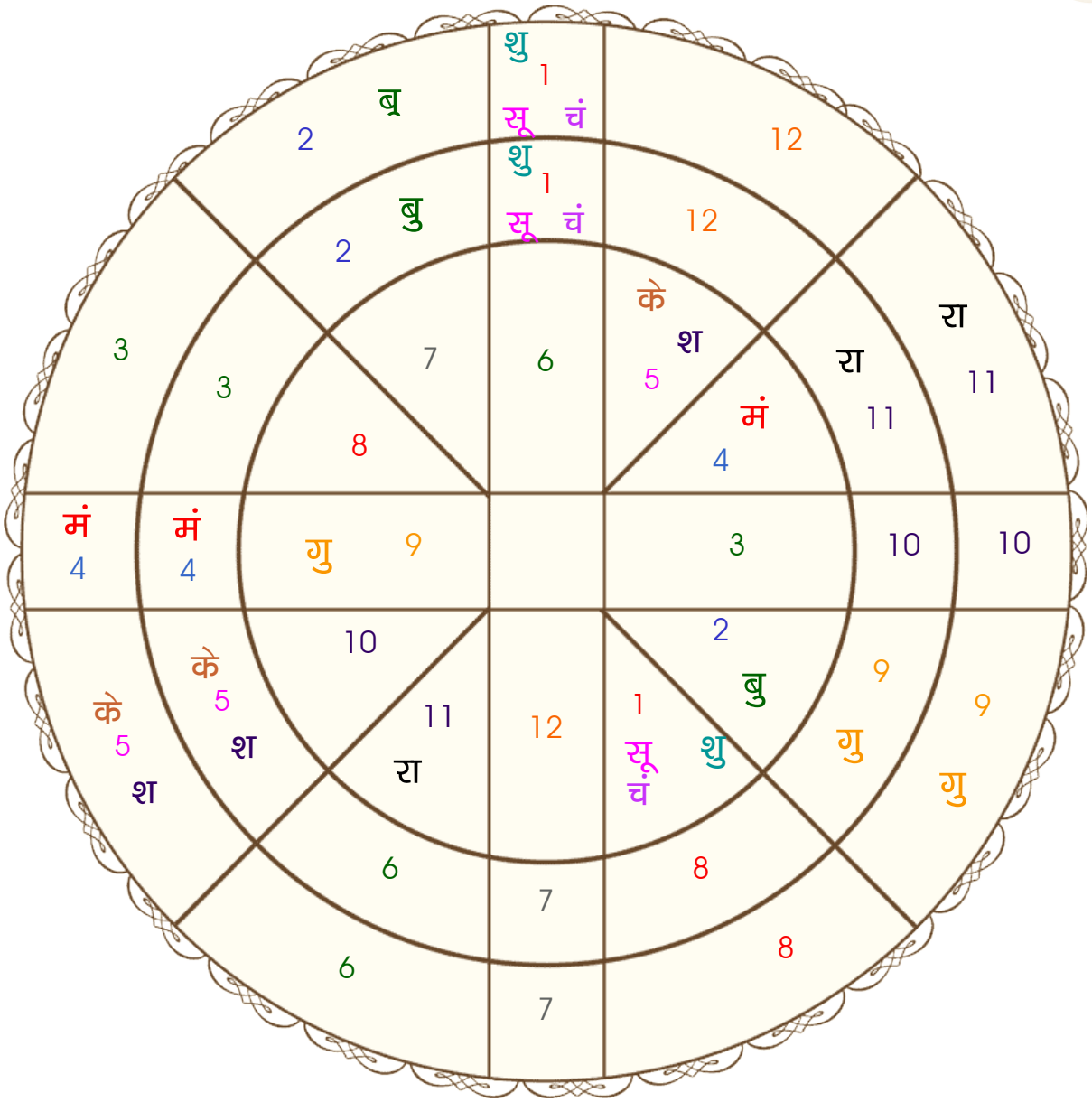

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 8 वर्ष 3 मास 7 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मेष	21:28:56	मंगल	शुक्र	गुरु	चंद्र
चंद्र		मेष	21:09:10	मंगल	शुक्र	गुरु	शुक्र
मंगल		कर्क	03:48:49	चंद्र	शनि	शनि	बुध
बुध		वृष	10:29:36	शुक्र	चंद्र	चंद्र	शनि
गुरु		धनु	28:28:27	गुरु	सूर्य	मंगल	मंगल
शुक्र		मेष	12:11:40	मंगल	केतु	बुध	सूर्य
शनि		सिंह	07:48:58	सूर्य	केतु	गुरु	शनि
राहु	व	कुंभ	00:08:00	शनि	मंगल	बुध	बुध
केतु	व	सिंह	00:08:00	सूर्य	केतु	केतु	शुक्र
हर्ष		कुंभ	27:42:55	शनि	गुरु	शुक्र	गुरु
नेप		कुंभ	00:15:49	शनि	मंगल	बुध	बुध
प्लूटो	व	धनु	07:00:13	गुरु	केतु	राहु	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	29:12:44	बुध	मंगल	शनि	चंद्र
2	तुला	28:07:43	शुक्र	गुरु	शुक्र	शनि
3	वृश्चि	28:33:02	मंगल	बुध	शनि	केतु
4	मक	00:03:10	शनि	सूर्य	राहु	शनि
5	कुंभ	01:50:18	शनि	मंगल	बुध	शनि
6	मीन	02:07:36	गुरु	गुरु	राहु	शनि
7	मीन	29:12:44	गुरु	बुध	शनि	चंद्र
8	मेष	28:07:43	मंगल	सूर्य	चंद्र	बुध
9	वृष	28:33:02	शुक्र	मंगल	शनि	केतु
10	कर्क	00:03:10	चंद्र	गुरु	चंद्र	शनि
11	सिंह	01:50:18	सूर्य	केतु	शुक्र	राहु
12	कन्या	02:07:36	बुध	सूर्य	गुरु	शुक्र

के.पी. अयनांश : 23:52:07

फॉरच्युना : कन्या 28:52:58

लग्न कुंडली

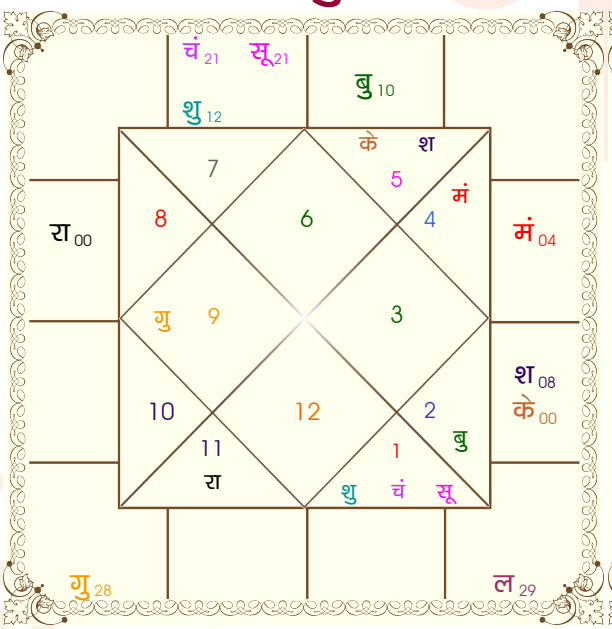

भाव कुंडली

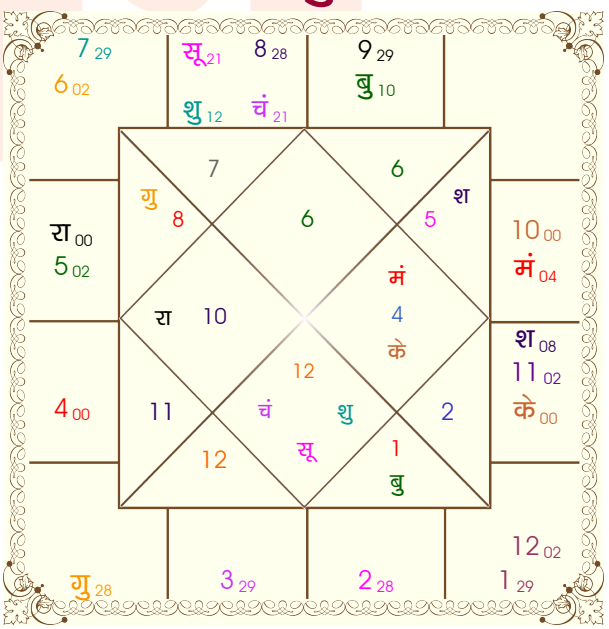

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध-
2	सूर्य- चंद्र- शुक्र-
3	मंगल- गुरु, राहु-
4	मंगल- शनि- राहु,
5	मंगल- शनि-
6	गुरु-
7	सूर्य+ चंद्र+ बुध, गुरु+ शुक्र,
8	मंगल- बुध, राहु-
9	सूर्य- चंद्र- शुक्र-
10	चंद्र- मंगल, बुध- शुक्र, शनि, राहु, केतु+
11	सूर्य- मंगल, गुरु- शनि,
12	बुध-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 7+ 9- 11-
चंद्र	2- 7+ 9- 10-
मंगल	3- 4- 5- 8- 10, 11,
बुध	1- 7, 8, 10- 12-
गुरु	3, 6- 7+ 11-
शुक्र	2- 7, 9- 10,
शनि	4- 5- 10, 11,
राहु	3- 4, 8- 10,
केतु	10+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	बु
2	--	--	सू चं	शु
3	--	गु	रा	मं
4	--	रा	मं	श
5	--	--	मं	श
6	--	--	--	गु
7	सू चं बु गु	सू चं शु	--	गु
8	--	बु	रा	मं
9	--	--	सू चं	शु
10	शु श रा के	मं के	बु	चं
11	मं	श	गु	सू
12	--	--	--	बु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	11	4,8,12	मेष	7
चंद्र	10	---	मेष	7
मंगल	3,8	1,5,9	कर्क	10
बुध	1,12	3,7	वृष	8
गुरु	6,7	2,6,10	धनु	3
शुक्र	2,9	---	मेष	7
शनि	4,5	---	सिंह	11
राहु	---	---	कुम्भ	4
केतु	---	11	सिंह	10

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,9	---	7	6,7	2,6,10	3
चंद्र	2,9	---	7	6,7	2,6,10	3
मंगल	4,5	---	11	4,5	---	11
बुध	10	---	7	10	---	7
गुरु	11	4,8,12	7	3,8	1,5,9	10
शुक्र	---	11	10	1,12	3,7	8
शनि	---	11	10	6,7	2,6,10	3
राहु	3,8	1,5,9	10	1,12	3,7	8
केतु	---	11	10	---	11	10

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	21.38	21.05	93.71	40.39	268.37	12.09	127.71	300.03	120.03	327.61	300.16	246.90
सूर्य	--	युति	पंचा	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
21.38	0.00	9.99	0.87	0.00	0.00	5.63	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	युति	--	पंचा	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
21.05	9.99	0.00	0.51	0.00	0.00	5.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	--	सप्त	--	--	8वां	--	--	8वां	--
93.71	0.00	0.00	0.00	0.00	8.48	0.00	0.00	9.27	0.00	0.00	9.32	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	चतु	--	--	--	--	--
40.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.29	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	5वां	5वां	सप्त	5वां	--	--	--	--	--	तृती	--	--
268.37	7.44	7.20	8.48	3.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.94	0.00	0.00
शुक्र	युति	युति	--	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--
12.09	5.63	5.91	0.00	0.00	0.00	0.00	1.24	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	--	10वा	--	--	--	सप्त	युति	--	सप्त	पंच
127.71	0.00	0.00	0.00	9.61	0.00	0.00	0.00	6.93	6.93	0.00	7.03	2.93
राहु	--	--	--	--	--	पंचा	सप्त	--	सप्त	--	युति	--
300.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.00	6.93	0.00	10.00	0.00	10.00	0.00
केतु	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	--	--	सप्त	--
120.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.93	10.00	0.00	0.00	10.00	0.00
हर्ष	--	--	--	पंचा	--	अष्ट	--	--	--	--	--	--
327.61	0.00	0.00	0.00	0.34	0.00	0.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	--	--	--	पंचा	सप्त	युति	सप्त	--	--	--
300.16	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.99	7.03	10.00	10.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	अष्टां	अष्टां	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--
246.90	0.68	0.23	0.00	0.00	0.00	0.63	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	179.11	209.39	239.67	269.95	299.67	329.39	359.11	29.39	59.67	89.95	119.67	149.39
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
21.38	0.00	6.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.68	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
21.05	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.42	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
93.71	8.86	1.28	0.00	9.23	9.12	0.00	0.00	0.00	0.00	9.23	0.00	1.28
बुध	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
40.39	0.00	4.07	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.07	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां
268.37	0.00	0.00	0.00	9.86	0.00	2.89	2.94	9.94	0.00	9.86	0.00	9.94
शुक्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
12.09	2.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--
127.71	6.21	0.00	0.00	0.00	6.66	0.00	0.00	6.44	0.00	0.00	6.66	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--
300.03	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.00	2.91	0.00	2.99	0.99	9.99	0.00
केतु	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
120.03	2.91	2.96	2.99	0.99	9.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त
327.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.83	0.00	2.68	2.58	0.00	0.00	9.83
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	--	--
300.16	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.00	2.89	2.94	2.98	0.95	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
246.90	0.00	0.00	7.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.27	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	179.11	208.02	238.44	269.95	301.73	332.02	359.11	28.02	58.44	89.95	121.73	152.02
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
21.38	0.00	7.67	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.67	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
21.05	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.45	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
93.71	8.86	0.25	0.00	9.23	9.79	0.00	0.00	0.00	0.00	9.23	0.00	2.71
बुध	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
40.39	0.00	2.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.72	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां	षष्ठ	सप्त	--	9वां
268.37	0.00	0.00	0.00	9.86	0.00	1.73	2.94	9.99	0.99	9.86	0.00	9.28
शुक्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
12.09	2.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--
127.71	6.21	0.00	0.00	0.00	8.10	0.00	0.00	5.28	0.00	0.00	8.10	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--
300.03	0.00	0.00	0.00	0.00	9.84	0.00	2.91	0.00	2.75	0.99	9.84	0.00
केतु	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
120.03	2.91	2.60	2.75	0.99	9.84	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.84	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त
327.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.95	0.00	2.98	2.93	0.00	0.00	8.95
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	--	--
300.16	0.00	0.00	0.00	0.00	9.86	0.00	2.89	2.54	2.70	0.95	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--
246.90	0.00	0.00	6.33	0.00	0.65	0.87	0.00	0.00	6.33	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

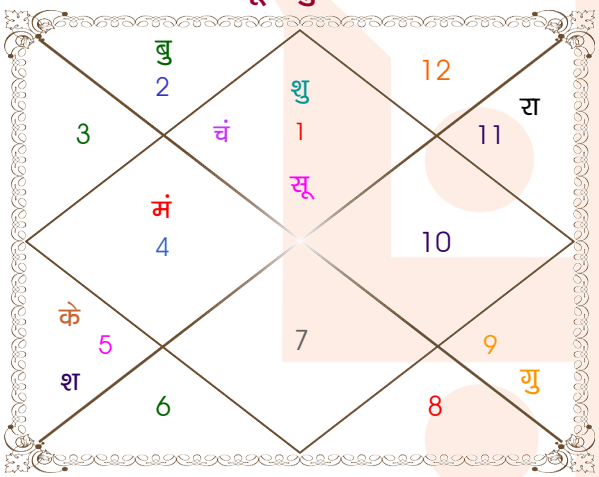

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

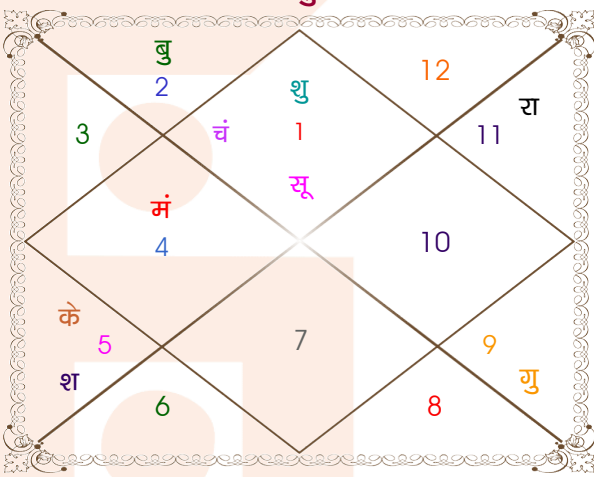

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

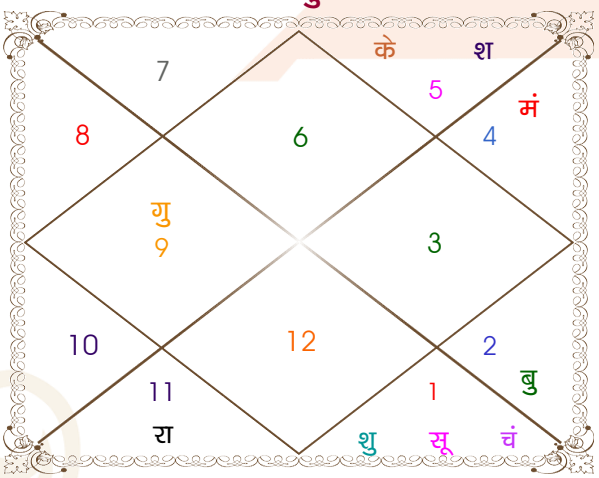

देह विचारः

होरा कुंडली

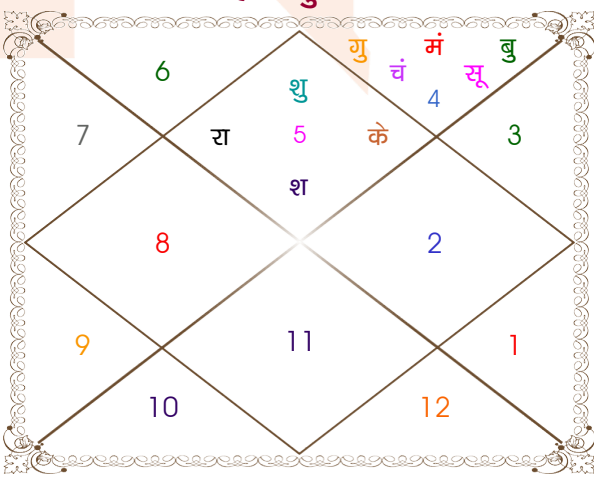

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

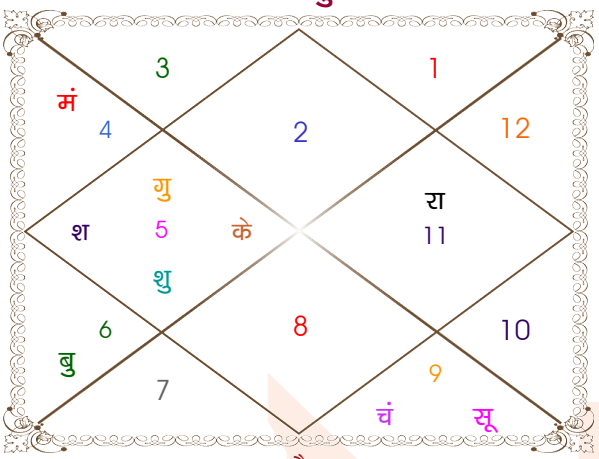

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

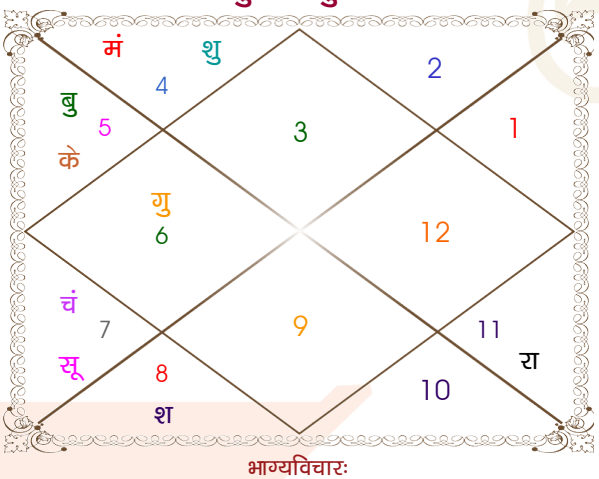

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

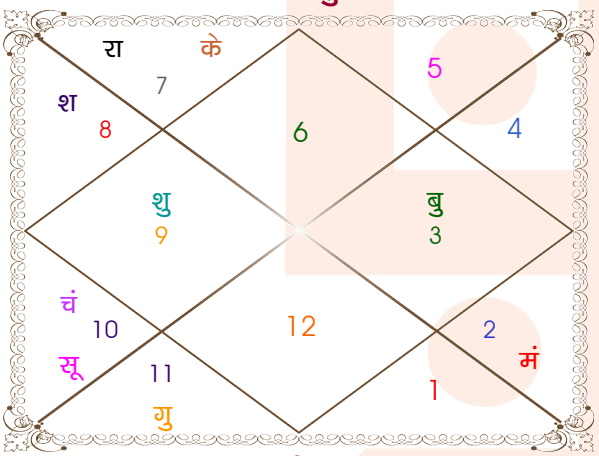

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

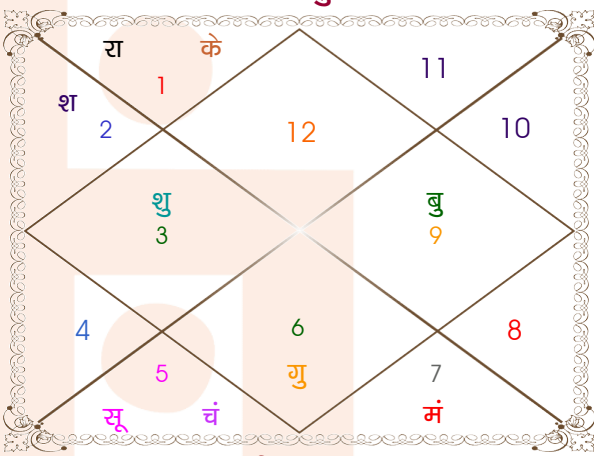

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

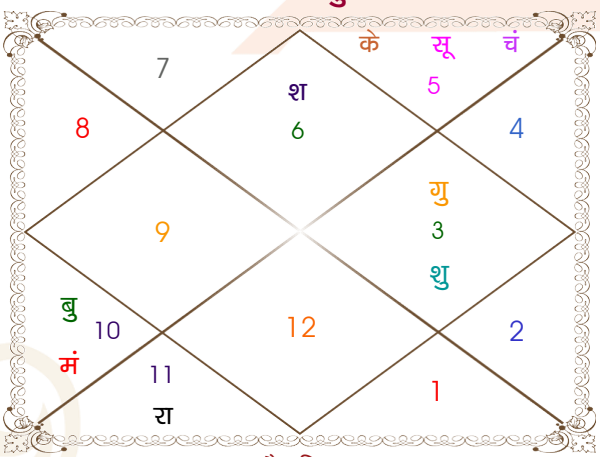

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

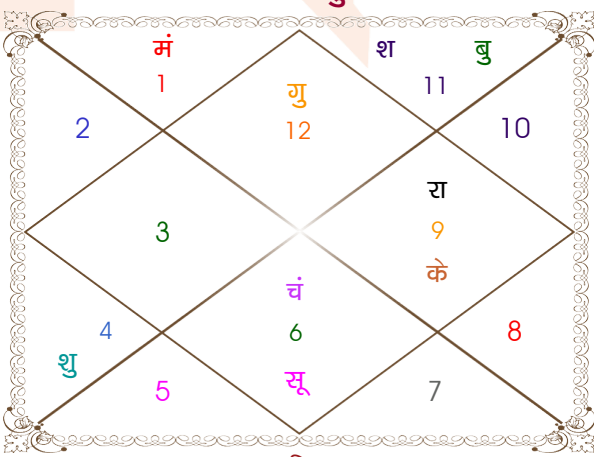

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

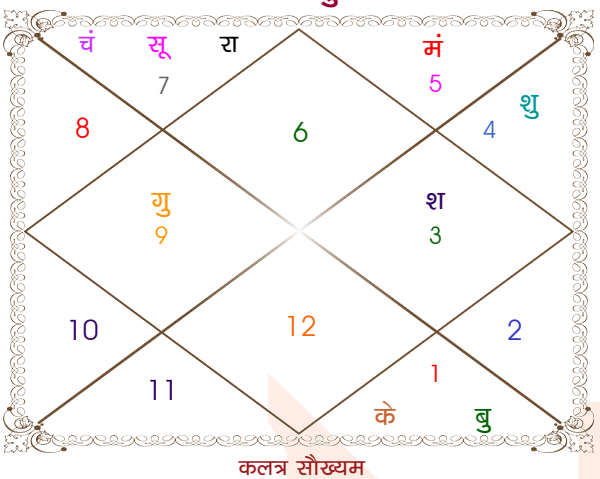

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

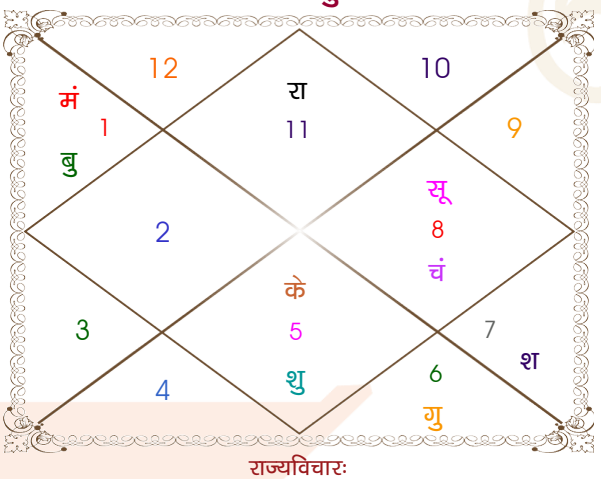

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

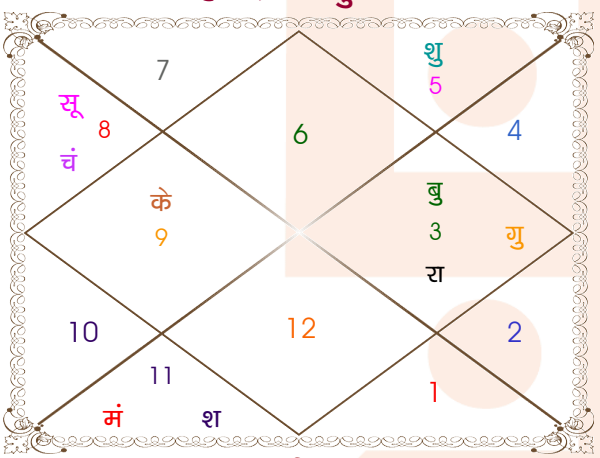

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

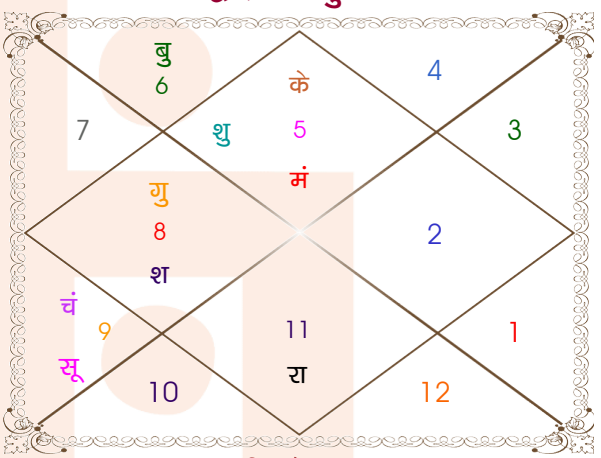

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

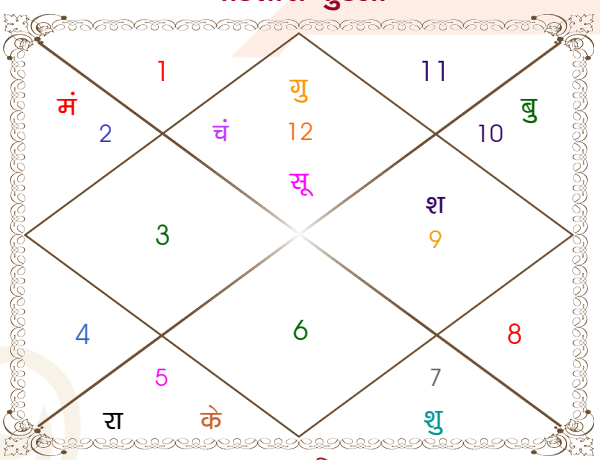

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

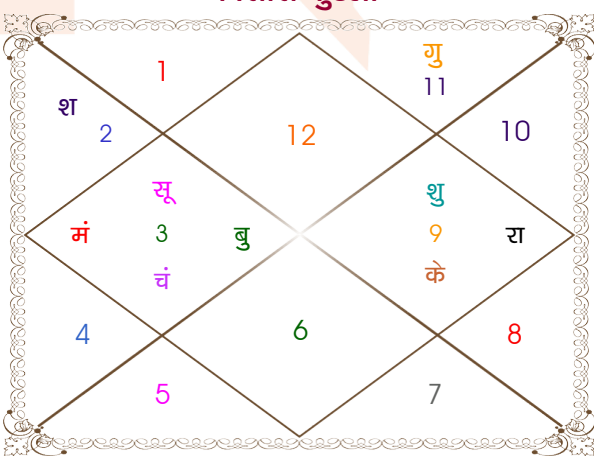

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

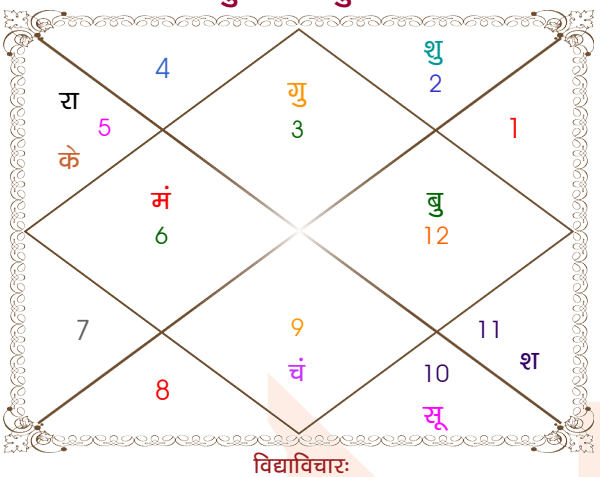

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

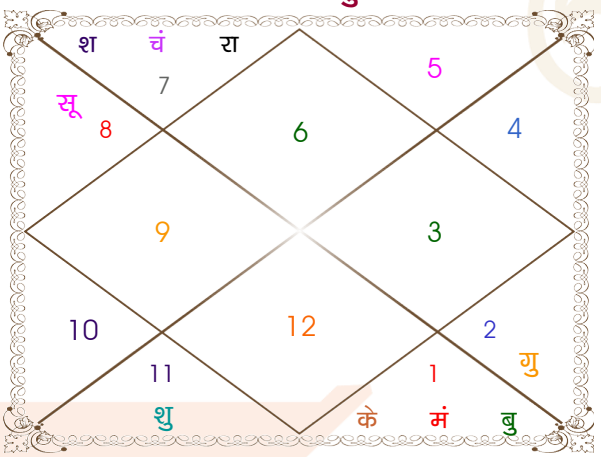

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

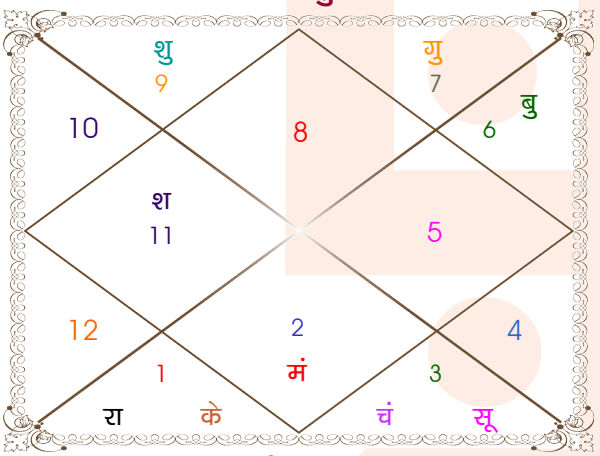

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

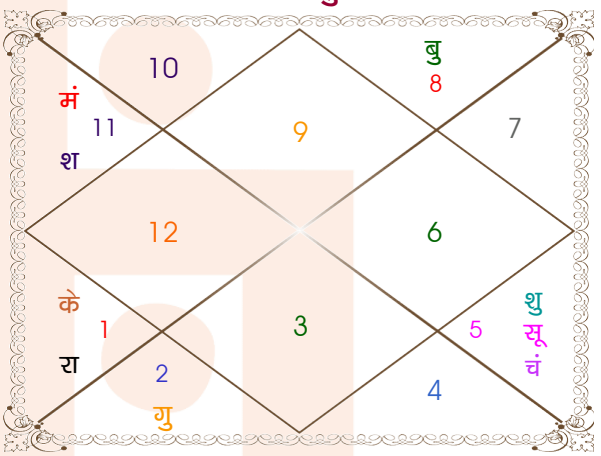

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

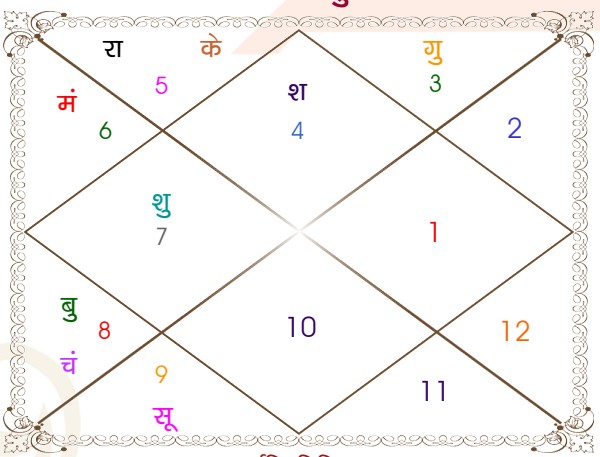

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

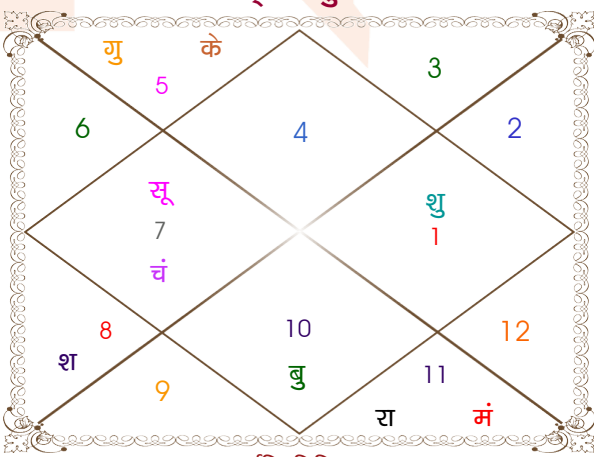

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	मेष	मेष	कर्क	वृष	धनु	मेष	सिंह	कुंभ	सिंह
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	वृष	धनु	धनु	कर्क	कन्या	सिंह	सिंह	सिंह	कुंभ	सिंह
चतुर्थांश	मिथु	तुला	तुला	कर्क	सिंह	कन्या	कर्क	वृश्चि	कुंभ	सिंह
सप्तमांश	कन्या	सिंह	सिंह	मक	मक	मिथु	मिथु	कन्या	कुंभ	सिंह
नवमांश	कन्या	तुला	तुला	सिंह	मेष	धनु	कर्क	मिथु	तुला	मेष
दशमांश	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि	मेष	मेष	कन्या	सिंह	तुला	कुंभ	सिंह
द्वादशांश	सिंह	धनु	धनु	सिंह	कन्या	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	कुंभ	सिंह
षोडशांश	मीन	मीन	मीन	वृष	मक	मीन	तुला	धनु	सिंह	सिंह
विंशांश	मीन	मिथु	मिथु	मिथु	मिथु	कुंभ	धनु	वृष	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	मिथु	मक	धनु	कन्या	मीन	मिथु	वृष	कुंभ	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	कन्या	वृश्चि	तुला	मेष	मेष	वृष	कुंभ	तुला	तुला	मेष
त्रिंशांश	वृश्चि	मिथु	मिथु	वृष	कन्या	तुला	धनु	कुंभ	मेष	मेष
खवेदांश	धनु	सिंह	सिंह	कुंभ	वृश्चि	वृष	सिंह	कुंभ	मेष	मेष
अक्षवेदांश	कर्क	धनु	वृश्चि	कन्या	वृश्चि	मिथु	तुला	कर्क	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	कर्क	तुला	तुला	कुंभ	मक	सिंह	मेष	वृश्चि	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
मंगल	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
बुध	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	4 नागपुष्प
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
शनि	1 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.40	11.25	17.85	17.15	15.25	8.10	9.50	11.75	8.90
सप्तवर्ग	12.38	11.23	17.48	16.75	13.88	9.23	10.80	11.55	8.58
दशवर्ग	11.30	10.83	16.73	16.20	11.88	11.25	10.23	10.23	6.95
षोडशवर्ग	10.68	10.43	16.30	15.90	13.05	11.60	10.60	11.15	8.30

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	56	56	8	18	2	55	36
सप्तवर्गज बल	92	86	143	150	101	49	88
ओजयुग्मक बल	30	0	15	15	30	15	30
केन्द्र बल	30	30	30	15	60	30	15
द्रेष्काण बल	0	15	15	15	0	0	0
कुल स्थान बल	208	187	211	213	193	149	169
कुल दिग्बल	37	23	59	14	30	26	17
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	60	120	60	0	0	0	60
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	60	0	0	0	0	0	0
अयन बल	103	9	57	57	2	48	16
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	258	198	141	117	98	83	205
कुल चेष्टाबल	0	0	30	27	38	5	36
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	1	1	13	-3	-13	0	10
कुल षट्बल	565	461	470	395	380	306	445
रूप षट्बल	9.4	7.7	7.8	6.6	6.3	5.1	7.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.9	1.3	1.6	0.9	1.0	0.9	1.5
संबंधित पद	1	4	2	6	5	7	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	50.36	2.48	15.59	22.40	9.13	16.02	35.71
कष्ट फल	7.51	15.45	39.45	36.92	35.87	16.68	24.29

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	395	306	470	380	445	445	380	470	306	395	461	565
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	14	-9	30	13	-6	-3	32	54	-10	65	67	84
कुल भाव बल	468	346	519	393	489	452	442	564	346	490	538	689
रूप भाव बल	7.8	5.8	8.7	6.5	8.2	7.5	7.4	9.4	5.8	8.2	9.0	11.5
संबंधित पद	7	11	4	10	6	8	9	2	12	5	3	1

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

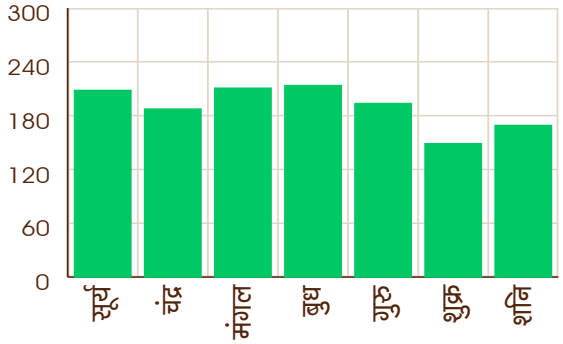

दिग्बल

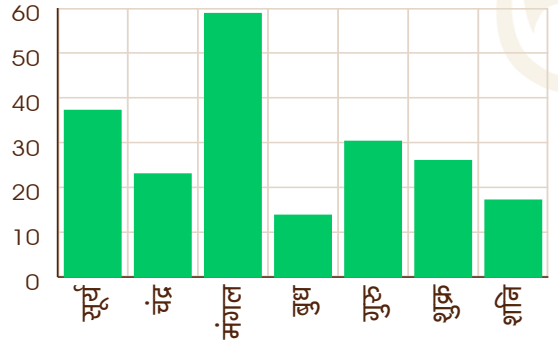

कालबल

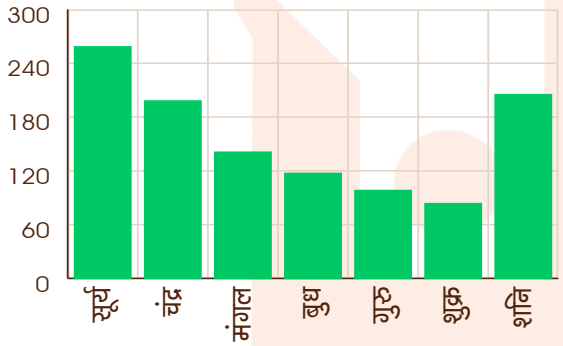

चेष्टाबल

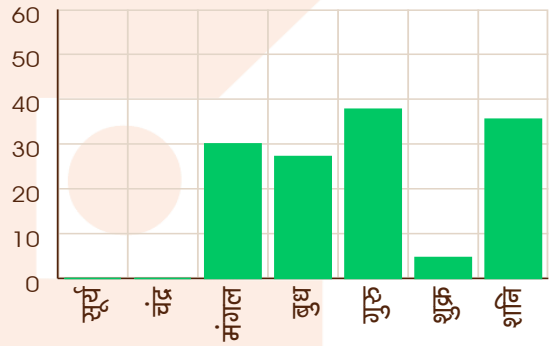

नैसर्गिक बल

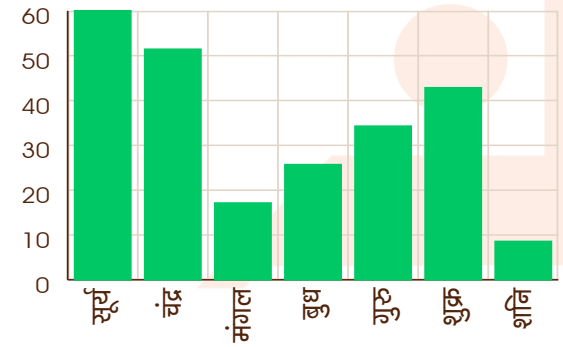

दृग्बल

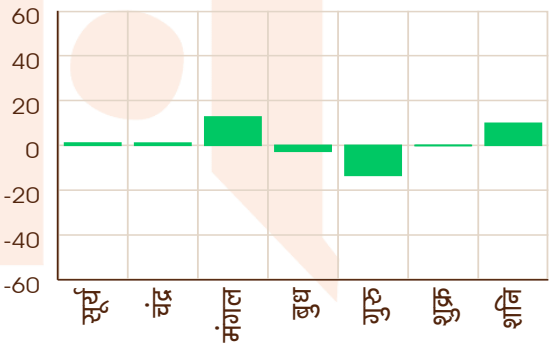

रूप षट्बल

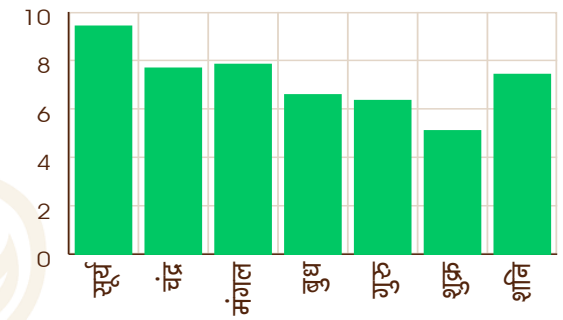

न्यूनतम षट्बल

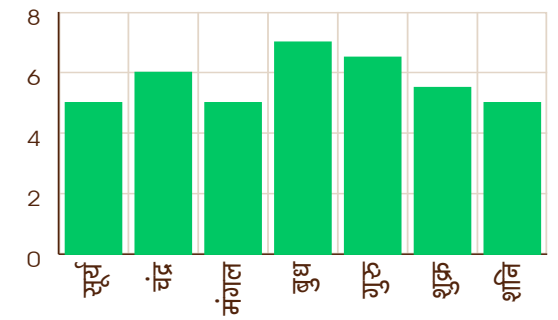

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

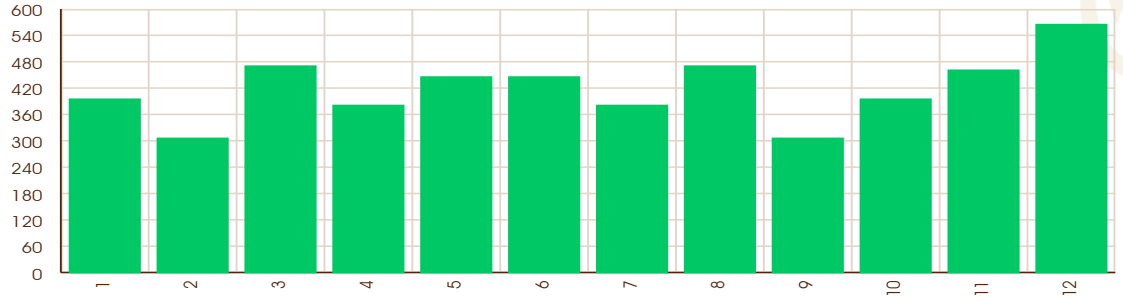

भावदिग्बल

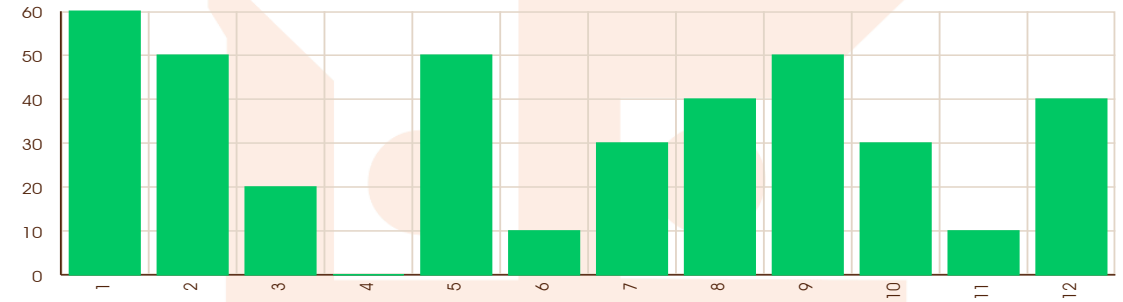

भावदृष्टि बल

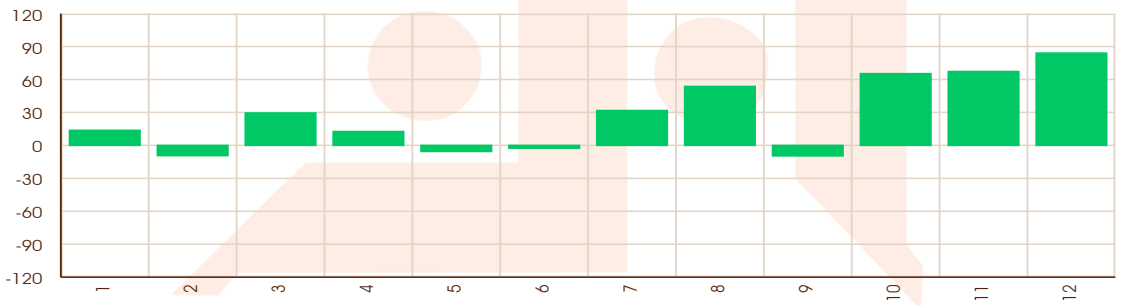

भाव बल

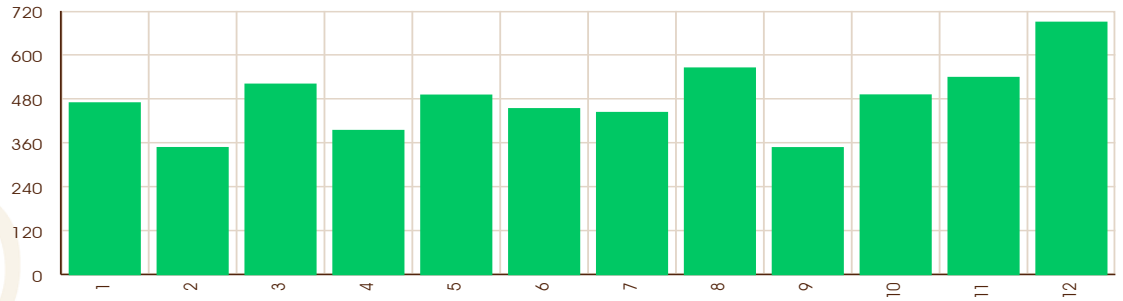

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

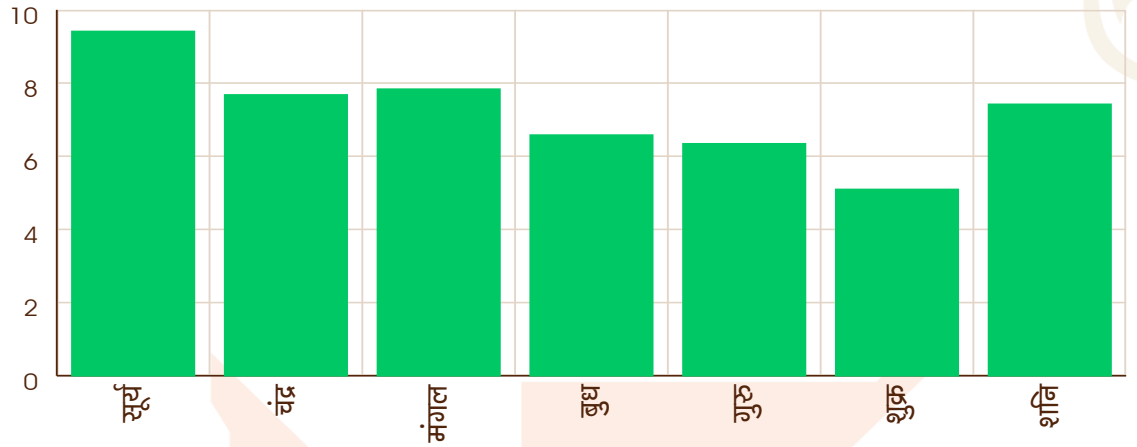

इष्ट - कष्ट फल

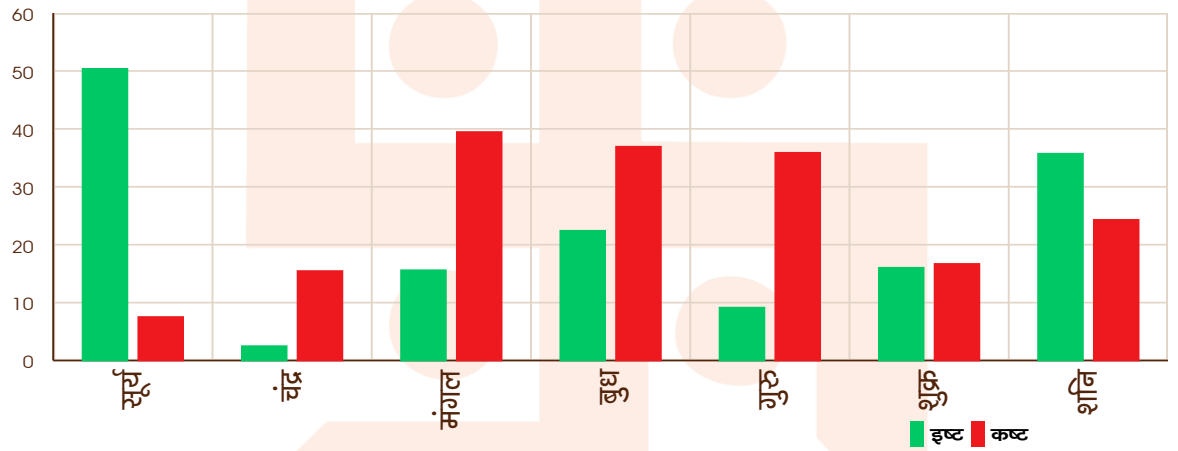

रूप भाव बल

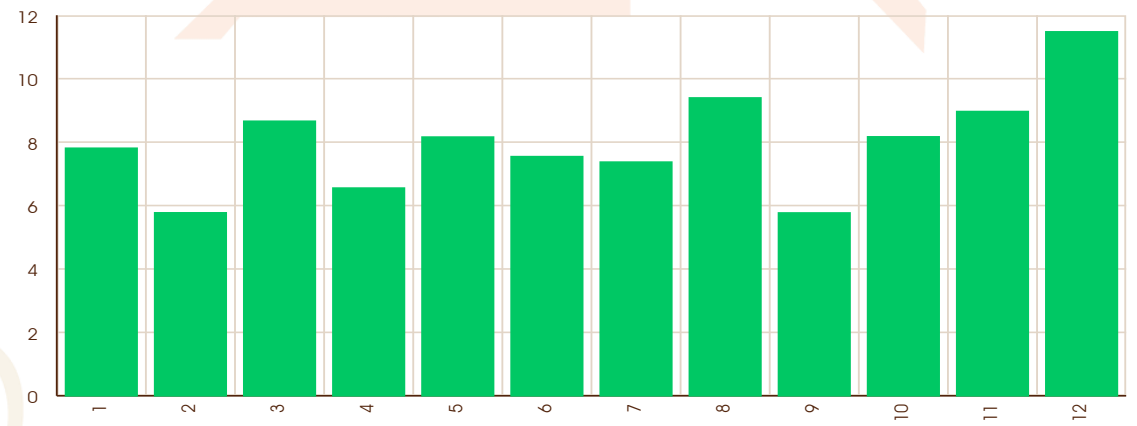

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	29:06:18	--	--	चित्रा	2	14
गुलिक	गु	कन्या	08:15:53	--	--	उ०फाल्गुनी	4	12
काल	का	तुला	00:29:37	--	--	चित्रा	3	14
मृत्यु	मृ	मिथु	10:49:51	--	--	आर्द्रा	2	6
यमघंटक	यम	कर्क	24:19:41	--	--	आश्लेषा	3	9
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	02:38:18	--	--	पुनर्वसु	4	7
धूम	धू	कन्या	04:42:30	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
व्यतिपात	व्य	तुला	25:17:30	--	--	विशाखा	2	16
परिवेश	परि	मेष	25:17:30	--	--	भरणी	4	2
इन्द्रचाप	इ	मीन	04:42:30	--	--	उ०भाद्रपद	1	26
उपकेतु	उप	मीन	21:22:30	--	--	रेवती	2	27

प्राणपद	:	वृश्चि	13:17:55	कारकाँश लग्न	:	धनु	15:18:04
भाव लग्न	:	मीन	21:12:04	होरा लग्न	:	कन्या	13:17:51
घटी लग्न	:	कन्या	11:51:21	वर्णद लग्न	:	मेष	17:35:51

उपग्रह कुंडली

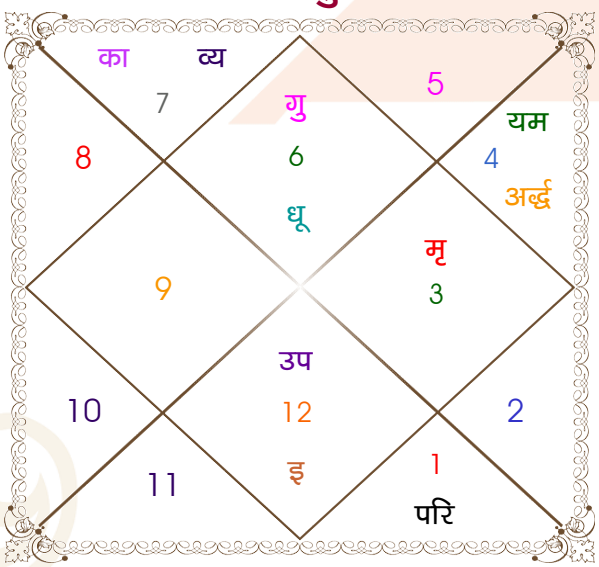

आरूढ़ कुंडली

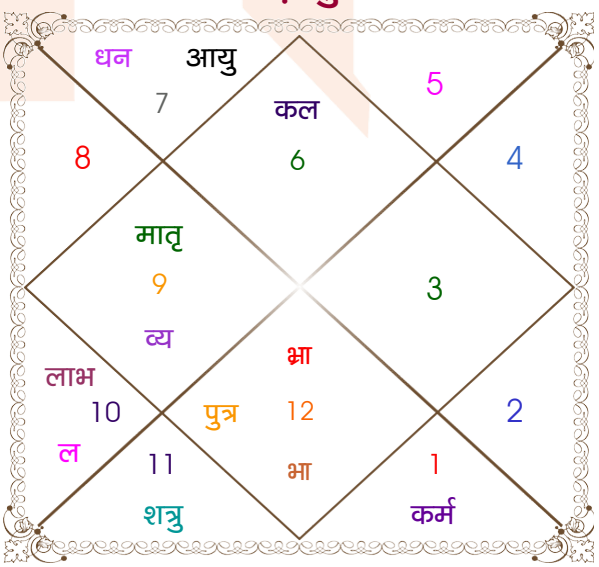

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षन्नाडी चक्र

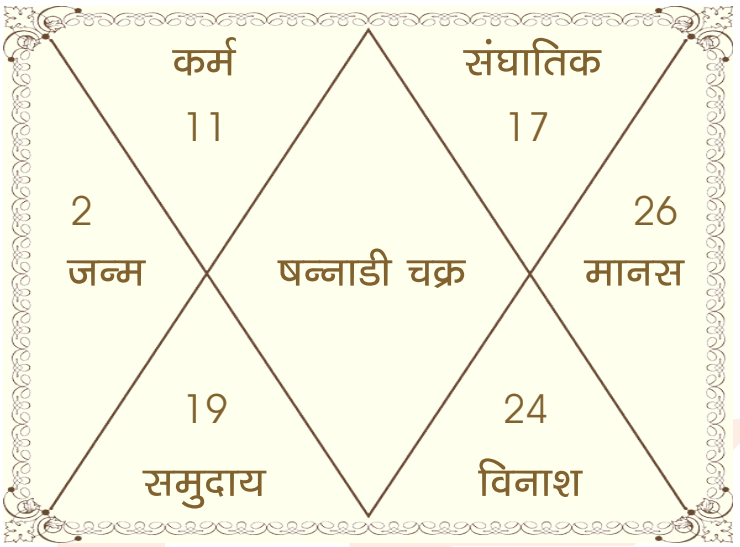

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	5	4	3	4	4	4	5	3	2	4	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	2	2	6	4	3	5	5	4	6	5	5	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	3	3	6	3	4	0	2	6	3	2	3	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	6	3	6	4	5	4	4	3	3	7	4	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
सूर्य	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	6	7	7	3	2	6	4	5	4	4	7	1	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	5	5	4	5	3	4	5	5	5	3	3	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	0	4	4	4	4	3	5	2	4	3	4	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	4	3	3	4	4	4	4	3	5	7	4	4	49

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	4	2	0	4	4	4	4	3	5	2	39
गुरु	2	6	4	5	4	4	7	1	6	7	7	3	56
मंगल	2	3	4	3	3	6	3	4	0	2	6	3	39
सूर्य	5	4	3	4	4	4	5	3	2	4	6	4	48
शुक्र	5	5	4	5	3	4	5	5	5	3	3	5	52
बुध	5	6	3	6	4	5	4	4	3	3	7	4	54
चंद्र	2	2	6	4	3	5	5	4	6	5	5	2	49
बिन्दु	25	29	28	29	21	32	33	25	26	27	39	23	337
रेखा	31	27	28	27	35	24	23	31	30	29	17	33	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	0	0	0	0	1	0	2	4	0	1	0	12
गुरु	0	2	0	4	2	0	3	0	4	3	3	2	23
मंगल	2	1	1	0	3	4	0	1	0	0	3	0	15
सूर्य	3	0	0	1	2	0	2	0	0	0	3	1	12
शुक्र	2	2	1	0	0	1	2	0	2	0	0	0	10
बुध	2	3	0	2	1	2	1	0	0	0	4	0	15
चंद्र	0	0	1	2	1	3	0	2	4	3	0	0	16
रेखा	13	8	3	9	9	11	8	5	14	6	14	3	103

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	0	0	0	0	1	0	0	4	0	1	0	10
गुरु	0	2	0	4	2	0	1	0	4	0	0	0	13
मंगल	2	1	1	0	3	3	0	0	0	0	3	0	13
सूर्य	3	0	0	1	2	0	2	0	0	0	3	1	12
शुक्र	2	2	0	0	0	0	0	0	2	0	0	0	6
बुध	2	3	0	2	1	2	0	0	0	0	4	0	14
चंद्र	0	0	1	2	1	2	0	2	4	3	0	0	15
रेखा	13	8	2	9	9	8	3	2	14	3	11	1	83

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	104	103	110	116	99	52	80
ग्रह पिंड	69	61	54	70	92	64	108
शोध्य पिंड	173	164	164	186	191	116	188

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

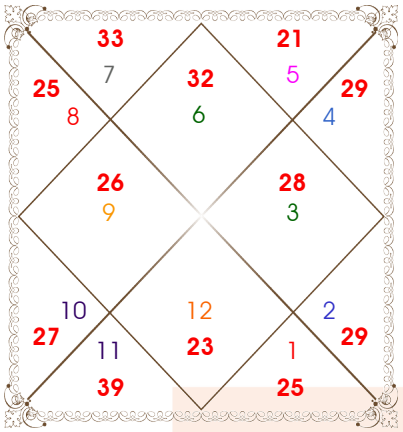

सूर्य का अष्टकवर्ग

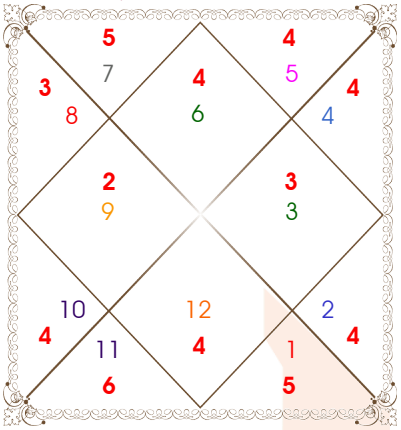

चंद्र का अष्टकवर्ग

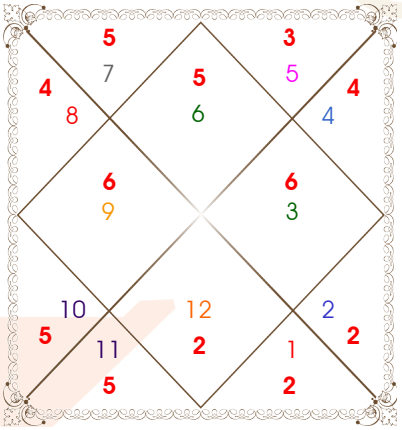

मंगल का अष्टकवर्ग

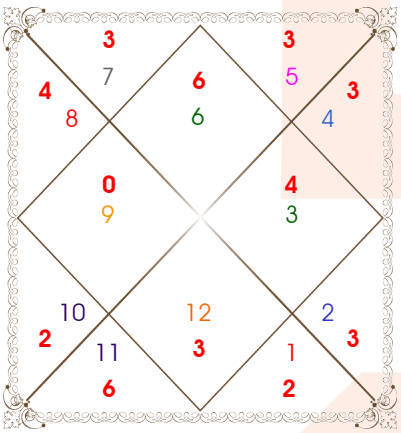

बुध का अष्टकवर्ग

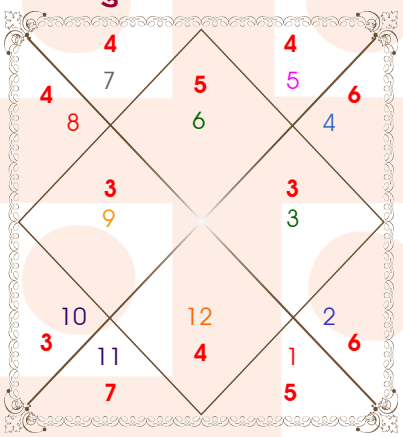

गुरू का अष्टकवर्ग

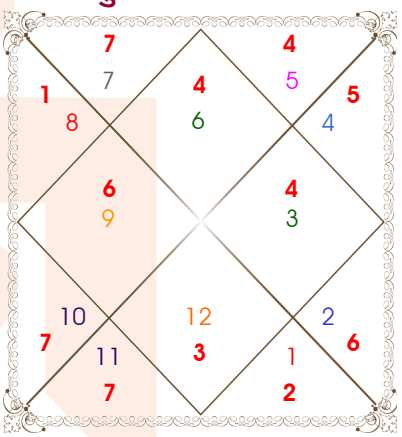

शुक्र का अष्टकवर्ग

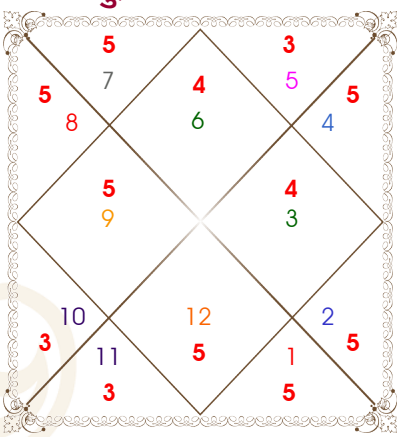

शनि का अष्टकवर्ग

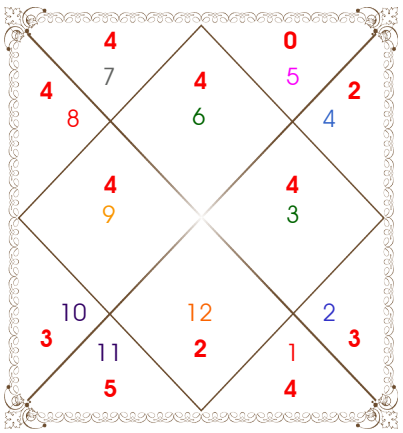

लग्न का अष्टकवर्ग

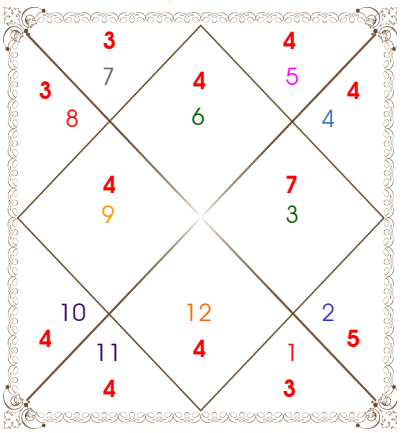

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

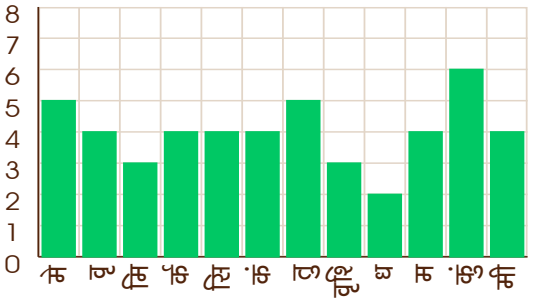

चन्द्र

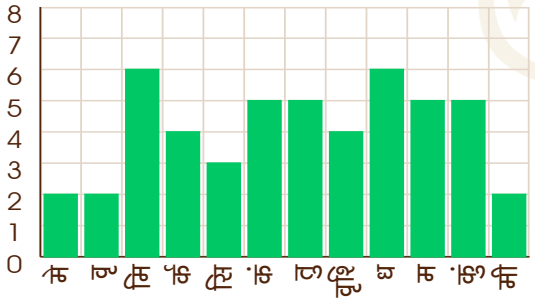

मंगल

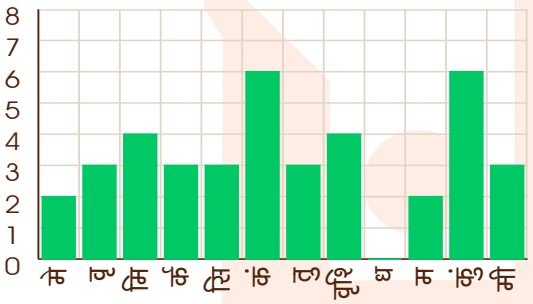

बुध

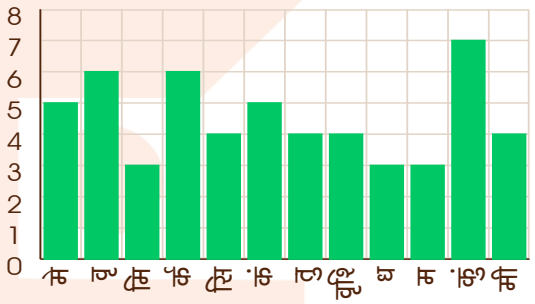

गुरु

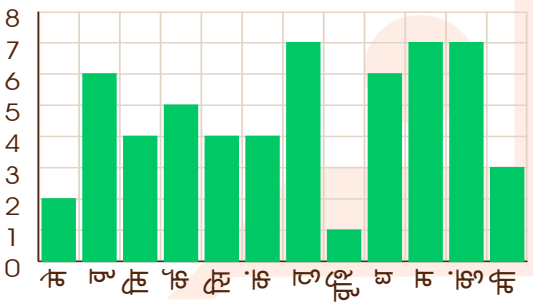

शुक्र

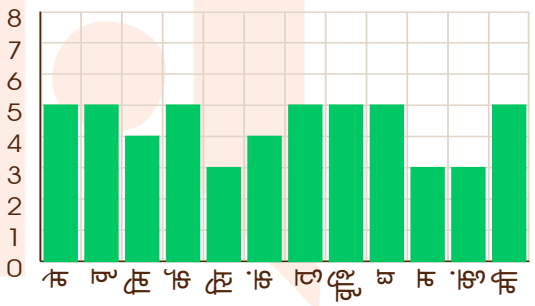

शनि

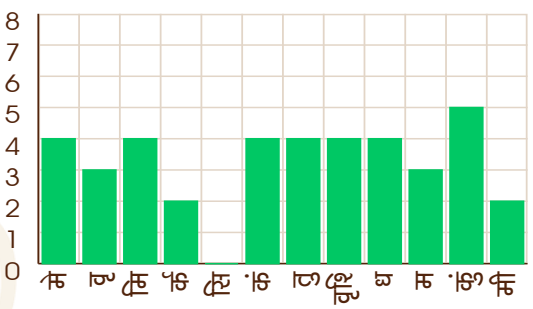

लग्न

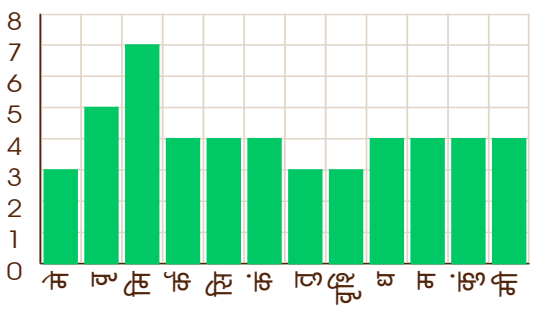

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

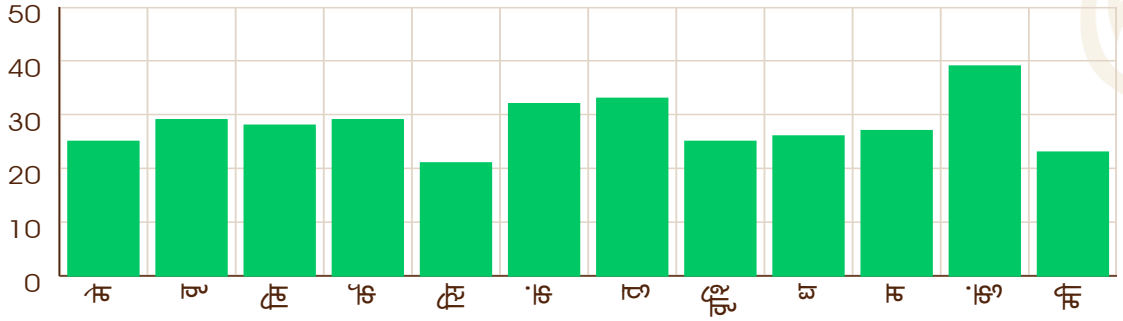

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

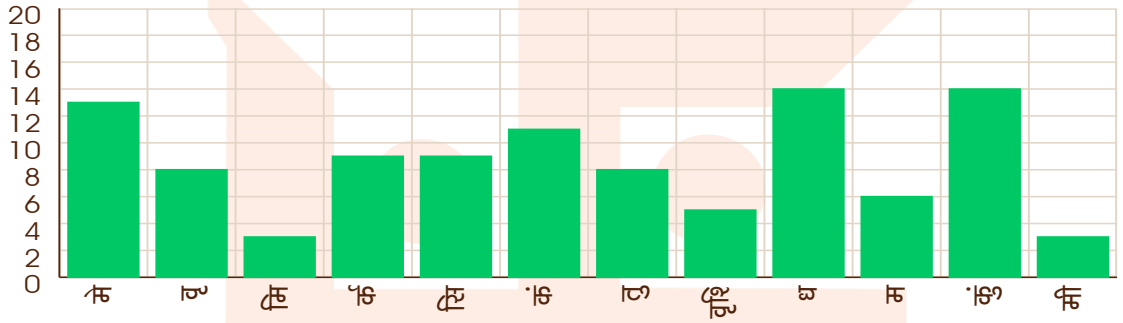

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

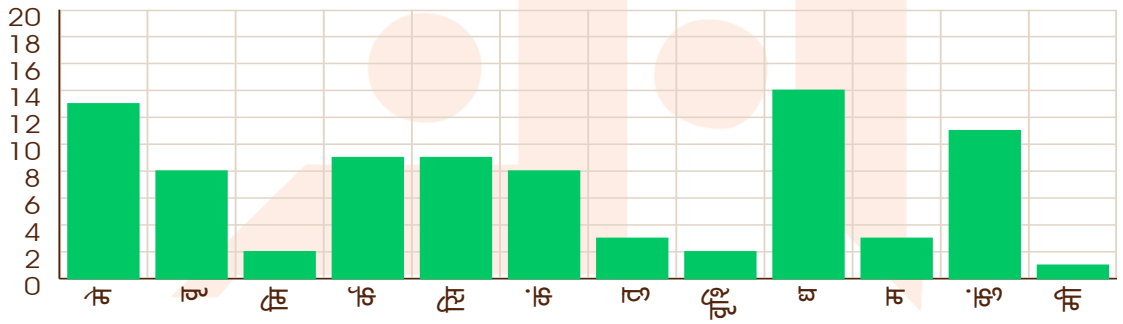

शोध्य पिंड

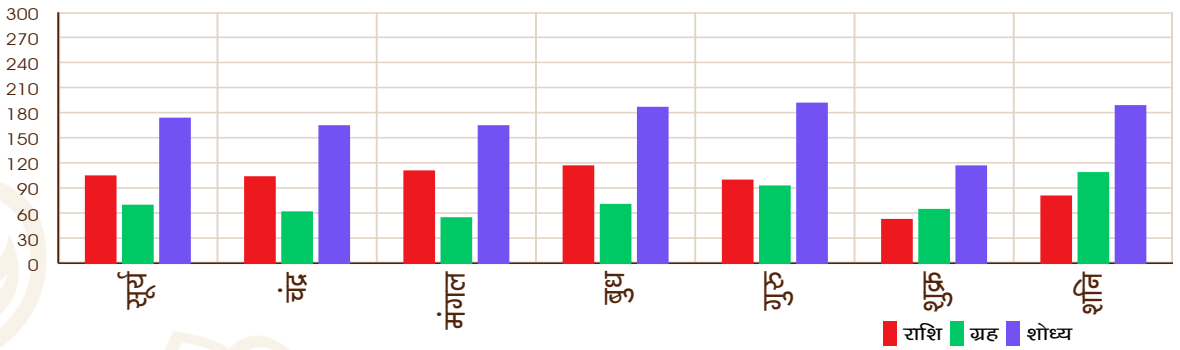

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 8 वर्ष 5 मास 5 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
05/05/2008		10/10/2016		10/10/2022		10/10/2032		11/10/2039	
10/10/2016		10/10/2022		10/10/2032		11/10/2039		10/10/2057	
	00/00/0000	सूर्य	27/01/2017	चंद्र	11/08/2023	मंगल	08/03/2033	राहु	23/06/2042
	00/00/0000	चंद्र	29/07/2017	मंगल	11/03/2024	राहु	26/03/2034	गुरु	15/11/2044
	00/00/0000	मंगल	04/12/2017	राहु	10/09/2025	गुरु	02/03/2035	शनि	22/09/2047
	00/00/0000	राहु	29/10/2018	गुरु	10/01/2027	शनि	10/04/2036	बुध	11/04/2050
	05/05/2008	गुरु	17/08/2019	शनि	10/08/2028	बुध	07/04/2037	केतु	29/04/2051
गुरु	10/08/2009	शनि	29/07/2020	बुध	09/01/2030	केतु	04/09/2037	शुक्र	29/04/2054
शनि	10/10/2012	बुध	04/06/2021	केतु	10/08/2030	शुक्र	04/11/2038	सूर्य	24/03/2055
बुध	11/08/2015	केतु	10/10/2021	शुक्र	10/04/2032	सूर्य	12/03/2039	चंद्र	22/09/2056
केतु	10/10/2016	शुक्र	10/10/2022	सूर्य	10/10/2032	चंद्र	11/10/2039	मंगल	10/10/2057

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
10/10/2057		10/10/2073		10/10/2092		11/10/2109		11/10/2116	
10/10/2073		10/10/2092		11/10/2109		11/10/2116		00/00/0000	
गुरु	28/11/2059	शनि	13/10/2076	बुध	08/03/2095	केतु	09/03/2110	शुक्र	10/02/2120
शनि	11/06/2062	बुध	23/06/2079	केतु	05/03/2096	शुक्र	09/05/2111	सूर्य	10/02/2121
बुध	15/09/2064	केतु	01/08/2080	शुक्र	04/01/2099	सूर्य	14/09/2111	चंद्र	11/10/2122
केतु	22/08/2065	शुक्र	01/10/2083	सूर्य	10/11/2099	चंद्र	14/04/2112	मंगल	11/12/2123
शुक्र	22/04/2068	सूर्य	12/09/2084	चंद्र	11/04/2101	मंगल	10/09/2112	राहु	11/12/2126
सूर्य	09/02/2069	चंद्र	14/04/2086	मंगल	09/04/2102	राहु	29/09/2113	गुरु	06/05/2128
चंद्र	11/06/2070	मंगल	24/05/2087	राहु	26/10/2104	गुरु	05/09/2114		00/00/0000
मंगल	17/05/2071	राहु	30/03/2090	गुरु	01/02/2107	शनि	15/10/2115		00/00/0000
राहु	10/10/2073	गुरु	10/10/2092	शनि	11/10/2109	बुध	11/10/2116		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 8 वर्ष 4 मा 29 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
05/05/2008		10/08/2009		10/10/2012		11/08/2015		10/10/2016	
10/08/2009		10/10/2012		11/08/2015		10/10/2016		27/01/2017	
	00/00/0000	शनि	09/02/2010	बुध	05/03/2013	केतु	05/09/2015	सूर्य	15/10/2016
	00/00/0000	बुध	23/07/2010	केतु	05/05/2013	शुक्र	15/11/2015	चंद्र	24/10/2016
	00/00/0000	केतु	29/09/2010	शुक्र	24/10/2013	सूर्य	06/12/2015	मंगल	31/10/2016
	05/05/2008	शुक्र	09/04/2011	सूर्य	15/12/2013	चंद्र	10/01/2016	राहु	16/11/2016
शुक्र	11/09/2008	सूर्य	06/06/2011	चंद्र	11/03/2014	मंगल	04/02/2016	गुरु	01/12/2016
सूर्य	30/10/2008	चंद्र	11/09/2011	मंगल	11/05/2014	राहु	08/04/2016	शनि	18/12/2016
चंद्र	19/01/2009	मंगल	17/11/2011	राहु	13/10/2014	गुरु	04/06/2016	बुध	03/01/2017
मंगल	17/03/2009	राहु	09/05/2012	गुरु	28/02/2015	शनि	10/08/2016	केतु	09/01/2017
राहु	10/08/2009	गुरु	10/10/2012	शनि	11/08/2015	बुध	10/10/2016	शुक्र	27/01/2017

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
27/01/2017		29/07/2017		04/12/2017		29/10/2018		17/08/2019	
29/07/2017		04/12/2017		29/10/2018		17/08/2019		29/07/2020	
चंद्र	12/02/2017	मंगल	05/08/2017	राहु	22/01/2018	गुरु	07/12/2018	शनि	11/10/2019
मंगल	22/02/2017	राहु	25/08/2017	गुरु	07/03/2018	शनि	22/01/2019	बुध	29/11/2019
राहु	22/03/2017	गुरु	11/09/2017	शनि	28/04/2018	बुध	04/03/2019	केतु	19/12/2019
गुरु	15/04/2017	शनि	01/10/2017	बुध	14/06/2018	केतु	21/03/2019	शुक्र	15/02/2020
शनि	14/05/2017	बुध	19/10/2017	केतु	03/07/2018	शुक्र	09/05/2019	सूर्य	03/03/2020
बुध	09/06/2017	केतु	27/10/2017	शुक्र	27/08/2018	सूर्य	24/05/2019	चंद्र	01/04/2020
केतु	19/06/2017	शुक्र	17/11/2017	सूर्य	12/09/2018	चंद्र	17/06/2019	मंगल	21/04/2020
शुक्र	20/07/2017	सूर्य	23/11/2017	चंद्र	09/10/2018	मंगल	04/07/2019	राहु	13/06/2020
सूर्य	29/07/2017	चंद्र	04/12/2017	मंगल	29/10/2018	राहु	17/08/2019	गुरु	29/07/2020

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
29/07/2020		04/06/2021		10/10/2021		10/10/2022		11/08/2023	
04/06/2021		10/10/2021		10/10/2022		11/08/2023		11/03/2024	
बुध	11/09/2020	केतु	12/06/2021	शुक्र	10/12/2021	चंद्र	05/11/2022	मंगल	23/08/2023
केतु	29/09/2020	शुक्र	03/07/2021	सूर्य	28/12/2021	मंगल	22/11/2022	राहु	24/09/2023
शुक्र	20/11/2020	सूर्य	09/07/2021	चंद्र	28/01/2022	राहु	07/01/2023	गुरु	23/10/2023
सूर्य	05/12/2020	चंद्र	20/07/2021	मंगल	18/02/2022	गुरु	17/02/2023	शनि	25/11/2023
चंद्र	31/12/2020	मंगल	28/07/2021	राहु	14/04/2022	शनि	06/04/2023	बुध	25/12/2023
मंगल	18/01/2021	राहु	16/08/2021	गुरु	01/06/2022	बुध	19/05/2023	केतु	07/01/2024
राहु	06/03/2021	गुरु	02/09/2021	शनि	29/07/2022	केतु	06/06/2023	शुक्र	11/02/2024
गुरु	16/04/2021	शनि	22/09/2021	बुध	19/09/2022	शुक्र	26/07/2023	सूर्य	22/02/2024
शनि	04/06/2021	बुध	10/10/2021	केतु	10/10/2022	सूर्य	11/08/2023	चंद्र	11/03/2024

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
11/03/2024		10/09/2025		10/01/2027		10/08/2028		09/01/2030	
10/09/2025		10/01/2027		10/08/2028		09/01/2030		10/08/2030	
राहु	01/06/2024	गुरु	14/11/2025	शनि	11/04/2027	बुध	22/10/2028	केतु	22/01/2030
गुरु	13/08/2024	शनि	30/01/2026	बुध	02/07/2027	केतु	21/11/2028	शुक्र	26/02/2030
शनि	08/11/2024	बुध	09/04/2026	केतु	05/08/2027	शुक्र	16/02/2029	सूर्य	09/03/2030
बुध	24/01/2025	केतु	07/05/2026	शुक्र	09/11/2027	सूर्य	14/03/2029	चंद्र	27/03/2030
केतु	25/02/2025	शुक्र	27/07/2026	सूर्य	08/12/2027	चंद्र	26/04/2029	मंगल	08/04/2030
शुक्र	28/05/2025	सूर्य	21/08/2026	चंद्र	25/01/2028	मंगल	26/05/2029	राहु	10/05/2030
सूर्य	24/06/2025	चंद्र	30/09/2026	मंगल	28/02/2028	राहु	11/08/2029	गुरु	08/06/2030
चंद्र	09/08/2025	मंगल	29/10/2026	राहु	25/05/2028	गुरु	19/10/2029	शनि	11/07/2030
मंगल	10/09/2025	राहु	10/01/2027	गुरु	10/08/2028	शनि	09/01/2030	बुध	10/08/2030

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
10/08/2030		10/04/2032		10/10/2032		08/03/2033		26/03/2034	
10/04/2032		10/10/2032		08/03/2033		26/03/2034		02/03/2035	
शुक्र	20/11/2030	सूर्य	19/04/2032	मंगल	19/10/2032	राहु	05/05/2033	गुरु	11/05/2034
सूर्य	20/12/2030	चंद्र	05/05/2032	राहु	10/11/2032	गुरु	25/06/2033	शनि	04/07/2034
चंद्र	09/02/2031	मंगल	15/05/2032	गुरु	30/11/2032	शनि	24/08/2033	बुध	21/08/2034
मंगल	17/03/2031	राहु	12/06/2032	शनि	23/12/2032	बुध	18/10/2033	केतु	10/09/2034
राहु	16/06/2031	गुरु	06/07/2032	बुध	14/01/2033	केतु	09/11/2033	शुक्र	06/11/2034
गुरु	05/09/2031	शनि	04/08/2032	केतु	22/01/2033	शुक्र	12/01/2034	सूर्य	23/11/2034
शनि	10/12/2031	बुध	30/08/2032	शुक्र	16/02/2033	सूर्य	31/01/2034	चंद्र	21/12/2034
बुध	06/03/2032	केतु	09/09/2032	सूर्य	24/02/2033	चंद्र	04/03/2034	मंगल	10/01/2035
केतु	10/04/2032	शुक्र	10/10/2032	चंद्र	08/03/2033	मंगल	26/03/2034	राहु	02/03/2035

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
02/03/2035		10/04/2036		07/04/2037		04/09/2037		04/11/2038	
10/04/2036		07/04/2037		04/09/2037		04/11/2038		12/03/2039	
शनि	05/05/2035	बुध	01/06/2036	केतु	16/04/2037	शुक्र	14/11/2037	सूर्य	10/11/2038
बुध	02/07/2035	केतु	22/06/2036	शुक्र	11/05/2037	सूर्य	05/12/2037	चंद्र	21/11/2038
केतु	25/07/2035	शुक्र	21/08/2036	सूर्य	18/05/2037	चंद्र	09/01/2038	मंगल	28/11/2038
शुक्र	01/10/2035	सूर्य	08/09/2036	चंद्र	31/05/2037	मंगल	03/02/2038	राहु	17/12/2038
सूर्य	21/10/2035	चंद्र	08/10/2036	मंगल	09/06/2037	राहु	08/04/2038	गुरु	03/01/2039
चंद्र	24/11/2035	मंगल	29/10/2036	राहु	01/07/2037	गुरु	04/06/2038	शनि	24/01/2039
मंगल	18/12/2035	राहु	23/12/2036	गुरु	21/07/2037	शनि	10/08/2038	बुध	11/02/2039
राहु	16/02/2036	गुरु	09/02/2037	शनि	13/08/2037	बुध	10/10/2038	केतु	18/02/2039
गुरु	10/04/2036	शनि	07/04/2037	बुध	04/09/2037	केतु	04/11/2038	शुक्र	12/03/2039

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
12/03/2039		11/10/2039		23/06/2042		15/11/2044		22/09/2047	
11/10/2039		23/06/2042		15/11/2044		22/09/2047		11/04/2050	
चंद्र	29/03/2039	राहु	07/03/2040	गुरु	18/10/2042	शनि	29/04/2045	बुध	01/02/2048
मंगल	11/04/2039	गुरु	16/07/2040	शनि	05/03/2043	बुध	24/09/2045	केतु	27/03/2048
राहु	13/05/2039	शनि	19/12/2040	बुध	08/07/2043	केतु	23/11/2045	शुक्र	29/08/2048
गुरु	10/06/2039	बुध	08/05/2041	केतु	28/08/2043	शुक्र	16/05/2046	सूर्य	14/10/2048
शनि	14/07/2039	केतु	04/07/2041	शुक्र	21/01/2044	सूर्य	07/07/2046	चंद्र	31/12/2048
बुध	13/08/2039	शुक्र	16/12/2041	सूर्य	05/03/2044	चंद्र	02/10/2046	मंगल	23/02/2049
केतु	25/08/2039	सूर्य	03/02/2042	चंद्र	17/05/2044	मंगल	01/12/2046	राहु	13/07/2049
शुक्र	30/09/2039	चंद्र	26/04/2042	मंगल	07/07/2044	राहु	07/05/2047	गुरु	14/11/2049
सूर्य	11/10/2039	मंगल	23/06/2042	राहु	15/11/2044	गुरु	22/09/2047	शनि	11/04/2050

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
11/04/2050		29/04/2051		29/04/2054		24/03/2055		22/09/2056	
29/04/2051		29/04/2054		24/03/2055		22/09/2056		10/10/2057	
केतु	03/05/2050	शुक्र	29/10/2051	सूर्य	15/05/2054	चंद्र	08/05/2055	मंगल	14/10/2056
शुक्र	06/07/2050	सूर्य	23/12/2051	चंद्र	12/06/2054	मंगल	09/06/2055	राहु	10/12/2056
सूर्य	25/07/2050	चंद्र	23/03/2052	मंगल	01/07/2054	राहु	30/08/2055	गुरु	31/01/2057
चंद्र	26/08/2050	मंगल	26/05/2052	राहु	19/08/2054	गुरु	12/11/2055	शनि	01/04/2057
मंगल	18/09/2050	राहु	06/11/2052	गुरु	02/10/2054	शनि	06/02/2056	बुध	26/05/2057
राहु	14/11/2050	गुरु	01/04/2053	शनि	23/11/2054	बुध	24/04/2056	केतु	17/06/2057
गुरु	04/01/2051	शनि	22/09/2053	बुध	09/01/2055	केतु	26/05/2056	शुक्र	20/08/2057
शनि	06/03/2051	बुध	24/02/2054	केतु	28/01/2055	शुक्र	25/08/2056	सूर्य	08/09/2057
बुध	29/04/2051	केतु	29/04/2054	शुक्र	24/03/2055	सूर्य	22/09/2056	चंद्र	10/10/2057

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
10/10/2057		28/11/2059		11/06/2062		15/09/2064		22/08/2065	
28/11/2059		11/06/2062		15/09/2064		22/08/2065		22/04/2068	
गुरु	22/01/2058	शनि	23/04/2060	बुध	06/10/2062	केतु	05/10/2064	शुक्र	01/02/2066
शनि	25/05/2058	बुध	01/09/2060	केतु	23/11/2062	शुक्र	01/12/2064	सूर्य	21/03/2066
बुध	13/09/2058	केतु	25/10/2060	शुक्र	10/04/2063	सूर्य	18/12/2064	चंद्र	11/06/2066
केतु	28/10/2058	शुक्र	28/03/2061	सूर्य	22/05/2063	चंद्र	16/01/2065	मंगल	06/08/2066
शुक्र	07/03/2059	सूर्य	13/05/2061	चंद्र	30/07/2063	मंगल	05/02/2065	राहु	31/12/2066
सूर्य	15/04/2059	चंद्र	29/07/2061	मंगल	16/09/2063	राहु	28/03/2065	गुरु	09/05/2067
चंद्र	19/06/2059	मंगल	21/09/2061	राहु	18/01/2064	गुरु	12/05/2065	शनि	11/10/2067
मंगल	03/08/2059	राहु	07/02/2062	गुरु	07/05/2064	शनि	05/07/2065	बुध	26/02/2068
राहु	28/11/2059	गुरु	11/06/2062	शनि	15/09/2064	बुध	22/08/2065	केतु	22/04/2068

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
22/04/2068		09/02/2069		11/06/2070		17/05/2071		10/10/2073	
09/02/2069		11/06/2070		17/05/2071		10/10/2073		13/10/2076	
सूर्य	07/05/2068	चंद्र	21/03/2069	मंगल	30/06/2070	राहु	26/09/2071	शनि	02/04/2074
चंद्र	31/05/2068	मंगल	19/04/2069	राहु	21/08/2070	गुरु	21/01/2072	बुध	05/09/2074
मंगल	17/06/2068	राहु	01/07/2069	गुरु	05/10/2070	शनि	08/06/2072	केतु	08/11/2074
राहु	31/07/2068	गुरु	04/09/2069	शनि	28/11/2070	बुध	10/10/2072	शुक्र	10/05/2075
गुरु	08/09/2068	शनि	20/11/2069	बुध	15/01/2071	केतु	30/11/2072	सूर्य	04/07/2075
शनि	24/10/2068	बुध	28/01/2070	केतु	04/02/2071	शुक्र	25/04/2073	चंद्र	03/10/2075
बुध	05/12/2068	केतु	25/02/2070	शुक्र	02/04/2071	सूर्य	08/06/2073	मंगल	07/12/2075
केतु	22/12/2068	शुक्र	17/05/2070	सूर्य	19/04/2071	चंद्र	20/08/2073	राहु	19/05/2076
शुक्र	09/02/2069	सूर्य	11/06/2070	चंद्र	17/05/2071	मंगल	10/10/2073	गुरु	13/10/2076

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
13/10/2076		23/06/2079		01/08/2080		01/10/2083		12/09/2084	
23/06/2079		01/08/2080		01/10/2083		12/09/2084		14/04/2086	
बुध	01/03/2077	केतु	17/07/2079	शुक्र	10/02/2081	सूर्य	19/10/2083	चंद्र	31/10/2084
केतु	28/04/2077	शुक्र	22/09/2079	सूर्य	08/04/2081	चंद्र	17/11/2083	मंगल	03/12/2084
शुक्र	08/10/2077	सूर्य	12/10/2079	चंद्र	14/07/2081	मंगल	07/12/2083	राहु	28/02/2085
सूर्य	27/11/2077	चंद्र	15/11/2079	मंगल	19/09/2081	राहु	28/01/2084	गुरु	16/05/2085
चंद्र	16/02/2078	मंगल	09/12/2079	राहु	12/03/2082	गुरु	14/03/2084	शनि	16/08/2085
मंगल	15/04/2078	राहु	07/02/2080	गुरु	13/08/2082	शनि	08/05/2084	बुध	06/11/2085
राहु	09/09/2078	गुरु	01/04/2080	शनि	12/02/2083	बुध	26/06/2084	केतु	09/12/2085
गुरु	18/01/2079	शनि	04/06/2080	बुध	26/07/2083	केतु	17/07/2084	शुक्र	16/03/2086
शनि	23/06/2079	बुध	01/08/2080	केतु	01/10/2083	शुक्र	12/09/2084	सूर्य	14/04/2086

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
14/04/2086		24/05/2087		30/03/2090		10/10/2092		08/03/2095	
24/05/2087		30/03/2090		10/10/2092		08/03/2095		05/03/2096	
मंगल	07/05/2086	राहु	27/10/2087	गुरु	31/07/2090	बुध	11/02/2093	केतु	30/03/2095
राहु	07/07/2086	गुरु	14/03/2088	शनि	24/12/2090	केतु	04/04/2093	शुक्र	29/05/2095
गुरु	30/08/2086	शनि	25/08/2088	बुध	05/05/2091	शुक्र	28/08/2093	सूर्य	16/06/2095
शनि	02/11/2086	बुध	20/01/2089	केतु	27/06/2091	सूर्य	11/10/2093	चंद्र	16/07/2095
बुध	30/12/2086	केतु	22/03/2089	शुक्र	29/11/2091	चंद्र	24/12/2093	मंगल	06/08/2095
केतु	22/01/2087	शुक्र	11/09/2089	सूर्य	14/01/2092	मंगल	13/02/2094	राहु	30/09/2095
शुक्र	31/03/2087	सूर्य	02/11/2089	चंद्र	31/03/2092	राहु	25/06/2094	गुरु	17/11/2095
सूर्य	20/04/2087	चंद्र	28/01/2090	मंगल	24/05/2092	गुरु	20/10/2094	शनि	13/01/2096
चंद्र	24/05/2087	मंगल	30/03/2090	राहु	10/10/2092	शनि	08/03/2095	बुध	05/03/2096

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
05/03/2096		04/01/2099		10/11/2099		11/04/2101		09/04/2102	
04/01/2099		10/11/2099		11/04/2101		09/04/2102		26/10/2104	
शुक्र	24/08/2096	सूर्य	19/01/2099	चंद्र	23/12/2099	मंगल	03/05/2101	राहु	26/08/2102
सूर्य	15/10/2096	चंद्र	14/02/2099	मंगल	22/01/2100	राहु	26/06/2101	गुरु	29/12/2102
चंद्र	09/01/2097	मंगल	04/03/2099	राहु	10/04/2100	गुरु	13/08/2101	शनि	25/05/2103
मंगल	11/03/2097	राहु	20/04/2099	गुरु	18/06/2100	शनि	10/10/2101	बुध	04/10/2103
राहु	13/08/2097	गुरु	31/05/2099	शनि	08/09/2100	बुध	30/11/2101	केतु	27/11/2103
गुरु	29/12/2097	शनि	19/07/2099	बुध	20/11/2100	केतु	21/12/2101	शुक्र	01/05/2104
शनि	11/06/2098	बुध	01/09/2099	केतु	20/12/2100	शुक्र	19/02/2102	सूर्य	16/06/2104
बुध	04/11/2098	केतु	19/09/2099	शुक्र	17/03/2101	सूर्य	09/03/2102	चंद्र	02/09/2104
केतु	04/01/2099	शुक्र	10/11/2099	सूर्य	11/04/2101	चंद्र	09/04/2102	मंगल	26/10/2104

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
26/10/2104		01/02/2107		11/10/2109		09/03/2110		09/05/2111	
01/02/2107		11/10/2109		09/03/2110		09/05/2111		14/09/2111	
गुरु	13/02/2105	शनि	07/07/2107	केतु	20/10/2109	शुक्र	19/05/2110	सूर्य	16/05/2111
शनि	25/06/2105	बुध	23/11/2107	शुक्र	14/11/2109	सूर्य	10/06/2110	चंद्र	26/05/2111
बुध	20/10/2105	केतु	19/01/2108	सूर्य	21/11/2109	चंद्र	15/07/2110	मंगल	03/06/2111
केतु	07/12/2105	शुक्र	01/07/2108	चंद्र	04/12/2109	मंगल	09/08/2110	राहु	22/06/2111
शुक्र	24/04/2106	सूर्य	19/08/2108	मंगल	12/12/2109	राहु	12/10/2110	गुरु	09/07/2111
सूर्य	04/06/2106	चंद्र	09/11/2108	राहु	04/01/2110	गुरु	08/12/2110	शनि	29/07/2111
चंद्र	12/08/2106	मंगल	06/01/2109	गुरु	23/01/2110	शनि	13/02/2111	बुध	16/08/2111
मंगल	30/09/2106	राहु	02/06/2109	शनि	16/02/2110	बुध	14/04/2111	केतु	24/08/2111
राहु	01/02/2107	गुरु	11/10/2109	बुध	09/03/2110	केतु	09/05/2111	शुक्र	14/09/2111

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
14/09/2111		14/04/2112		10/09/2112		29/09/2113		05/09/2114	
14/04/2112		10/09/2112		29/09/2113		05/09/2114		15/10/2115	
चंद्र	02/10/2111	मंगल	23/04/2112	राहु	07/11/2112	गुरु	13/11/2113	शनि	08/11/2114
मंगल	14/10/2111	राहु	15/05/2112	गुरु	28/12/2112	शनि	06/01/2114	बुध	04/01/2115
राहु	15/11/2111	गुरु	04/06/2112	शनि	27/02/2113	बुध	24/02/2114	केतु	28/01/2115
गुरु	14/12/2111	शनि	28/06/2112	बुध	22/04/2113	केतु	16/03/2114	शुक्र	05/04/2115
शनि	16/01/2112	बुध	19/07/2112	केतु	14/05/2113	शुक्र	11/05/2114	सूर्य	26/04/2115
बुध	16/02/2112	केतु	28/07/2112	शुक्र	17/07/2113	सूर्य	28/05/2114	चंद्र	29/05/2115
केतु	28/02/2112	शुक्र	22/08/2112	सूर्य	06/08/2113	चंद्र	26/06/2114	मंगल	22/06/2115
शुक्र	04/04/2112	सूर्य	29/08/2112	चंद्र	07/09/2113	मंगल	16/07/2114	राहु	22/08/2115
सूर्य	14/04/2112	चंद्र	10/09/2112	मंगल	29/09/2113	राहु	05/09/2114	गुरु	15/10/2115

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - गुरु - बुध		चंद्र - गुरु - केतु		चंद्र - गुरु - शुक्र		चंद्र - गुरु - सूर्य	
30/01/2026 04:36		09/04/2026 04:24		07/05/2026 14:12		27/07/2026 18:12	
09/04/2026 04:24		07/05/2026 14:12		27/07/2026 18:12		21/08/2026 02:36	
बुध	08/02/2026 23:10	केतु	10/04/2026 20:10	शुक्र	21/05/2026 02:52	सूर्य	28/07/2026 23:25
केतु	12/02/2026 23:45	शुक्र	15/04/2026 13:48	सूर्य	25/05/2026 04:16	चंद्र	31/07/2026 00:07
शुक्र	24/02/2026 11:43	सूर्य	16/04/2026 23:54	चंद्र	31/05/2026 22:36	मंगल	01/08/2026 10:12
सूर्य	27/02/2026 22:31	चंद्र	19/04/2026 08:43	मंगल	05/06/2026 16:14	राहु	05/08/2026 01:52
चंद्र	05/03/2026 16:30	मंगल	21/04/2026 00:29	राहु	17/06/2026 20:26	गुरु	08/08/2026 07:47
मंगल	09/03/2026 17:05	राहु	25/04/2026 06:45	गुरु	28/06/2026 16:10	शनि	12/08/2026 04:19
राहु	20/03/2026 01:27	गुरु	29/04/2026 01:39	शनि	11/07/2026 12:36	बुध	15/08/2026 15:06
गुरु	29/03/2026 06:14	शनि	03/05/2026 13:37	बुध	23/07/2026 00:34	केतु	17/08/2026 01:12
शनि	09/04/2026 04:24	बुध	07/05/2026 14:12	केतु	27/07/2026 18:12	शुक्र	21/08/2026 02:36

चंद्र - गुरु - चंद्र		चंद्र - गुरु - मंगल		चंद्र - गुरु - राहु		चंद्र - शनि - शनि	
21/08/2026 02:36		30/09/2026 16:36		29/10/2026 02:24		10/01/2027 03:36	
30/09/2026 16:36		29/10/2026 02:24		10/01/2027 03:36		11/04/2027 17:11	
चंद्र	24/08/2026 11:46	मंगल	02/10/2026 08:22	राहु	09/11/2026 01:23	शनि	24/01/2027 15:33
मंगल	26/08/2026 20:35	राहु	06/10/2026 14:38	गुरु	18/11/2026 19:08	बुध	06/02/2027 14:52
राहु	01/09/2026 22:41	गुरु	10/10/2026 09:33	शनि	30/11/2026 08:44	केतु	11/02/2027 23:04
गुरु	07/09/2026 08:33	शनि	14/10/2026 21:30	बुध	10/12/2026 17:06	शुक्र	27/02/2027 05:20
शनि	13/09/2026 18:46	बुध	18/10/2026 22:05	केतु	14/12/2026 23:22	सूर्य	03/03/2027 19:13
बुध	19/09/2026 12:45	केतु	20/10/2026 13:51	शुक्र	27/12/2026 03:34	चंद्र	11/03/2027 10:21
केतु	21/09/2026 21:34	शुक्र	25/10/2026 07:29	सूर्य	30/12/2026 19:14	मंगल	16/03/2027 18:32
शुक्र	28/09/2026 15:54	सूर्य	26/10/2026 17:35	चंद्र	05/01/2027 21:20	राहु	30/03/2027 12:10
सूर्य	30/09/2026 16:36	चंद्र	29/10/2026 02:24	मंगल	10/01/2027 03:36	गुरु	11/04/2027 17:11

चंद्र - शनि - बुध		चंद्र - शनि - केतु		चंद्र - शनि - शुक्र		चंद्र - शनि - सूर्य	
11/04/2027 17:11		02/07/2027 15:27		05/08/2027 09:05		09/11/2027 18:20	
02/07/2027 15:27		05/08/2027 09:05		09/11/2027 18:20		08/12/2027 16:19	
बुध	23/04/2027 07:44	केतु	04/07/2027 14:41	शुक्र	21/08/2027 10:38	सूर्य	11/11/2027 05:02
केतु	28/04/2027 02:26	शुक्र	10/07/2027 05:37	सूर्य	26/08/2027 06:17	चंद्र	13/11/2027 14:52
शुक्र	11/05/2027 18:09	सूर्य	11/07/2027 22:06	चंद्र	03/09/2027 07:04	मंगल	15/11/2027 07:21
सूर्य	15/05/2027 20:28	चंद्र	14/07/2027 17:34	मंगल	08/09/2027 22:00	राहु	19/11/2027 15:27
चंद्र	22/05/2027 16:19	मंगल	16/07/2027 16:48	राहु	23/09/2027 08:59	गुरु	23/11/2027 11:58
मंगल	27/05/2027 11:01	राहु	21/07/2027 18:15	गुरु	06/10/2027 05:25	शनि	28/11/2027 01:51
राहु	08/06/2027 17:57	गुरु	26/07/2027 06:12	शनि	21/10/2027 11:41	बुध	02/12/2027 04:10
गुरु	19/06/2027 16:07	शनि	31/07/2027 14:23	बुध	04/11/2027 03:24	केतु	03/12/2027 20:39
शनि	02/07/2027 15:27	बुध	05/08/2027 09:05	केतु	09/11/2027 18:20	शुक्र	08/12/2027 16:19

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शनि - चंद्र	
08/12/2027 16:19	
25/01/2028 20:56	
चंद्र	12/12/2027 16:42
मंगल	15/12/2027 12:10
राहु	22/12/2027 17:40
गुरु	29/12/2027 03:53
शनि	05/01/2028 19:01
बुध	12/01/2028 14:52
केतु	15/01/2028 10:20
शुक्र	23/01/2028 11:06
सूर्य	25/01/2028 20:56

चंद्र - शनि - मंगल	
25/01/2028 20:56	
28/02/2028 14:34	
मंगल	27/01/2028 20:10
राहु	01/02/2028 21:37
गुरु	06/02/2028 09:34
शनि	11/02/2028 17:45
बुध	16/02/2028 12:27
केतु	18/02/2028 11:41
शुक्र	24/02/2028 02:37
सूर्य	25/02/2028 19:06
चंद्र	28/02/2028 14:34

चंद्र - शनि - राहु	
28/02/2028 14:34	
25/05/2028 08:30	
राहु	12/03/2028 14:52
गुरु	24/03/2028 04:27
शनि	06/04/2028 22:05
बुध	19/04/2028 05:02
केतु	24/04/2028 06:28
शुक्र	08/05/2028 17:28
सूर्य	13/05/2028 01:34
चंद्र	20/05/2028 07:03
मंगल	25/05/2028 08:30

चंद्र - शनि - गुरु	
25/05/2028 08:30	
10/08/2028 11:06	
गुरु	04/06/2028 15:15
शनि	16/06/2028 20:15
बुध	27/06/2028 18:25
केतु	02/07/2028 06:23
शुक्र	15/07/2028 02:49
सूर्य	18/07/2028 23:20
चंद्र	25/07/2028 09:33
मंगल	29/07/2028 21:30
राहु	10/08/2028 11:06

चंद्र - बुध - बुध	
10/08/2028 11:06	
22/10/2028 18:23	
बुध	20/08/2028 20:20
केतु	25/08/2028 02:57
शुक्र	06/09/2028 08:10
सूर्य	10/09/2028 00:08
चंद्र	16/09/2028 02:45
मंगल	20/09/2028 09:22
राहु	01/10/2028 09:16
गुरु	11/10/2028 03:50
शनि	22/10/2028 18:23

चंद्र - बुध - केतु	
22/10/2028 18:23	
21/11/2028 22:48	
केतु	24/10/2028 12:39
शुक्र	29/10/2028 13:23
सूर्य	31/10/2028 01:36
चंद्र	02/11/2028 13:58
मंगल	04/11/2028 08:13
राहु	08/11/2028 20:53
गुरु	12/11/2028 21:28
शनि	17/11/2028 16:10
बुध	21/11/2028 22:48

चंद्र - बुध - शुक्र	
21/11/2028 22:48	
16/02/2029 04:33	
शुक्र	06/12/2028 07:45
सूर्य	10/12/2028 15:15
चंद्र	17/12/2028 19:43
मंगल	22/12/2028 20:28
राहु	04/01/2029 18:55
गुरु	16/01/2029 06:53
शनि	29/01/2029 22:36
बुध	11/02/2029 03:49
केतु	16/02/2029 04:33

चंद्र - बुध - सूर्य	
16/02/2029 04:33	
14/03/2029 01:28	
सूर्य	17/02/2029 11:36
चंद्र	19/02/2029 15:20
मंगल	21/02/2029 03:34
राहु	25/02/2029 00:42
गुरु	28/02/2029 11:29
शनि	04/03/2029 13:48
बुध	08/03/2029 05:46
केतु	09/03/2029 17:59
शुक्र	14/03/2029 01:28

चंद्र - बुध - चंद्र	
14/03/2029 01:28	
26/04/2029 04:21	
चंद्र	17/03/2029 15:43
मंगल	20/03/2029 04:05
राहु	26/03/2029 15:19
गुरु	01/04/2029 09:18
शनि	08/04/2029 05:09
बुध	14/04/2029 07:45
केतु	16/04/2029 20:08
शुक्र	24/04/2029 00:36
सूर्य	26/04/2029 04:21

चंद्र - बुध - मंगल	
26/04/2029 04:21	
26/05/2029 08:46	
मंगल	27/04/2029 22:36
राहु	02/05/2029 11:16
गुरु	06/05/2029 11:51
शनि	11/05/2029 06:33
बुध	15/05/2029 13:11
केतु	17/05/2029 07:26
शुक्र	22/05/2029 08:10
सूर्य	23/05/2029 20:24
चंद्र	26/05/2029 08:46

चंद्र - बुध - राहु	
26/05/2029 08:46	
11/08/2029 23:32	
राहु	07/06/2029 00:11
गुरु	17/06/2029 08:33
शनि	29/06/2029 15:29
बुध	10/07/2029 15:23
केतु	15/07/2029 04:02
शुक्र	28/07/2029 02:30
सूर्य	31/07/2029 23:39
चंद्र	07/08/2029 10:52
मंगल	11/08/2029 23:32

चंद्र - बुध - गुरु	
11/08/2029 23:32	
19/10/2029 23:20	
गुरु	21/08/2029 04:19
शनि	01/09/2029 02:29
बुध	10/09/2029 21:03
केतु	14/09/2029 21:38
शुक्र	26/09/2029 09:36
सूर्य	29/09/2029 20:24
चंद्र	05/10/2029 14:23
मंगल	09/10/2029 14:58
राहु	19/10/2029 23:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - बुध - शनि	
19/10/2029 23:20	
09/01/2030 21:36	
शनि	01/11/2029 22:40
बुध	13/11/2029 13:13
केतु	18/11/2029 07:55
शुक्र	01/12/2029 23:37
सूर्य	06/12/2029 01:56
चंद्र	12/12/2029 21:47
मंगल	17/12/2029 16:29
राहु	29/12/2029 23:26
गुरु	09/01/2030 21:36

चंद्र - केतु - केतु	
09/01/2030 21:36	
22/01/2030 07:53	
केतु	10/01/2030 15:00
शुक्र	12/01/2030 16:43
सूर्य	13/01/2030 07:38
चंद्र	14/01/2030 08:29
मंगल	15/01/2030 01:53
राहु	16/01/2030 22:38
गुरु	18/01/2030 14:24
शनि	20/01/2030 13:38
बुध	22/01/2030 07:53

चंद्र - केतु - शुक्र	
22/01/2030 07:53	
26/02/2030 20:08	
शुक्र	28/01/2030 05:56
सूर्य	30/01/2030 00:32
चंद्र	01/02/2030 23:34
मंगल	04/02/2030 01:17
राहु	09/02/2030 09:07
गुरु	14/02/2030 02:45
शनि	19/02/2030 17:41
बुध	24/02/2030 18:25
केतु	26/02/2030 20:08

चंद्र - केतु - सूर्य	
26/02/2030 20:08	
09/03/2030 11:49	
सूर्य	27/02/2030 08:55
चंद्र	28/02/2030 06:14
मंगल	28/02/2030 21:08
राहु	02/03/2030 11:29
गुरु	03/03/2030 21:35
शनि	05/03/2030 14:04
बुध	07/03/2030 02:17
केतु	07/03/2030 17:12
शुक्र	09/03/2030 11:49

चंद्र - केतु - चंद्र	
09/03/2030 11:49	
27/03/2030 05:56	
चंद्र	10/03/2030 23:19
मंगल	12/03/2030 00:11
राहु	14/03/2030 16:06
गुरु	17/03/2030 00:55
शनि	19/03/2030 20:23
बुध	22/03/2030 08:45
केतु	23/03/2030 09:37
शुक्र	26/03/2030 08:38
सूर्य	27/03/2030 05:56

चंद्र - केतु - मंगल	
27/03/2030 05:56	
08/04/2030 16:13	
मंगल	27/03/2030 23:20
राहु	29/03/2030 20:05
गुरु	31/03/2030 11:51
शनि	02/04/2030 11:05
बुध	04/04/2030 05:20
केतु	04/04/2030 22:44
शुक्र	07/04/2030 00:27
सूर्य	07/04/2030 15:22
चंद्र	08/04/2030 16:13

चंद्र - केतु - राहु	
08/04/2030 16:13	
10/05/2030 15:15	
राहु	13/04/2030 11:17
गुरु	17/04/2030 17:33
शनि	22/04/2030 19:00
बुध	27/04/2030 07:39
केतु	29/04/2030 04:24
शुक्र	04/05/2030 12:14
सूर्य	06/05/2030 02:35
चंद्र	08/05/2030 18:30
मंगल	10/05/2030 15:15

चंद्र - केतु - गुरु	
10/05/2030 15:15	
08/06/2030 01:03	
गुरु	14/05/2030 10:09
शनि	18/05/2030 22:06
बुध	22/05/2030 22:42
केतु	24/05/2030 14:28
शुक्र	29/05/2030 08:06
सूर्य	30/05/2030 18:11
चंद्र	02/06/2030 03:00
मंगल	03/06/2030 18:47
राहु	08/06/2030 01:03

चंद्र - केतु - शनि	
08/06/2030 01:03	
11/07/2030 18:41	
शनि	13/06/2030 09:14
बुध	18/06/2030 03:56
केतु	20/06/2030 03:10
शुक्र	25/06/2030 18:06
सूर्य	27/06/2030 10:35
चंद्र	30/06/2030 06:04
मंगल	02/07/2030 05:17
राहु	07/07/2030 06:44
गुरु	11/07/2030 18:41

चंद्र - केतु - बुध	
11/07/2030 18:41	
10/08/2030 23:06	
बुध	16/07/2030 01:19
केतु	17/07/2030 19:34
शुक्र	22/07/2030 20:18
सूर्य	24/07/2030 08:31
चंद्र	26/07/2030 20:54
मंगल	28/07/2030 15:09
राहु	02/08/2030 03:49
गुरु	06/08/2030 04:24
शनि	10/08/2030 23:06

चंद्र - शुक्र - शुक्र	
10/08/2030 23:06	
20/11/2030 10:06	
शुक्र	27/08/2030 20:56
सूर्य	01/09/2030 22:41
चंद्र	10/09/2030 09:36
मंगल	16/09/2030 07:38
राहु	01/10/2030 12:53
गुरु	15/10/2030 01:33
शनि	31/10/2030 03:06
बुध	14/11/2030 12:03
केतु	20/11/2030 10:06

चंद्र - शुक्र - सूर्य	
20/11/2030 10:06	
20/12/2030 20:36	
सूर्य	21/11/2030 22:37
चंद्र	24/11/2030 11:30
मंगल	26/11/2030 06:07
राहु	30/11/2030 19:41
गुरु	04/12/2030 21:05
शनि	09/12/2030 16:45
बुध	14/12/2030 00:14
केतु	15/12/2030 18:51
शुक्र	20/12/2030 20:36

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शुक्र - चंद्र	
20/12/2030 20:36	
09/02/2031 14:06	
चंद्र	25/12/2030 02:03
मंगल	28/12/2030 01:05
राहु	04/01/2031 15:42
गुरु	11/01/2031 10:02
शनि	19/01/2031 10:48
बुध	26/01/2031 15:17
केतु	29/01/2031 14:18
शुक्र	07/02/2031 01:13
सूर्य	09/02/2031 14:06

चंद्र - शुक्र - मंगल	
09/02/2031 14:06	
17/03/2031 02:21	
मंगल	11/02/2031 15:49
राहु	16/02/2031 23:39
गुरु	21/02/2031 17:17
शनि	27/02/2031 08:13
बुध	04/03/2031 08:58
केतु	06/03/2031 10:40
शुक्र	12/03/2031 08:43
सूर्य	14/03/2031 03:20
चंद्र	17/03/2031 02:21

चंद्र - शुक्र - राहु	
17/03/2031 02:21	
16/06/2031 09:51	
राहु	30/03/2031 19:04
गुरु	11/04/2031 23:16
शनि	26/04/2031 10:16
बुध	09/05/2031 08:43
केतु	14/05/2031 16:34
शुक्र	29/05/2031 21:49
सूर्य	03/06/2031 11:23
चंद्र	11/06/2031 02:01
मंगल	16/06/2031 09:51

चंद्र - शुक्र - गुरु	
16/06/2031 09:51	
05/09/2031 13:51	
गुरु	27/06/2031 05:35
शनि	10/07/2031 02:01
बुध	21/07/2031 13:59
केतु	26/07/2031 07:37
शुक्र	08/08/2031 20:17
सूर्य	12/08/2031 21:41
चंद्र	19/08/2031 16:01
मंगल	24/08/2031 09:39
राहु	05/09/2031 13:51

चंद्र - शुक्र - शनि	
05/09/2031 13:51	
10/12/2031 23:06	
शनि	20/09/2031 20:07
बुध	04/10/2031 11:49
केतु	10/10/2031 02:46
शुक्र	26/10/2031 04:18
सूर्य	30/10/2031 23:58
चंद्र	08/11/2031 00:44
मंगल	13/11/2031 15:41
राहु	28/11/2031 02:40
गुरु	10/12/2031 23:06

चंद्र - शुक्र - बुध	
10/12/2031 23:06	
06/03/2032 04:51	
बुध	23/12/2031 04:19
केतु	28/12/2031 05:03
शुक्र	11/01/2032 14:00
सूर्य	15/01/2032 21:30
चंद्र	23/01/2032 01:58
मंगल	28/01/2032 02:43
राहु	10/02/2032 01:10
गुरु	21/02/2032 13:08
शनि	06/03/2032 04:51

चंद्र - शुक्र - केतु	
06/03/2032 04:51	
10/04/2032 17:06	
केतु	08/03/2032 06:34
शुक्र	14/03/2032 04:36
सूर्य	15/03/2032 23:13
चंद्र	18/03/2032 22:14
मंगल	20/03/2032 23:57
राहु	26/03/2032 07:47
गुरु	31/03/2032 01:25
शनि	05/04/2032 16:22
बुध	10/04/2032 17:06

चंद्र - सूर्य - सूर्य	
10/04/2032 17:06	
19/04/2032 20:15	
सूर्य	11/04/2032 04:03
चंद्र	11/04/2032 22:19
मंगल	12/04/2032 11:06
राहु	13/04/2032 19:58
गुरु	15/04/2032 01:12
शनि	16/04/2032 11:54
बुध	17/04/2032 18:56
केतु	18/04/2032 07:43
शुक्र	19/04/2032 20:15

चंद्र - सूर्य - चंद्र	
19/04/2032 20:15	
05/05/2032 01:30	
चंद्र	21/04/2032 02:41
मंगल	21/04/2032 24:00
राहु	24/04/2032 06:47
गुरु	26/04/2032 07:29
शनि	28/04/2032 17:19
बुध	30/04/2032 21:03
केतु	01/05/2032 18:22
शुक्र	04/05/2032 07:14
सूर्य	05/05/2032 01:30

चंद्र - सूर्य - मंगल	
05/05/2032 01:30	
15/05/2032 17:10	
मंगल	05/05/2032 16:25
राहु	07/05/2032 06:46
गुरु	08/05/2032 16:51
शनि	10/05/2032 09:20
बुध	11/05/2032 21:33
केतु	12/05/2032 12:28
शुक्र	14/05/2032 07:05
सूर्य	14/05/2032 19:52
चंद्र	15/05/2032 17:10

चंद्र - सूर्य - राहु	
15/05/2032 17:10	
12/06/2032 02:37	
राहु	19/05/2032 19:47
गुरु	23/05/2032 11:27
शनि	27/05/2032 19:33
बुध	31/05/2032 16:41
केतु	02/06/2032 07:02
शुक्र	06/06/2032 20:37
सूर्य	08/06/2032 05:29
चंद्र	10/06/2032 12:16
मंगल	12/06/2032 02:37

चंद्र - सूर्य - गुरु	
12/06/2032 02:37	
06/07/2032 11:01	
गुरु	15/06/2032 08:33
शनि	19/06/2032 05:04
बुध	22/06/2032 15:52
केतु	24/06/2032 01:57
शुक्र	28/06/2032 03:21
सूर्य	29/06/2032 08:34
चंद्र	01/07/2032 09:16
मंगल	02/07/2032 19:22
राहु	06/07/2032 11:01

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - गुरु - बुध - शनि	
29/03/2026 06:14	
09/04/2026 04:24	
शनि	30/03/2026 23:44
बुध	01/04/2026 12:53
केतु	02/04/2026 04:10
शुक्र	03/04/2026 23:52
सूर्य	04/04/2026 12:59
चंद्र	05/04/2026 10:49
मंगल	06/04/2026 02:07
राहु	07/04/2026 17:27
गुरु	09/04/2026 04:24

चंद्र - गुरु - केतु - केतु	
09/04/2026 04:24	
10/04/2026 20:10	
केतु	09/04/2026 06:43
शुक्र	09/04/2026 13:21
सूर्य	09/04/2026 15:20
चंद्र	09/04/2026 18:39
मंगल	09/04/2026 20:58
राहु	10/04/2026 02:56
गुरु	10/04/2026 08:14
शनि	10/04/2026 14:32
बुध	10/04/2026 20:10

चंद्र - गुरु - केतु - शुक्र	
10/04/2026 20:10	
15/04/2026 13:48	
शुक्र	11/04/2026 15:07
सूर्य	11/04/2026 20:47
चंद्र	12/04/2026 06:16
मंगल	12/04/2026 12:53
राहु	13/04/2026 05:56
गुरु	13/04/2026 21:05
शनि	14/04/2026 15:05
बुध	15/04/2026 07:10
केतु	15/04/2026 13:48

चंद्र - गुरु - केतु - सूर्य	
15/04/2026 13:48	
16/04/2026 23:54	
सूर्य	15/04/2026 15:30
चंद्र	15/04/2026 18:21
मंगल	15/04/2026 20:20
राहु	16/04/2026 01:27
गुरु	16/04/2026 06:00
शनि	16/04/2026 11:24
बुध	16/04/2026 16:13
केतु	16/04/2026 18:13
शुक्र	16/04/2026 23:54

चंद्र - गुरु - केतु - चंद्र	
16/04/2026 23:54	
19/04/2026 08:43	
चंद्र	17/04/2026 04:38
मंगल	17/04/2026 07:57
राहु	17/04/2026 16:28
गुरु	18/04/2026 00:02
शनि	18/04/2026 09:02
बुध	18/04/2026 17:05
केतु	18/04/2026 20:24
शुक्र	19/04/2026 05:52
सूर्य	19/04/2026 08:43

चंद्र - गुरु - केतु - मंगल	
19/04/2026 08:43	
21/04/2026 00:29	
मंगल	19/04/2026 11:02
राहु	19/04/2026 17:00
गुरु	19/04/2026 22:18
शनि	20/04/2026 04:36
बुध	20/04/2026 10:14
केतु	20/04/2026 12:33
शुक्र	20/04/2026 19:11
सूर्य	20/04/2026 21:10
चंद्र	21/04/2026 00:29

चंद्र - गुरु - केतु - राहु	
21/04/2026 00:29	
25/04/2026 06:45	
राहु	21/04/2026 15:49
गुरु	22/04/2026 05:27
शनि	22/04/2026 21:39
बुध	23/04/2026 12:08
केतु	23/04/2026 18:06
शुक्र	24/04/2026 11:09
सूर्य	24/04/2026 16:16
चंद्र	25/04/2026 00:47
मंगल	25/04/2026 06:45

चंद्र - गुरु - केतु - गुरु	
25/04/2026 06:45	
29/04/2026 01:39	
गुरु	25/04/2026 18:52
शनि	26/04/2026 09:16
बुध	26/04/2026 22:09
केतु	27/04/2026 03:27
शुक्र	27/04/2026 18:36
सूर्य	27/04/2026 23:09
चंद्र	28/04/2026 06:43
मंगल	28/04/2026 12:01
राहु	29/04/2026 01:39

चंद्र - गुरु - केतु - शनि	
29/04/2026 01:39	
03/05/2026 13:37	
शनि	29/04/2026 18:45
बुध	30/04/2026 10:03
केतु	30/04/2026 16:20
शुक्र	01/05/2026 10:20
सूर्य	01/05/2026 15:44
चंद्र	02/05/2026 00:44
मंगल	02/05/2026 07:01
राहु	02/05/2026 23:13
गुरु	03/05/2026 13:37

चंद्र - गुरु - केतु - बुध	
03/05/2026 13:37	
07/05/2026 14:12	
बुध	04/05/2026 03:18
केतु	04/05/2026 08:56
शुक्र	05/05/2026 01:02
सूर्य	05/05/2026 05:51
चंद्र	05/05/2026 13:54
मंगल	05/05/2026 19:32
राहु	06/05/2026 10:02
गुरु	06/05/2026 22:54
शनि	07/05/2026 14:12

चंद्र - गुरु - शुक्र - शुक्र	
07/05/2026 14:12	
21/05/2026 02:52	
शुक्र	09/05/2026 20:19
सूर्य	10/05/2026 12:33
चंद्र	11/05/2026 15:36
मंगल	12/05/2026 10:32
राहु	14/05/2026 11:14
गुरु	16/05/2026 06:32
शनि	18/05/2026 09:56
बुध	20/05/2026 07:56
केतु	21/05/2026 02:52

चंद्र - गुरु - शुक्र - सूर्य	
21/05/2026 02:52	
25/05/2026 04:16	
सूर्य	21/05/2026 07:44
चंद्र	21/05/2026 15:51
मंगल	21/05/2026 21:32
राहु	22/05/2026 12:09
गुरु	23/05/2026 01:08
शनि	23/05/2026 16:33
बुध	24/05/2026 06:21
केतु	24/05/2026 12:02
शुक्र	25/05/2026 04:16

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - गुरु - शुक्र - चंद्र	
25/05/2026 04:16	
31/05/2026 22:36	
चंद्र	25/05/2026 17:48
मंगल	26/05/2026 03:16
राहु	27/05/2026 03:37
गुरु	28/05/2026 01:15
शनि	29/05/2026 02:58
बुध	30/05/2026 01:57
केतु	30/05/2026 11:26
शुक्र	31/05/2026 14:29
सूर्य	31/05/2026 22:36

चंद्र - गुरु - शुक्र - मंगल	
31/05/2026 22:36	
05/06/2026 16:14	
मंगल	01/06/2026 05:14
राहु	01/06/2026 22:16
गुरु	02/06/2026 13:25
शनि	03/06/2026 07:25
बुध	03/06/2026 23:31
केतु	04/06/2026 06:08
शुक्र	05/06/2026 01:05
सूर्य	05/06/2026 06:46
चंद्र	05/06/2026 16:14

चंद्र - गुरु - शुक्र - राहु	
05/06/2026 16:14	
17/06/2026 20:26	
राहु	07/06/2026 12:04
गुरु	09/06/2026 03:01
शनि	11/06/2026 01:17
बुध	12/06/2026 18:41
केतु	13/06/2026 11:44
शुक्र	15/06/2026 12:26
सूर्य	16/06/2026 03:02
चंद्र	17/06/2026 03:23
मंगल	17/06/2026 20:26

चंद्र - गुरु - शुक्र - गुरु	
17/06/2026 20:26	
28/06/2026 16:10	
गुरु	19/06/2026 07:04
शनि	21/06/2026 00:11
बुध	22/06/2026 12:59
केतु	23/06/2026 04:08
शुक्र	24/06/2026 23:25
सूर्य	25/06/2026 12:25
चंद्र	26/06/2026 10:03
मंगल	27/06/2026 01:12
राहु	28/06/2026 16:10

चंद्र - गुरु - शुक्र - शनि	
28/06/2026 16:10	
11/07/2026 12:36	
शनि	30/06/2026 17:00
बुध	02/07/2026 12:42
केतु	03/07/2026 06:41
शुक्र	05/07/2026 10:06
सूर्य	06/07/2026 01:31
चंद्र	07/07/2026 03:13
मंगल	07/07/2026 21:13
राहु	09/07/2026 19:28
गुरु	11/07/2026 12:36

चंद्र - गुरु - शुक्र - बुध	
11/07/2026 12:36	
23/07/2026 00:34	
बुध	13/07/2026 03:42
केतु	13/07/2026 19:47
शुक्र	15/07/2026 17:47
सूर्य	16/07/2026 07:35
चंद्र	17/07/2026 06:35
मंगल	17/07/2026 22:41
राहु	19/07/2026 16:04
गुरु	21/07/2026 04:52
शनि	23/07/2026 00:34

चंद्र - गुरु - शुक्र - केतु	
23/07/2026 00:34	
27/07/2026 18:12	
केतु	23/07/2026 07:12
शुक्र	24/07/2026 02:08
सूर्य	24/07/2026 07:49
चंद्र	24/07/2026 17:17
मंगल	24/07/2026 23:55
राहु	25/07/2026 16:57
गुरु	26/07/2026 08:06
शनि	27/07/2026 02:06
बुध	27/07/2026 18:12

चंद्र - गुरु - सूर्य - सूर्य	
27/07/2026 18:12	
28/07/2026 23:25	
सूर्य	27/07/2026 19:40
चंद्र	27/07/2026 22:06
मंगल	27/07/2026 23:48
राहु	28/07/2026 04:11
गुरु	28/07/2026 08:05
शनि	28/07/2026 12:42
बुध	28/07/2026 16:51
केतु	28/07/2026 18:33
शुक्र	28/07/2026 23:25

चंद्र - गुरु - सूर्य - चंद्र	
28/07/2026 23:25	
31/07/2026 00:07	
चंद्र	29/07/2026 03:29
मंगल	29/07/2026 06:19
राहु	29/07/2026 13:37
गुरु	29/07/2026 20:07
शनि	30/07/2026 03:50
बुध	30/07/2026 10:44
केतु	30/07/2026 13:34
शुक्र	30/07/2026 21:41
सूर्य	31/07/2026 00:07

चंद्र - गुरु - सूर्य - मंगल	
31/07/2026 00:07	
01/08/2026 10:12	
मंगल	31/07/2026 02:06
राहु	31/07/2026 07:13
गुरु	31/07/2026 11:46
शनि	31/07/2026 17:10
बुध	31/07/2026 22:00
केतु	31/07/2026 23:59
शुक्र	01/08/2026 05:40
सूर्य	01/08/2026 07:22
चंद्र	01/08/2026 10:12

चंद्र - गुरु - सूर्य - राहु	
01/08/2026 10:12	
05/08/2026 01:52	
राहु	01/08/2026 23:21
गुरु	02/08/2026 11:03
शनि	03/08/2026 00:55
बुध	03/08/2026 13:21
केतु	03/08/2026 18:27
शुक्र	04/08/2026 09:04
सूर्य	04/08/2026 13:27
चंद्र	04/08/2026 20:45
मंगल	05/08/2026 01:52

चंद्र - गुरु - सूर्य - गुरु	
05/08/2026 01:52	
08/08/2026 07:47	
गुरु	05/08/2026 12:15
शनि	06/08/2026 00:36
बुध	06/08/2026 11:38
केतु	06/08/2026 16:11
शुक्र	07/08/2026 05:10
सूर्य	07/08/2026 09:04
चंद्र	07/08/2026 15:33
मंगल	07/08/2026 20:06
राहु	08/08/2026 07:47

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 5 मास 23 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
05/05/2008		28/10/2013		28/10/2027		28/10/2042		28/10/2058	
28/10/2013		28/10/2027		28/10/2042		28/10/2058		28/10/2075	
	00/00/0000	शनि	07/07/2015	केतु	06/10/2029	चंद्र	11/01/2045	बुध	25/04/2061
	00/00/0000	केतु	28/04/2017	चंद्र	01/11/2031	बुध	18/05/2047	शुक्र	15/12/2063
	00/00/0000	चंद्र	04/04/2019	बुध	12/01/2034	शुक्र	10/11/2049	सूर्य	26/07/2065
	05/05/2008	बुध	22/04/2021	शुक्र	11/05/2036	सूर्य	18/05/2051	मंगल	29/04/2067
बुध	25/03/2009	शुक्र	25/06/2023	सूर्य	12/10/2037	मंगल	11/01/2053	गुरु	25/03/2069
शुक्र	01/04/2011	सूर्य	21/10/2024	मंगल	02/05/2039	गुरु	28/10/2054	शनि	13/04/2071
सूर्य	24/06/2012	मंगल	03/04/2026	गुरु	05/01/2041	शनि	03/10/2056	केतु	24/06/2073
मंगल	28/10/2013	गुरु	28/10/2027	शनि	28/10/2042	केतु	28/10/2058	चंद्र	28/10/2075

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
28/10/2075		28/10/2093		29/10/2104		29/10/2116	
28/10/2093		29/10/2104		29/10/2116		00/00/0000	
शुक्र	14/08/2078	सूर्य	13/11/2094	मंगल	25/01/2106	गुरु	14/04/2118
सूर्य	28/04/2080	मंगल	03/01/2096	गुरु	31/05/2107	शनि	08/11/2119
मंगल	09/03/2082	गुरु	28/03/2097	शनि	10/11/2108	केतु	14/07/2121
गुरु	15/03/2084	शनि	26/07/2098	केतु	31/05/2110	चंद्र	30/04/2123
शनि	17/05/2086	केतु	27/12/2099	चंद्र	26/01/2112	बुध	06/05/2124
केतु	14/09/2088	चंद्र	04/07/2101	बुध	29/10/2113		00/00/0000
चंद्र	09/03/2091	बुध	13/02/2103	शुक्र	09/09/2115		00/00/0000
बुध	28/10/2093	शुक्र	29/10/2104	सूर्य	29/10/2116		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि	
05/05/2008		25/03/2009		01/04/2011		24/06/2012		28/10/2013	
25/03/2009		01/04/2011		24/06/2012		28/10/2013		07/07/2015	
	00/00/0000	शुक्र	17/07/2009	सूर्य	13/05/2011	मंगल	14/08/2012	शनि	10/01/2014
	00/00/0000	सूर्य	25/09/2009	मंगल	29/06/2011	गुरु	08/10/2012	केतु	31/03/2014
	00/00/0000	मंगल	10/12/2009	गुरु	18/08/2011	शनि	06/12/2012	चंद्र	24/06/2014
	05/05/2008	गुरु	03/03/2010	शनि	12/10/2011	केतु	07/02/2013	बुध	23/09/2014
गुरु	28/06/2008	शनि	31/05/2010	केतु	09/12/2011	चंद्र	16/04/2013	शुक्र	28/12/2014
शनि	20/09/2008	केतु	03/09/2010	चंद्र	09/02/2012	बुध	27/06/2013	सूर्य	24/02/2015
केतु	19/12/2008	चंद्र	14/12/2010	बुध	15/04/2012	शुक्र	11/09/2013	मंगल	29/04/2015
चंद्र	25/03/2009	बुध	01/04/2011	शुक्र	24/06/2012	सूर्य	28/10/2013	गुरु	07/07/2015

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
07/07/2015		28/04/2017		04/04/2019		22/04/2021		25/06/2023	
28/04/2017		04/04/2019		22/04/2021		25/06/2023		21/10/2024	
केतु	01/10/2015	चंद्र	04/08/2017	बुध	22/07/2019	शुक्र	23/08/2021	सूर्य	10/08/2023
चंद्र	31/12/2015	बुध	15/11/2017	शुक्र	16/11/2019	सूर्य	06/11/2021	मंगल	29/09/2023
बुध	06/04/2016	शुक्र	04/03/2018	सूर्य	26/01/2020	मंगल	28/01/2022	गुरु	22/11/2023
शुक्र	17/07/2016	सूर्य	10/05/2018	मंगल	12/04/2020	गुरु	26/04/2022	शनि	20/01/2024
सूर्य	18/09/2016	मंगल	22/07/2018	गुरु	05/07/2020	शनि	31/07/2022	केतु	22/03/2024
मंगल	25/11/2016	गुरु	09/10/2018	शनि	04/10/2020	केतु	11/11/2022	चंद्र	28/05/2024
गुरु	08/02/2017	शनि	02/01/2019	केतु	09/01/2021	चंद्र	28/02/2023	बुध	07/08/2024
शनि	28/04/2017	केतु	04/04/2019	चंद्र	22/04/2021	बुध	25/06/2023	शुक्र	21/10/2024

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
21/10/2024		03/04/2026		28/10/2027		06/10/2029		01/11/2031	
03/04/2026		28/10/2027		06/10/2029		01/11/2031		12/01/2034	
मंगल	15/12/2024	गुरु	07/06/2026	केतु	28/01/2028	चंद्र	18/01/2030	बुध	26/02/2032
गुरु	12/02/2025	शनि	15/08/2026	चंद्र	05/05/2028	बुध	09/05/2030	शुक्र	30/06/2032
शनि	17/04/2025	केतु	28/10/2026	बुध	17/08/2028	शुक्र	03/09/2030	सूर्य	14/09/2032
केतु	25/06/2025	चंद्र	15/01/2027	शुक्र	05/12/2028	सूर्य	14/11/2030	मंगल	06/12/2032
चंद्र	06/09/2025	बुध	09/04/2027	सूर्य	10/02/2029	मंगल	31/01/2031	गुरु	06/03/2033
बुध	22/11/2025	शुक्र	07/07/2027	मंगल	24/04/2029	गुरु	26/04/2031	शनि	11/06/2033
शुक्र	12/02/2026	सूर्य	30/08/2027	गुरु	12/07/2029	शनि	26/07/2031	केतु	23/09/2033
सूर्य	03/04/2026	मंगल	28/10/2027	शनि	06/10/2029	केतु	01/11/2031	चंद्र	12/01/2034

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
12/01/2034		11/05/2036		12/10/2037		02/05/2039		05/01/2041	
11/05/2036		12/10/2037		02/05/2039		05/01/2041		28/10/2042	
शुक्र	23/05/2034	सूर्य	29/06/2036	मंगल	10/12/2037	गुरु	10/07/2039	शनि	26/03/2041
सूर्य	12/08/2034	मंगल	22/08/2036	गुरु	11/02/2038	शनि	22/09/2039	केतु	19/06/2041
मंगल	08/11/2034	गुरु	19/10/2036	शनि	21/04/2038	केतु	10/12/2039	चंद्र	19/09/2041
गुरु	11/02/2035	शनि	21/12/2036	केतु	03/07/2038	चंद्र	04/03/2040	बुध	24/12/2041
शनि	25/05/2035	केतु	26/02/2037	चंद्र	19/09/2038	बुध	02/06/2040	शुक्र	06/04/2042
केतु	12/09/2035	चंद्र	08/05/2037	बुध	11/12/2038	शुक्र	05/09/2040	सूर्य	08/06/2042
चंद्र	07/01/2036	बुध	24/07/2037	शुक्र	09/03/2039	सूर्य	02/11/2040	मंगल	15/08/2042
बुध	11/05/2036	शुक्र	12/10/2037	सूर्य	02/05/2039	मंगल	05/01/2041	गुरु	28/10/2042

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
28/10/2042		11/01/2045		18/05/2047		10/11/2049		18/05/2051	
11/01/2045		18/05/2047		10/11/2049		18/05/2051		11/01/2053	
चंद्र	16/02/2043	बुध	17/05/2045	शुक्र	05/10/2047	सूर्य	01/01/2050	मंगल	19/07/2051
बुध	15/06/2043	शुक्र	27/09/2045	सूर्य	30/12/2047	मंगल	27/02/2050	गुरु	25/09/2051
शुक्र	18/10/2043	सूर्य	17/12/2045	मंगल	02/04/2048	गुरु	01/05/2050	शनि	07/12/2051
सूर्य	02/01/2044	मंगल	16/03/2046	गुरु	13/07/2048	शनि	06/07/2050	केतु	23/02/2052
मंगल	25/03/2044	गुरु	19/06/2046	शनि	30/10/2048	केतु	16/09/2050	चंद्र	17/05/2052
गुरु	24/06/2044	शनि	01/10/2046	केतु	25/02/2049	चंद्र	02/12/2050	बुध	13/08/2052
शनि	29/09/2044	केतु	20/01/2047	चंद्र	30/06/2049	बुध	21/02/2051	शुक्र	15/11/2052
केतु	11/01/2045	चंद्र	18/05/2047	बुध	10/11/2049	शुक्र	18/05/2051	सूर्य	11/01/2053

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
11/01/2053		28/10/2054		03/10/2056		28/10/2058		25/04/2061	
28/10/2054		03/10/2056		28/10/2058		25/04/2061		15/12/2063	
गुरु	26/03/2053	शनि	21/01/2055	केतु	08/01/2057	बुध	11/03/2059	शुक्र	22/09/2061
शनि	13/06/2053	केतु	23/04/2055	चंद्र	22/04/2057	शुक्र	30/07/2059	सूर्य	22/12/2061
केतु	05/09/2053	चंद्र	29/07/2055	बुध	11/08/2057	सूर्य	24/10/2059	मंगल	01/04/2062
चंद्र	05/12/2053	बुध	09/11/2055	शुक्र	06/12/2057	मंगल	26/01/2060	गुरु	18/07/2062
बुध	11/03/2054	शुक्र	27/02/2056	सूर्य	16/02/2058	गुरु	07/05/2060	शनि	11/11/2062
शुक्र	20/06/2054	सूर्य	04/05/2056	मंगल	05/05/2058	शनि	25/08/2060	केतु	16/03/2063
सूर्य	21/08/2054	मंगल	15/07/2056	गुरु	29/07/2058	केतु	21/12/2060	चंद्र	26/07/2063
मंगल	28/10/2054	गुरु	03/10/2056	शनि	28/10/2058	चंद्र	25/04/2061	बुध	15/12/2063

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
15/12/2063		26/07/2065		29/04/2067		25/03/2069		13/04/2071	
26/07/2065		29/04/2067		25/03/2069		13/04/2071		24/06/2073	
सूर्य	09/02/2064	मंगल	30/09/2065	गुरु	16/07/2067	शनि	23/06/2069	केतु	26/07/2071
मंगल	09/04/2064	गुरु	11/12/2065	शनि	08/10/2067	केतु	28/09/2069	चंद्र	14/11/2071
गुरु	14/06/2064	शनि	26/02/2066	केतु	06/01/2068	चंद्र	09/01/2070	बुध	10/03/2072
शनि	24/08/2064	केतु	21/05/2066	चंद्र	11/04/2068	बुध	29/04/2070	शुक्र	13/07/2072
केतु	09/11/2064	चंद्र	17/08/2066	बुध	22/07/2068	शुक्र	24/08/2070	सूर्य	27/09/2072
चंद्र	29/01/2065	बुध	19/11/2066	शुक्र	07/11/2068	सूर्य	03/11/2070	मंगल	19/12/2072
बुध	25/04/2065	शुक्र	27/02/2067	सूर्य	12/01/2069	मंगल	19/01/2071	गुरु	19/03/2073
शुक्र	26/07/2065	सूर्य	29/04/2067	मंगल	25/03/2069	गुरु	13/04/2071	शनि	24/06/2073

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
24/06/2073		28/10/2075		14/08/2078		28/04/2080		09/03/2082	
28/10/2075		14/08/2078		28/04/2080		09/03/2082		15/03/2084	
चंद्र	20/10/2073	शुक्र	04/04/2076	सूर्य	12/10/2078	मंगल	07/07/2080	गुरु	31/05/2082
बुध	23/02/2074	सूर्य	10/07/2076	मंगल	15/12/2078	गुरु	22/09/2080	शनि	28/08/2082
शुक्र	06/07/2074	मंगल	23/10/2076	गुरु	23/02/2079	शनि	13/12/2080	केतु	01/12/2082
सूर्य	25/09/2074	गुरु	14/02/2077	शनि	09/05/2079	केतु	11/03/2081	चंद्र	13/03/2083
मंगल	22/12/2074	शनि	18/06/2077	केतु	29/07/2079	चंद्र	13/06/2081	बुध	29/06/2083
गुरु	28/03/2075	केतु	27/10/2077	चंद्र	23/10/2079	बुध	20/09/2081	शुक्र	21/10/2083
शनि	10/07/2075	चंद्र	17/03/2078	बुध	22/01/2080	शुक्र	04/01/2082	सूर्य	30/12/2083
केतु	28/10/2075	बुध	14/08/2078	शुक्र	28/04/2080	सूर्य	09/03/2082	मंगल	15/03/2084

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
15/03/2084		17/05/2086		14/09/2088		09/03/2091		28/10/2093	
17/05/2086		14/09/2088		09/03/2091		28/10/2093		13/11/2094	
शनि	19/06/2084	केतु	04/09/2086	चंद्र	17/01/2089	बुध	29/07/2091	सूर्य	03/12/2093
केतु	29/09/2084	चंद्र	31/12/2086	बुध	30/05/2089	शुक्र	25/12/2091	मंगल	12/01/2094
चंद्र	17/01/2085	बुध	04/05/2087	शुक्र	17/10/2089	सूर्य	26/03/2092	गुरु	23/02/2094
बुध	13/05/2085	शुक्र	13/09/2087	सूर्य	11/01/2090	मंगल	03/07/2092	शनि	10/04/2094
शुक्र	13/09/2085	सूर्य	03/12/2087	मंगल	15/04/2090	गुरु	19/10/2092	केतु	29/05/2094
सूर्य	27/11/2085	मंगल	29/02/2088	गुरु	26/07/2090	शनि	12/02/2093	चंद्र	21/07/2094
मंगल	18/02/2086	गुरु	03/06/2088	शनि	12/11/2090	केतु	17/06/2093	बुध	15/09/2094
गुरु	17/05/2086	शनि	14/09/2088	केतु	09/03/2091	चंद्र	28/10/2093	शुक्र	13/11/2094

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
13/11/2094		03/01/2096		28/03/2097		26/07/2098		27/12/2099	
03/01/2096		28/03/2097		26/07/2098		27/12/2099		04/07/2101	
मंगल	26/12/2094	गुरु	22/02/2096	शनि	25/05/2097	केतु	01/10/2098	चंद्र	14/03/2100
गुरु	11/02/2095	शनि	16/04/2096	केतु	27/07/2097	चंद्र	12/12/2098	बुध	03/06/2100
शनि	02/04/2095	केतु	14/06/2096	चंद्र	02/10/2097	बुध	26/02/2099	शुक्र	28/08/2100
केतु	25/05/2095	चंद्र	15/08/2096	बुध	12/12/2097	शुक्र	17/05/2099	सूर्य	19/10/2100
चंद्र	22/07/2095	बुध	20/10/2096	शुक्र	25/02/2098	सूर्य	06/07/2099	मंगल	16/12/2100
बुध	21/09/2095	शुक्र	29/12/2096	सूर्य	12/04/2098	मंगल	28/08/2099	गुरु	16/02/2101
शुक्र	24/11/2095	सूर्य	09/02/2097	मंगल	01/06/2098	गुरु	26/10/2099	शनि	24/04/2101
सूर्य	03/01/2096	मंगल	28/03/2097	गुरु	26/07/2098	शनि	27/12/2099	केतु	04/07/2101

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
04/07/2101		13/02/2103		29/10/2104		25/01/2106		31/05/2107	
13/02/2103		29/10/2104		25/01/2106		31/05/2107		10/11/2108	
बुध	29/09/2101	शुक्र	21/05/2103	मंगल	15/12/2104	गुरु	21/03/2106	शनि	03/08/2107
शुक्र	29/12/2101	सूर्य	19/07/2103	गुरु	03/02/2105	शनि	19/05/2106	केतु	11/10/2107
सूर्य	23/02/2102	मंगल	22/09/2103	शनि	30/03/2105	केतु	22/07/2106	चंद्र	23/12/2107
मंगल	25/04/2102	गुरु	01/12/2103	केतु	28/05/2105	चंद्र	28/09/2106	बुध	09/03/2108
गुरु	30/06/2102	शनि	14/02/2104	चंद्र	29/07/2105	बुध	09/12/2106	शुक्र	30/05/2108
शनि	09/09/2102	केतु	04/05/2104	बुध	04/10/2105	शुक्र	23/02/2107	सूर्य	19/07/2108
केतु	24/11/2102	चंद्र	29/07/2104	शुक्र	13/12/2105	सूर्य	11/04/2107	मंगल	12/09/2108
चंद्र	13/02/2103	बुध	29/10/2104	सूर्य	25/01/2106	मंगल	31/05/2107	गुरु	10/11/2108

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
10/11/2108		31/05/2110		26/01/2112		29/10/2113		09/09/2115	
31/05/2110		26/01/2112		29/10/2113		09/09/2115		29/10/2116	
केतु	23/01/2109	चंद्र	22/08/2110	बुध	29/04/2112	शुक्र	12/02/2114	सूर्य	19/10/2115
चंद्र	11/04/2109	बुध	19/11/2110	शुक्र	06/08/2112	सूर्य	17/04/2114	मंगल	01/12/2115
बुध	03/07/2109	शुक्र	21/02/2111	सूर्य	06/10/2112	मंगल	26/06/2114	गुरु	16/01/2116
शुक्र	29/09/2109	सूर्य	19/04/2111	मंगल	12/12/2112	गुरु	11/09/2114	शनि	06/03/2116
सूर्य	22/11/2109	मंगल	21/06/2111	गुरु	22/02/2113	शनि	02/12/2114	केतु	29/04/2116
मंगल	19/01/2110	गुरु	27/08/2111	शनि	10/05/2113	केतु	28/02/2115	चंद्र	25/06/2116
गुरु	24/03/2110	शनि	08/11/2111	केतु	01/08/2113	चंद्र	01/06/2115	बुध	25/08/2116
शनि	31/05/2110	केतु	26/01/2112	चंद्र	29/10/2113	बुध	09/09/2115	शुक्र	29/10/2116

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 7 मास 13 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
05/05/2008		18/12/2013		18/12/2017		18/08/2024		19/04/2029	
18/12/2013		18/12/2017		18/08/2024		19/04/2029		19/04/2041	
	00/00/0000	सूर्य	01/03/2014	चंद्र	09/07/2018	मंगल	26/11/2024	राहु	05/02/2031
	00/00/0000	चंद्र	01/07/2014	मंगल	28/11/2018	राहु	08/08/2025	गुरु	12/09/2032
	00/00/0000	मंगल	24/09/2014	राहु	29/11/2019	गुरु	24/03/2026	शनि	07/08/2034
	00/00/0000	राहु	01/05/2015	गुरु	18/10/2020	शनि	19/12/2026	बुध	19/04/2036
	05/05/2008	गुरु	12/11/2015	शनि	08/11/2021	बुध	17/08/2027	केतु	30/12/2036
गुरु	09/03/2009	शनि	01/07/2016	बुध	19/10/2022	केतु	24/11/2027	शुक्र	31/12/2038
शनि	19/04/2011	बुध	24/01/2017	केतु	10/03/2023	शुक्र	04/09/2028	सूर्य	07/08/2039
बुध	09/03/2013	केतु	19/04/2017	शुक्र	19/04/2024	सूर्य	28/11/2028	चंद्र	06/08/2040
केतु	18/12/2013	शुक्र	18/12/2017	सूर्य	18/08/2024	चंद्र	19/04/2029	मंगल	19/04/2041

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
19/04/2041		19/12/2051		18/08/2064		19/12/2075		18/08/2080	
19/12/2051		18/08/2064		19/12/2075		18/08/2080		00/00/0000	
गुरु	20/09/2042	शनि	20/12/2053	बुध	28/03/2066	केतु	27/03/2076	शुक्र	08/11/2082
शनि	29/05/2044	बुध	07/10/2055	केतु	24/11/2066	शुक्र	05/01/2077	सूर्य	09/07/2083
बुध	02/12/2045	केतु	03/07/2056	शुक्र	14/10/2068	सूर्य	01/04/2077	चंद्र	18/08/2084
केतु	17/07/2046	शुक्र	13/08/2058	सूर्य	09/05/2069	चंद्र	21/08/2077	मंगल	29/05/2085
शुक्र	27/04/2048	सूर्य	01/04/2059	चंद्र	19/04/2070	मंगल	28/11/2077	राहु	30/05/2087
सूर्य	07/11/2048	चंद्र	21/04/2060	मंगल	17/12/2070	राहु	11/08/2078	गुरु	05/05/2088
चंद्र	28/09/2049	मंगल	15/01/2061	राहु	28/08/2072	गुरु	26/03/2079		00/00/0000
मंगल	13/05/2050	राहु	10/12/2062	गुरु	03/03/2074	शनि	21/12/2079		00/00/0000
राहु	19/12/2051	गुरु	18/08/2064	शनि	19/12/2075	बुध	18/08/2080		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
05/05/2008		09/03/2009		19/04/2011		09/03/2013		18/12/2013	
09/03/2009		19/04/2011		09/03/2013		18/12/2013		01/03/2014	
	00/00/0000	शनि	09/07/2009	बुध	26/07/2011	केतु	26/03/2013	सूर्य	22/12/2013
	00/00/0000	बुध	27/10/2009	केतु	04/09/2011	शुक्र	12/05/2013	चंद्र	28/12/2013
	00/00/0000	केतु	11/12/2009	शुक्र	28/12/2011	सूर्य	26/05/2013	मंगल	01/01/2014
	05/05/2008	शुक्र	18/04/2010	सूर्य	01/02/2012	चंद्र	19/06/2013	राहु	12/01/2014
शुक्र	30/07/2008	सूर्य	27/05/2010	चंद्र	29/03/2012	मंगल	06/07/2013	गुरु	22/01/2014
सूर्य	01/09/2008	चंद्र	30/07/2010	मंगल	09/05/2012	राहु	17/08/2013	शनि	03/02/2014
चंद्र	25/10/2008	मंगल	13/09/2010	राहु	20/08/2012	गुरु	24/09/2013	बुध	13/02/2014
मंगल	02/12/2008	राहु	06/01/2011	गुरु	20/11/2012	शनि	08/11/2013	केतु	17/02/2014
राहु	09/03/2009	गुरु	19/04/2011	शनि	09/03/2013	बुध	18/12/2013	शुक्र	01/03/2014

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
01/03/2014		01/07/2014		24/09/2014		01/05/2015		12/11/2015	
01/07/2014		24/09/2014		01/05/2015		12/11/2015		01/07/2016	
चंद्र	11/03/2014	मंगल	06/07/2014	राहु	27/10/2014	गुरु	27/05/2015	शनि	19/12/2015
मंगल	19/03/2014	राहु	19/07/2014	गुरु	25/11/2014	शनि	27/06/2015	बुध	21/01/2016
राहु	06/04/2014	गुरु	30/07/2014	शनि	30/12/2014	बुध	25/07/2015	केतु	03/02/2016
गुरु	22/04/2014	शनि	13/08/2014	बुध	30/01/2015	केतु	05/08/2015	शुक्र	13/03/2016
शनि	11/05/2014	बुध	25/08/2014	केतु	12/02/2015	शुक्र	07/09/2015	सूर्य	24/03/2016
बुध	29/05/2014	केतु	30/08/2014	शुक्र	20/03/2015	सूर्य	16/09/2015	चंद्र	13/04/2016
केतु	05/06/2014	शुक्र	13/09/2014	सूर्य	31/03/2015	चंद्र	03/10/2015	मंगल	26/04/2016
शुक्र	25/06/2014	सूर्य	17/09/2014	चंद्र	19/04/2015	मंगल	14/10/2015	राहु	31/05/2016
सूर्य	01/07/2014	चंद्र	24/09/2014	मंगल	01/05/2015	राहु	12/11/2015	गुरु	01/07/2016

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
01/07/2016		24/01/2017		19/04/2017		18/12/2017		09/07/2018	
24/01/2017		19/04/2017		18/12/2017		09/07/2018		28/11/2018	
बुध	30/07/2016	केतु	29/01/2017	शुक्र	29/05/2017	चंद्र	04/01/2018	मंगल	18/07/2018
केतु	11/08/2016	शुक्र	12/02/2017	सूर्य	11/06/2017	मंगल	16/01/2018	राहु	08/08/2018
शुक्र	14/09/2016	सूर्य	16/02/2017	चंद्र	01/07/2017	राहु	15/02/2018	गुरु	27/08/2018
सूर्य	25/09/2016	चंद्र	23/02/2017	मंगल	15/07/2017	गुरु	15/03/2018	शनि	18/09/2018
चंद्र	12/10/2016	मंगल	28/02/2017	राहु	21/08/2017	शनि	16/04/2018	बुध	08/10/2018
मंगल	24/10/2016	राहु	13/03/2017	गुरु	22/09/2017	बुध	14/05/2018	केतु	17/10/2018
राहु	24/11/2016	गुरु	24/03/2017	शनि	31/10/2017	केतु	26/05/2018	शुक्र	09/11/2018
गुरु	22/12/2016	शनि	07/04/2017	बुध	04/12/2017	शुक्र	29/06/2018	सूर्य	16/11/2018
शनि	24/01/2017	बुध	19/04/2017	केतु	18/12/2017	सूर्य	09/07/2018	चंद्र	28/11/2018

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
28/11/2018		29/11/2019		18/10/2020		08/11/2021		19/10/2022	
29/11/2019		18/10/2020		08/11/2021		19/10/2022		10/03/2023	
राहु	22/01/2019	गुरु	11/01/2020	शनि	18/12/2020	बुध	27/12/2021	केतु	27/10/2022
गुरु	12/03/2019	शनि	02/03/2020	बुध	11/02/2021	केतु	16/01/2022	शुक्र	20/11/2022
शनि	09/05/2019	बुध	17/04/2020	केतु	05/03/2021	शुक्र	14/03/2022	सूर्य	27/11/2022
बुध	29/06/2019	केतु	06/05/2020	शुक्र	09/05/2021	सूर्य	31/03/2022	चंद्र	09/12/2022
केतु	21/07/2019	शुक्र	29/06/2020	सूर्य	28/05/2021	चंद्र	29/04/2022	मंगल	17/12/2022
शुक्र	19/09/2019	सूर्य	15/07/2020	चंद्र	29/06/2021	मंगल	19/05/2022	राहु	07/01/2023
सूर्य	08/10/2019	चंद्र	12/08/2020	मंगल	21/07/2021	राहु	10/07/2022	गुरु	26/01/2023
चंद्र	07/11/2019	मंगल	30/08/2020	राहु	17/09/2021	गुरु	25/08/2022	शनि	18/02/2023
मंगल	29/11/2019	राहु	18/10/2020	गुरु	08/11/2021	शनि	19/10/2022	बुध	10/03/2023

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
10/03/2023		19/04/2024		18/08/2024		26/11/2024		08/08/2025	
19/04/2024		18/08/2024		26/11/2024		08/08/2025		24/03/2026	
शुक्र	16/05/2023	सूर्य	25/04/2024	मंगल	24/08/2024	राहु	03/01/2025	गुरु	08/09/2025
सूर्य	06/06/2023	चंद्र	05/05/2024	राहु	08/09/2024	गुरु	06/02/2025	शनि	14/10/2025
चंद्र	09/07/2023	मंगल	12/05/2024	गुरु	21/09/2024	शनि	19/03/2025	बुध	15/11/2025
मंगल	02/08/2023	राहु	30/05/2024	शनि	07/10/2024	बुध	24/04/2025	केतु	28/11/2025
राहु	02/10/2023	गुरु	15/06/2024	बुध	21/10/2024	केतु	09/05/2025	शुक्र	05/01/2026
गुरु	25/11/2023	शनि	05/07/2024	केतु	27/10/2024	शुक्र	20/06/2025	सूर्य	16/01/2026
शनि	28/01/2024	बुध	22/07/2024	शुक्र	12/11/2024	सूर्य	03/07/2025	चंद्र	04/02/2026
बुध	26/03/2024	केतु	29/07/2024	सूर्य	17/11/2024	चंद्र	24/07/2025	मंगल	18/02/2026
केतु	19/04/2024	शुक्र	18/08/2024	चंद्र	26/11/2024	मंगल	08/08/2025	राहु	24/03/2026

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
24/03/2026		19/12/2026		17/08/2027		24/11/2027		04/09/2028	
19/12/2026		17/08/2027		24/11/2027		04/09/2028		28/11/2028	
शनि	05/05/2026	बुध	22/01/2027	केतु	23/08/2027	शुक्र	11/01/2028	सूर्य	08/09/2028
बुध	13/06/2026	केतु	05/02/2027	शुक्र	08/09/2027	सूर्य	25/01/2028	चंद्र	15/09/2028
केतु	28/06/2026	शुक्र	17/03/2027	सूर्य	13/09/2027	चंद्र	18/02/2028	मंगल	20/09/2028
शुक्र	12/08/2026	सूर्य	29/03/2027	चंद्र	22/09/2027	मंगल	05/03/2028	राहु	03/10/2028
सूर्य	26/08/2026	चंद्र	18/04/2027	मंगल	27/09/2027	राहु	17/04/2028	गुरु	14/10/2028
चंद्र	17/09/2026	मंगल	02/05/2027	राहु	12/10/2027	गुरु	25/05/2028	शनि	28/10/2028
मंगल	03/10/2026	राहु	08/06/2027	गुरु	26/10/2027	शनि	09/07/2028	बुध	09/11/2028
राहु	13/11/2026	गुरु	10/07/2027	शनि	10/11/2027	बुध	18/08/2028	केतु	14/11/2028
गुरु	19/12/2026	शनि	17/08/2027	बुध	24/11/2027	केतु	04/09/2028	शुक्र	28/11/2028

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
28/11/2028		19/04/2029		05/02/2031		12/09/2032		07/08/2034	
19/04/2029		05/02/2031		12/09/2032		07/08/2034		19/04/2036	
चंद्र	10/12/2028	राहु	26/07/2029	गुरु	24/04/2031	शनि	31/12/2032	बुध	03/11/2034
मंगल	18/12/2028	गुरु	22/10/2029	शनि	26/07/2031	बुध	08/04/2033	केतु	09/12/2034
राहु	08/01/2029	शनि	03/02/2030	बुध	16/10/2031	केतु	18/05/2033	शुक्र	22/03/2035
गुरु	27/01/2029	बुध	07/05/2030	केतु	20/11/2031	शुक्र	11/09/2033	सूर्य	22/04/2035
शनि	19/02/2029	केतु	15/06/2030	शुक्र	25/02/2032	सूर्य	16/10/2033	चंद्र	13/06/2035
बुध	11/03/2029	शुक्र	02/10/2030	सूर्य	25/03/2032	चंद्र	13/12/2033	मंगल	19/07/2035
केतु	19/03/2029	सूर्य	04/11/2030	चंद्र	13/05/2032	मंगल	22/01/2034	राहु	20/10/2035
शुक्र	12/04/2029	चंद्र	29/12/2030	मंगल	16/06/2032	राहु	06/05/2034	गुरु	11/01/2036
सूर्य	19/04/2029	मंगल	05/02/2031	राहु	12/09/2032	गुरु	07/08/2034	शनि	19/04/2036

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
19/04/2036		30/12/2036		31/12/2038		07/08/2039		06/08/2040	
30/12/2036		31/12/2038		07/08/2039		06/08/2040		19/04/2041	
केतु	03/05/2036	शुक्र	01/05/2037	सूर्य	11/01/2039	चंद्र	06/09/2039	मंगल	21/08/2040
शुक्र	15/06/2036	सूर्य	06/06/2037	चंद्र	29/01/2039	मंगल	28/09/2039	राहु	28/09/2040
सूर्य	28/06/2036	चंद्र	06/08/2037	मंगल	11/02/2039	राहु	21/11/2039	गुरु	01/11/2040
चंद्र	19/07/2036	मंगल	18/09/2037	राहु	16/03/2039	गुरु	09/01/2040	शनि	12/12/2040
मंगल	03/08/2036	राहु	06/01/2038	गुरु	14/04/2039	शनि	07/03/2040	बुध	17/01/2041
राहु	10/09/2036	गुरु	13/04/2038	शनि	19/05/2039	बुध	28/04/2040	केतु	01/02/2041
गुरु	15/10/2036	शनि	07/08/2038	बुध	19/06/2039	केतु	19/05/2040	शुक्र	16/03/2041
शनि	24/11/2036	बुध	18/11/2038	केतु	01/07/2039	शुक्र	19/07/2040	सूर्य	28/03/2041
बुध	30/12/2036	केतु	31/12/2038	शुक्र	07/08/2039	सूर्य	06/08/2040	चंद्र	19/04/2041

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
19/04/2041		20/09/2042		29/05/2044		02/12/2045		17/07/2046	
20/09/2042		29/05/2044		02/12/2045		17/07/2046		27/04/2048	
गुरु	27/06/2041	शनि	27/12/2042	बुध	15/08/2044	केतु	15/12/2045	शुक्र	03/11/2046
शनि	17/09/2041	बुध	24/03/2043	केतु	17/09/2044	शुक्र	22/01/2046	सूर्य	05/12/2046
बुध	30/11/2041	केतु	29/04/2043	शुक्र	18/12/2044	सूर्य	03/02/2046	चंद्र	28/01/2047
केतु	30/12/2041	शुक्र	10/08/2043	सूर्य	14/01/2045	चंद्र	22/02/2046	मंगल	07/03/2047
शुक्र	27/03/2042	सूर्य	10/09/2043	चंद्र	01/03/2045	मंगल	07/03/2046	राहु	12/06/2047
सूर्य	22/04/2042	चंद्र	31/10/2043	मंगल	02/04/2045	राहु	10/04/2046	गुरु	07/09/2047
चंद्र	04/06/2042	मंगल	06/12/2043	राहु	24/06/2045	गुरु	10/05/2046	शनि	19/12/2047
मंगल	04/07/2042	राहु	08/03/2044	गुरु	06/09/2045	शनि	15/06/2046	बुध	20/03/2048
राहु	20/09/2042	गुरु	29/05/2044	शनि	02/12/2045	बुध	17/07/2046	केतु	27/04/2048

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
27/04/2048		07/11/2048		28/09/2049		13/05/2050		19/12/2051	
07/11/2048		28/09/2049		13/05/2050		19/12/2051		20/12/2053	
सूर्य	06/05/2048	चंद्र	05/12/2048	मंगल	11/10/2049	राहु	09/08/2050	शनि	13/04/2052
चंद्र	23/05/2048	मंगल	23/12/2048	राहु	14/11/2049	गुरु	26/10/2050	बुध	26/07/2052
मंगल	03/06/2048	राहु	10/02/2049	गुरु	15/12/2049	शनि	27/01/2051	केतु	06/09/2052
राहु	02/07/2048	गुरु	25/03/2049	शनि	20/01/2050	बुध	19/04/2051	शुक्र	06/01/2053
गुरु	28/07/2048	शनि	16/05/2049	बुध	21/02/2050	केतु	23/05/2051	सूर्य	12/02/2053
शनि	28/08/2048	बुध	01/07/2049	केतु	06/03/2050	शुक्र	29/08/2051	चंद्र	14/04/2053
बुध	25/09/2048	केतु	20/07/2049	शुक्र	13/04/2050	सूर्य	27/09/2051	मंगल	27/05/2053
केतु	06/10/2048	शुक्र	12/09/2049	सूर्य	24/04/2050	चंद्र	15/11/2051	राहु	14/09/2053
शुक्र	07/11/2048	सूर्य	28/09/2049	चंद्र	13/05/2050	मंगल	19/12/2051	गुरु	20/12/2053

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
20/12/2053		07/10/2055		03/07/2056		13/08/2058		01/04/2059	
07/10/2055		03/07/2056		13/08/2058		01/04/2059		21/04/2060	
बुध	23/03/2054	केतु	22/10/2055	शुक्र	08/11/2056	सूर्य	24/08/2058	चंद्र	03/05/2059
केतु	30/04/2054	शुक्र	06/12/2055	सूर्य	17/12/2056	चंद्र	13/09/2058	मंगल	26/05/2059
शुक्र	18/08/2054	सूर्य	20/12/2055	चंद्र	19/02/2057	मंगल	26/09/2058	राहु	22/07/2059
सूर्य	19/09/2054	चंद्र	11/01/2056	मंगल	05/04/2057	राहु	31/10/2058	गुरु	12/09/2059
चंद्र	13/11/2054	मंगल	27/01/2056	राहु	30/07/2057	गुरु	01/12/2058	शनि	12/11/2059
मंगल	21/12/2054	राहु	08/03/2056	गुरु	09/11/2057	शनि	06/01/2059	बुध	06/01/2060
राहु	30/03/2055	गुरु	13/04/2056	शनि	11/03/2058	बुध	08/02/2059	केतु	28/01/2060
गुरु	25/06/2055	शनि	25/05/2056	बुध	29/06/2058	केतु	21/02/2059	शुक्र	01/04/2060
शनि	07/10/2055	बुध	03/07/2056	केतु	13/08/2058	शुक्र	01/04/2059	सूर्य	21/04/2060

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
21/04/2060		15/01/2061		10/12/2062		18/08/2064		28/03/2066	
15/01/2061		10/12/2062		18/08/2064		28/03/2066		24/11/2066	
मंगल	06/05/2060	राहु	30/04/2061	गुरु	03/03/2063	बुध	09/11/2064	केतु	11/04/2066
राहु	16/06/2060	गुरु	31/07/2061	शनि	08/06/2063	केतु	14/12/2064	शुक्र	21/05/2066
गुरु	22/07/2060	शनि	18/11/2061	बुध	04/09/2063	शुक्र	21/03/2065	सूर्य	02/06/2066
शनि	03/09/2060	बुध	24/02/2062	केतु	10/10/2063	सूर्य	20/04/2065	चंद्र	22/06/2066
बुध	11/10/2060	केतु	06/04/2062	शुक्र	21/01/2064	चंद्र	08/06/2065	मंगल	06/07/2066
केतु	26/10/2060	शुक्र	30/07/2062	सूर्य	20/02/2064	मंगल	12/07/2065	राहु	12/08/2066
शुक्र	10/12/2060	सूर्य	03/09/2062	चंद्र	12/04/2064	राहु	08/10/2065	गुरु	13/09/2066
सूर्य	24/12/2060	चंद्र	31/10/2062	मंगल	18/05/2064	गुरु	25/12/2065	शनि	21/10/2066
चंद्र	15/01/2061	मंगल	10/12/2062	राहु	18/08/2064	शनि	28/03/2066	बुध	24/11/2066

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
24/11/2066		14/10/2068		09/05/2069		19/04/2070		17/12/2070	
14/10/2068		09/05/2069		19/04/2070		17/12/2070		28/08/2072	
शुक्र	19/03/2067	सूर्य	24/10/2068	चंद्र	07/06/2069	मंगल	03/05/2070	राहु	20/03/2071
सूर्य	23/04/2067	चंद्र	11/11/2068	मंगल	27/06/2069	राहु	08/06/2070	गुरु	10/06/2071
चंद्र	19/06/2067	मंगल	23/11/2068	राहु	18/08/2069	गुरु	11/07/2070	शनि	17/09/2071
मंगल	29/07/2067	राहु	24/12/2068	गुरु	03/10/2069	शनि	18/08/2070	बुध	14/12/2071
राहु	10/11/2067	गुरु	20/01/2069	शनि	26/11/2069	बुध	21/09/2070	केतु	19/01/2072
गुरु	10/02/2068	शनि	22/02/2069	बुध	14/01/2070	केतु	05/10/2070	शुक्र	01/05/2072
शनि	29/05/2068	बुध	24/03/2069	केतु	03/02/2070	शुक्र	14/11/2070	सूर्य	01/06/2072
बुध	04/09/2068	केतु	05/04/2069	शुक्र	02/04/2070	सूर्य	26/11/2070	चंद्र	23/07/2072
केतु	14/10/2068	शुक्र	09/05/2069	सूर्य	19/04/2070	चंद्र	17/12/2070	मंगल	28/08/2072

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
28/08/2072		03/03/2074		19/12/2075		27/03/2076		05/01/2077	
03/03/2074		19/12/2075		27/03/2076		05/01/2077		01/04/2077	
गुरु	10/11/2072	शनि	15/06/2074	केतु	25/12/2075	शुक्र	14/05/2076	सूर्य	10/01/2077
शनि	05/02/2073	बुध	16/09/2074	शुक्र	10/01/2076	सूर्य	28/05/2076	चंद्र	17/01/2077
बुध	25/04/2073	केतु	24/10/2074	सूर्य	15/01/2076	चंद्र	20/06/2076	मंगल	22/01/2077
केतु	27/05/2073	शुक्र	10/02/2075	चंद्र	23/01/2076	मंगल	07/07/2076	राहु	03/02/2077
शुक्र	27/08/2073	सूर्य	15/03/2075	मंगल	29/01/2076	राहु	19/08/2076	गुरु	15/02/2077
सूर्य	23/09/2073	चंद्र	09/05/2075	राहु	13/02/2076	गुरु	26/09/2076	शनि	28/02/2077
चंद्र	08/11/2073	मंगल	16/06/2075	गुरु	26/02/2076	शनि	09/11/2076	बुध	12/03/2077
मंगल	11/12/2073	राहु	22/09/2075	शनि	13/03/2076	बुध	20/12/2076	केतु	17/03/2077
राहु	03/03/2074	गुरु	19/12/2075	बुध	27/03/2076	केतु	05/01/2077	शुक्र	01/04/2077

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
01/04/2077		21/08/2077		28/11/2077		11/08/2078		26/03/2079	
21/08/2077		28/11/2077		11/08/2078		26/03/2079		21/12/2079	
चंद्र	12/04/2077	मंगल	26/08/2077	राहु	05/01/2078	गुरु	10/09/2078	शनि	08/05/2079
मंगल	21/04/2077	राहु	10/09/2077	गुरु	08/02/2078	शनि	16/10/2078	बुध	15/06/2079
राहु	12/05/2077	गुरु	24/09/2077	शनि	21/03/2078	बुध	17/11/2078	केतु	01/07/2079
गुरु	31/05/2077	शनि	09/10/2077	बुध	26/04/2078	केतु	30/11/2078	शुक्र	15/08/2079
शनि	22/06/2077	बुध	23/10/2077	केतु	11/05/2078	शुक्र	07/01/2079	सूर्य	28/08/2079
बुध	13/07/2077	केतु	29/10/2077	शुक्र	23/06/2078	सूर्य	19/01/2079	चंद्र	20/09/2079
केतु	21/07/2077	शुक्र	15/11/2077	सूर्य	05/07/2078	चंद्र	07/02/2079	मंगल	05/10/2079
शुक्र	13/08/2077	सूर्य	20/11/2077	चंद्र	27/07/2078	मंगल	20/02/2079	राहु	15/11/2079
सूर्य	21/08/2077	चंद्र	28/11/2077	मंगल	11/08/2078	राहु	26/03/2079	गुरु	21/12/2079

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 2 वर्ष 2 मास 17 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
05/05/2008		23/07/2010		22/07/2016		23/07/2031		23/07/2039	
23/07/2010		22/07/2016		23/07/2031		23/07/2039		22/07/2056	
	00/00/0000	सूर्य	21/11/2010	चंद्र	22/08/2018	मंगल	24/02/2032	बुध	26/03/2042
	00/00/0000	चंद्र	22/09/2011	मंगल	02/10/2019	बुध	29/05/2033	शनि	22/10/2043
	00/00/0000	मंगल	02/03/2012	बुध	10/02/2022	शनि	24/02/2034	गुरु	19/10/2046
	00/00/0000	बुध	10/02/2013	शनि	03/07/2023	गुरु	23/07/2035	राहु	07/09/2048
	00/00/0000	शनि	01/09/2013	गुरु	20/02/2026	राहु	12/06/2036	शुक्र	29/12/2051
	00/00/0000	गुरु	21/09/2014	राहु	22/10/2027	शुक्र	01/01/2038	सूर्य	08/12/2052
	05/05/2008	राहु	23/05/2015	शुक्र	21/09/2030	सूर्य	12/06/2038	चंद्र	19/04/2055
राहु	23/07/2010	शुक्र	22/07/2016	सूर्य	23/07/2031	चंद्र	23/07/2039	मंगल	22/07/2056

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
22/07/2056		23/07/2066		22/07/2085		22/07/2097	
23/07/2066		22/07/2085		22/07/2097		06/05/2116	
शनि	25/06/2057	गुरु	25/11/2069	राहु	21/11/2086	शुक्र	23/08/2101
गुरु	30/03/2059	राहु	05/01/2072	शुक्र	23/03/2089	सूर्य	23/10/2102
राहु	09/05/2060	शुक्र	15/09/2075	सूर्य	21/11/2089	चंद्र	22/09/2105
शुक्र	19/04/2062	सूर्य	05/10/2076	चंद्र	23/07/2091	मंगल	13/04/2107
सूर्य	08/11/2062	चंद्र	26/05/2079	मंगल	12/06/2092	बुध	03/08/2110
चंद्र	29/03/2064	मंगल	21/10/2080	बुध	02/05/2094	शनि	13/07/2112
मंगल	25/12/2064	बुध	19/10/2083	शनि	12/06/2095	गुरु	23/03/2116
बुध	23/07/2066	शनि	22/07/2085	गुरु	22/07/2097	राहु	06/05/2116

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध	
05/05/2008		23/07/2010		21/11/2010		22/09/2011		02/03/2012	
23/07/2010		21/11/2010		22/09/2011		02/03/2012		10/02/2013	
राहु	25/06/2008	सूर्य	29/07/2010	चंद्र	03/01/2011	मंगल	04/10/2011	बुध	25/04/2012
शुक्र	08/12/2008	चंद्र	15/08/2010	मंगल	25/01/2011	बुध	29/10/2011	शनि	27/05/2012
सूर्य	24/01/2009	मंगल	24/08/2010	बुध	14/03/2011	शनि	13/11/2011	गुरु	27/07/2012
चंद्र	22/05/2009	बुध	12/09/2010	शनि	11/04/2011	गुरु	12/12/2011	राहु	03/09/2012
मंगल	25/07/2009	शनि	24/09/2010	गुरु	04/06/2011	राहु	30/12/2011	शुक्र	09/11/2012
बुध	06/12/2009	गुरु	15/10/2010	राहु	08/07/2011	शुक्र	31/01/2012	सूर्य	29/11/2012
शनि	23/02/2010	राहु	29/10/2010	शुक्र	05/09/2011	सूर्य	09/02/2012	चंद्र	15/01/2013
गुरु	23/07/2010	शुक्र	21/11/2010	सूर्य	22/09/2011	चंद्र	02/03/2012	मंगल	10/02/2013

सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
10/02/2013		01/09/2013		21/09/2014		23/05/2015		22/07/2016	
01/09/2013		21/09/2014		23/05/2015		22/07/2016		22/08/2018	
शनि	01/03/2013	गुरु	08/11/2013	राहु	19/10/2014	शुक्र	14/08/2015	चंद्र	05/11/2016
गुरु	06/04/2013	राहु	21/12/2013	शुक्र	05/12/2014	सूर्य	07/09/2015	मंगल	31/12/2016
राहु	28/04/2013	शुक्र	06/03/2014	सूर्य	18/12/2014	चंद्र	05/11/2015	बुध	30/04/2017
शुक्र	07/06/2013	सूर्य	27/03/2014	चंद्र	21/01/2015	मंगल	06/12/2015	शनि	09/07/2017
सूर्य	18/06/2013	चंद्र	20/05/2014	मंगल	08/02/2015	बुध	11/02/2016	गुरु	20/11/2017
चंद्र	16/07/2013	मंगल	17/06/2014	बुध	19/03/2015	शनि	22/03/2016	राहु	13/02/2018
मंगल	31/07/2013	बुध	17/08/2014	शनि	10/04/2015	गुरु	05/06/2016	शुक्र	11/07/2018
बुध	01/09/2013	शनि	21/09/2014	गुरु	23/05/2015	राहु	22/07/2016	सूर्य	22/08/2018

चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु	
22/08/2018		02/10/2019		10/02/2022		03/07/2023		20/02/2026	
02/10/2019		10/02/2022		03/07/2023		20/02/2026		22/10/2027	
मंगल	21/09/2018	बुध	15/02/2020	शनि	29/03/2022	गुरु	19/12/2023	राहु	29/04/2026
बुध	24/11/2018	शनि	04/05/2020	गुरु	27/06/2022	राहु	04/04/2024	शुक्र	25/08/2026
शनि	01/01/2019	गुरु	03/10/2020	राहु	22/08/2022	शुक्र	09/10/2024	सूर्य	28/09/2026
गुरु	13/03/2019	राहु	07/01/2021	शुक्र	29/11/2022	सूर्य	01/12/2024	चंद्र	22/12/2026
राहु	27/04/2019	शुक्र	24/06/2021	सूर्य	27/12/2022	चंद्र	14/04/2025	मंगल	05/02/2027
शुक्र	15/07/2019	सूर्य	11/08/2021	चंद्र	07/03/2023	मंगल	24/06/2025	बुध	12/05/2027
सूर्य	07/08/2019	चंद्र	08/12/2021	मंगल	14/04/2023	बुध	23/11/2025	शनि	07/07/2027
चंद्र	02/10/2019	मंगल	10/02/2022	बुध	03/07/2023	शनि	20/02/2026	गुरु	22/10/2027

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
22/10/2027		21/09/2030		23/07/2031		24/02/2032		29/05/2033	
21/09/2030		23/07/2031		24/02/2032		29/05/2033		24/02/2034	
शुक्र	16/05/2028	सूर्य	08/10/2030	मंगल	08/08/2031	बुध	07/05/2032	शनि	23/06/2033
सूर्य	15/07/2028	चंद्र	20/11/2030	बुध	11/09/2031	शनि	18/06/2032	गुरु	10/08/2033
चंद्र	09/12/2028	मंगल	12/12/2030	शनि	01/10/2031	गुरु	07/09/2032	राहु	09/09/2033
मंगल	26/02/2029	बुध	29/01/2031	गुरु	08/11/2031	राहु	28/10/2032	शुक्र	01/11/2033
बुध	13/08/2029	शनि	26/02/2031	राहु	02/12/2031	शुक्र	26/01/2033	सूर्य	16/11/2033
शनि	20/11/2029	गुरु	21/04/2031	शुक्र	13/01/2032	सूर्य	20/02/2033	चंद्र	23/12/2033
गुरु	26/05/2030	राहु	25/05/2031	सूर्य	25/01/2032	चंद्र	25/04/2033	मंगल	12/01/2034
राहु	21/09/2030	शुक्र	23/07/2031	चंद्र	24/02/2032	मंगल	29/05/2033	बुध	24/02/2034

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
24/02/2034		23/07/2035		12/06/2036		01/01/2038		12/06/2038	
23/07/2035		12/06/2036		01/01/2038		12/06/2038		23/07/2039	
गुरु	25/05/2034	राहु	28/08/2035	शुक्र	30/09/2036	सूर्य	10/01/2038	चंद्र	07/08/2038
राहु	21/07/2034	शुक्र	30/10/2035	सूर्य	01/11/2036	चंद्र	01/02/2038	मंगल	06/09/2038
शुक्र	29/10/2034	सूर्य	17/11/2035	चंद्र	18/01/2037	मंगल	13/02/2038	बुध	09/11/2038
सूर्य	27/11/2034	चंद्र	01/01/2036	मंगल	02/03/2037	बुध	11/03/2038	शनि	17/12/2038
चंद्र	06/02/2035	मंगल	25/01/2036	बुध	30/05/2037	शनि	26/03/2038	गुरु	26/02/2039
मंगल	16/03/2035	बुध	16/03/2036	शनि	22/07/2037	गुरु	23/04/2038	राहु	12/04/2039
बुध	05/06/2035	शनि	15/04/2036	गुरु	30/10/2037	राहु	11/05/2038	शुक्र	30/06/2039
शनि	23/07/2035	गुरु	12/06/2036	राहु	01/01/2038	शुक्र	12/06/2038	सूर्य	23/07/2039

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
23/07/2039		26/03/2042		22/10/2043		19/10/2046		07/09/2048	
26/03/2042		22/10/2043		19/10/2046		07/09/2048		29/12/2051	
बुध	24/12/2039	शनि	18/05/2042	गुरु	01/05/2044	राहु	03/01/2047	शुक्र	30/04/2049
शनि	23/03/2040	गुरु	28/08/2042	राहु	31/08/2044	शुक्र	17/05/2047	सूर्य	06/07/2049
गुरु	11/09/2040	राहु	31/10/2042	शुक्र	31/03/2045	सूर्य	25/06/2047	चंद्र	21/12/2049
राहु	29/12/2040	शुक्र	19/02/2043	सूर्य	31/05/2045	चंद्र	29/09/2047	मंगल	20/03/2050
शुक्र	07/07/2041	सूर्य	23/03/2043	चंद्र	30/10/2045	मंगल	19/11/2047	बुध	26/09/2050
सूर्य	30/08/2041	चंद्र	11/06/2043	मंगल	18/01/2046	बुध	06/03/2048	शनि	16/01/2051
चंद्र	13/01/2042	मंगल	24/07/2043	बुध	09/07/2046	शनि	09/05/2048	गुरु	17/08/2051
मंगल	26/03/2042	बुध	22/10/2043	शनि	19/10/2046	गुरु	07/09/2048	राहु	29/12/2051

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
29/12/2051		08/12/2052		19/04/2055		22/07/2056		25/06/2057	
08/12/2052		19/04/2055		22/07/2056		25/06/2057		30/03/2059	
सूर्य	17/01/2052	चंद्र	07/04/2053	मंगल	23/05/2055	शनि	22/08/2056	गुरु	16/10/2057
चंद्र	05/03/2052	मंगल	09/06/2053	बुध	04/08/2055	गुरु	21/10/2056	राहु	27/12/2057
मंगल	30/03/2052	बुध	23/10/2053	शनि	15/09/2055	राहु	28/11/2056	शुक्र	01/05/2058
बुध	24/05/2052	शनि	11/01/2054	गुरु	05/12/2055	शुक्र	01/02/2057	सूर्य	05/06/2058
शनि	25/06/2052	गुरु	12/06/2054	राहु	25/01/2056	सूर्य	20/02/2057	चंद्र	03/09/2058
गुरु	24/08/2052	राहु	16/09/2054	शुक्र	24/04/2056	चंद्र	08/04/2057	मंगल	20/10/2058
राहु	02/10/2052	शुक्र	02/03/2055	सूर्य	19/05/2056	मंगल	03/05/2057	बुध	29/01/2059
शुक्र	08/12/2052	सूर्य	19/04/2055	चंद्र	22/07/2056	बुध	25/06/2057	शनि	30/03/2059

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
30/03/2059		09/05/2060		19/04/2062		08/11/2062		29/03/2064	
09/05/2060		19/04/2062		08/11/2062		29/03/2064		25/12/2064	
राहु	14/05/2059	शुक्र	24/09/2060	सूर्य	30/04/2062	चंद्र	17/01/2063	मंगल	18/04/2064
शुक्र	01/08/2059	सूर्य	02/11/2060	चंद्र	28/05/2062	मंगल	24/02/2063	बुध	31/05/2064
सूर्य	23/08/2059	चंद्र	09/02/2061	मंगल	12/06/2062	बुध	15/05/2063	शनि	25/06/2064
चंद्र	19/10/2059	मंगल	03/04/2061	बुध	14/07/2062	शनि	01/07/2063	गुरु	11/08/2064
मंगल	18/11/2059	बुध	23/07/2061	शनि	02/08/2062	गुरु	28/09/2063	राहु	10/09/2064
बुध	21/01/2060	शनि	27/09/2061	गुरु	07/09/2062	राहु	23/11/2063	शुक्र	02/11/2064
शनि	27/02/2060	गुरु	30/01/2062	राहु	29/09/2062	शुक्र	01/03/2064	सूर्य	17/11/2064
गुरु	09/05/2060	राहु	19/04/2062	शुक्र	08/11/2062	सूर्य	29/03/2064	चंद्र	25/12/2064

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
25/12/2064		23/07/2066		25/11/2069		05/01/2072		15/09/2075	
23/07/2066		25/11/2069		05/01/2072		15/09/2075		05/10/2076	
बुध	25/03/2065	गुरु	22/02/2067	राहु	18/02/2070	शुक्र	23/09/2072	सूर्य	06/10/2075
शनि	17/05/2065	राहु	08/07/2067	शुक्र	18/07/2070	सूर्य	07/12/2072	चंद्र	29/11/2075
गुरु	27/08/2065	शुक्र	01/03/2068	सूर्य	30/08/2070	चंद्र	12/06/2073	मंगल	28/12/2075
राहु	29/10/2065	सूर्य	08/05/2068	चंद्र	15/12/2070	मंगल	20/09/2073	बुध	26/02/2076
शुक्र	18/02/2066	चंद्र	25/10/2068	मंगल	10/02/2071	बुध	21/04/2074	शनि	02/04/2076
सूर्य	22/03/2066	मंगल	23/01/2069	बुध	12/06/2071	शनि	24/08/2074	गुरु	09/06/2076
चंद्र	10/06/2066	बुध	03/08/2069	शनि	22/08/2071	गुरु	18/04/2075	राहु	22/07/2076
मंगल	23/07/2066	शनि	25/11/2069	गुरु	05/01/2072	राहु	15/09/2075	शुक्र	05/10/2076

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
05/10/2076		26/05/2079		21/10/2080		19/10/2083		22/07/2085	
26/05/2079		21/10/2080		19/10/2083		22/07/2085		21/11/2086	
चंद्र	15/02/2077	मंगल	03/07/2079	बुध	11/04/2081	शनि	17/12/2083	राहु	14/09/2085
मंगल	28/04/2077	बुध	22/09/2079	शनि	22/07/2081	गुरु	08/04/2084	शुक्र	18/12/2085
बुध	27/09/2077	शनि	09/11/2079	गुरु	30/01/2082	राहु	19/06/2084	सूर्य	14/01/2086
शनि	25/12/2077	गुरु	07/02/2080	राहु	31/05/2082	शुक्र	22/10/2084	चंद्र	23/03/2086
गुरु	12/06/2078	राहु	05/04/2080	शुक्र	29/12/2082	सूर्य	26/11/2084	मंगल	28/04/2086
राहु	27/09/2078	शुक्र	13/07/2080	सूर्य	28/02/2083	चंद्र	24/02/2085	बुध	14/07/2086
शुक्र	03/04/2079	सूर्य	11/08/2080	चंद्र	30/07/2083	मंगल	12/04/2085	शनि	28/08/2086
सूर्य	26/05/2079	चंद्र	21/10/2080	मंगल	19/10/2083	बुध	22/07/2085	गुरु	21/11/2086

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
21/11/2086		23/03/2089		21/11/2089		23/07/2091		12/06/2092	
23/03/2089		21/11/2089		23/07/2091		12/06/2092		02/05/2094	
शुक्र	06/05/2087	सूर्य	05/04/2089	चंद्र	14/02/2090	मंगल	16/08/2091	बुध	28/09/2092
सूर्य	22/06/2087	चंद्र	09/05/2089	मंगल	31/03/2090	बुध	06/10/2091	शनि	01/12/2092
चंद्र	19/10/2087	मंगल	27/05/2089	बुध	05/07/2090	शनि	05/11/2091	गुरु	01/04/2093
मंगल	21/12/2087	बुध	04/07/2089	शनि	30/08/2090	गुरु	01/01/2092	राहु	17/06/2093
बुध	03/05/2088	शनि	27/07/2089	गुरु	15/12/2090	राहु	06/02/2092	शुक्र	29/10/2093
शनि	21/07/2088	गुरु	08/09/2089	राहु	21/02/2091	शुक्र	09/04/2092	सूर्य	07/12/2093
गुरु	18/12/2088	राहु	05/10/2089	शुक्र	19/06/2091	सूर्य	27/04/2092	चंद्र	12/03/2094
राहु	23/03/2089	शुक्र	21/11/2089	सूर्य	23/07/2091	चंद्र	12/06/2092	मंगल	02/05/2094

राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
02/05/2094		12/06/2095		22/07/2097		23/08/2101		23/10/2102	
12/06/2095		22/07/2097		23/08/2101		23/10/2102		22/09/2105	
शनि	09/06/2094	गुरु	26/10/2095	शुक्र	08/05/2098	सूर्य	15/09/2101	चंद्र	20/03/2103
गुरु	19/08/2094	राहु	20/01/2096	सूर्य	30/07/2098	चंद्र	14/11/2101	मंगल	07/06/2103
राहु	04/10/2094	शुक्र	18/06/2096	चंद्र	22/02/2099	मंगल	15/12/2101	बुध	21/11/2103
शुक्र	21/12/2094	सूर्य	30/07/2096	मंगल	13/06/2099	बुध	20/02/2102	शनि	28/02/2104
सूर्य	13/01/2095	चंद्र	14/11/2096	बुध	03/02/2100	शनि	01/04/2102	गुरु	03/09/2104
चंद्र	10/03/2095	मंगल	11/01/2097	शनि	21/06/2100	गुरु	15/06/2102	राहु	30/12/2104
मंगल	09/04/2095	बुध	12/05/2097	गुरु	10/03/2101	राहु	01/08/2102	शुक्र	25/07/2105
बुध	12/06/2095	शनि	22/07/2097	राहु	23/08/2101	शुक्र	23/10/2102	सूर्य	22/09/2105

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 2 वर्ष 1 मास 8 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
05/05/2008		14/06/2010		14/06/2016		14/06/2023		14/06/2031	
14/06/2010		14/06/2016		14/06/2023		14/06/2031		14/06/2032	
	00/00/0000	उल्क	14/06/2011	सिद्ध	24/10/2017	संक	25/03/2025	मंग	25/06/2031
	00/00/0000	सिद्ध	13/08/2012	संक	15/05/2019	मंग	14/06/2025	पिंग	15/07/2031
	05/05/2008	संक	13/12/2013	मंग	25/07/2019	पिंग	23/11/2025	धांय	14/08/2031
संक	23/01/2009	मंग	12/02/2014	पिंग	14/12/2019	धांय	25/07/2026	भ्राम	24/09/2031
मंग	15/03/2009	पिंग	14/06/2014	धांय	14/07/2020	भ्राम	14/06/2027	भद्रि	14/11/2031
पिंग	24/06/2009	धांय	14/12/2014	भ्राम	24/04/2021	भद्रि	24/07/2028	उल्क	13/01/2032
धांय	23/11/2009	भ्राम	14/08/2015	भद्रि	14/04/2022	उल्क	23/11/2029	सिद्ध	24/03/2032
भ्राम	14/06/2010	भद्रि	14/06/2016	उल्क	14/06/2023	सिद्ध	14/06/2031	संक	14/06/2032

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
14/06/2032		14/06/2034		14/06/2037		14/06/2041		14/06/2046	
14/06/2034		14/06/2037		14/06/2041		14/06/2046		14/06/2052	
पिंग	24/07/2032	धांय	13/09/2034	भ्राम	23/11/2037	भद्रि	23/02/2042	उल्क	14/06/2047
धांय	23/09/2032	भ्राम	13/01/2035	भद्रि	14/06/2038	उल्क	24/12/2042	सिद्ध	13/08/2048
भ्राम	13/12/2032	भद्रि	14/06/2035	उल्क	13/02/2039	सिद्ध	14/12/2043	संक	13/12/2049
भद्रि	25/03/2033	उल्क	14/12/2035	सिद्ध	24/11/2039	संक	23/01/2045	मंग	12/02/2050
उल्क	24/07/2033	सिद्ध	14/07/2036	संक	13/10/2040	मंग	15/03/2045	पिंग	14/06/2050
सिद्ध	13/12/2033	संक	15/03/2037	मंग	23/11/2040	पिंग	24/06/2045	धांय	14/12/2050
संक	25/05/2034	मंग	14/04/2037	पिंग	12/02/2041	धांय	23/11/2045	भ्राम	14/08/2051
मंग	14/06/2034	पिंग	14/06/2037	धांय	14/06/2041	भ्राम	14/06/2046	भद्रि	14/06/2052

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
14/06/2052		14/06/2059		14/06/2067		14/06/2068		14/06/2070	
14/06/2059		14/06/2067		14/06/2068		14/06/2070		14/06/2073	
सिद्ध	24/10/2053	संक	25/03/2061	मंग	25/06/2067	पिंग	24/07/2068	धांय	13/09/2070
संक	15/05/2055	मंग	14/06/2061	पिंग	15/07/2067	धांय	23/09/2068	भ्राम	13/01/2071
मंग	25/07/2055	पिंग	23/11/2061	धांय	14/08/2067	भ्राम	13/12/2068	भद्रि	14/06/2071
पिंग	14/12/2055	धांय	25/07/2062	भ्राम	24/09/2067	भद्रि	25/03/2069	उल्क	14/12/2071
धांय	14/07/2056	भ्राम	14/06/2063	भद्रि	14/11/2067	उल्क	24/07/2069	सिद्ध	14/07/2072
भ्राम	24/04/2057	भद्रि	24/07/2064	उल्क	13/01/2068	सिद्ध	13/12/2069	संक	15/03/2073
भद्रि	14/04/2058	उल्क	23/11/2065	सिद्ध	24/03/2068	संक	25/05/2070	मंग	14/04/2073
उल्क	14/06/2059	सिद्ध	14/06/2067	संक	14/06/2068	मंग	14/06/2070	पिंग	14/06/2073

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
14/06/2073		14/06/2077		14/06/2082		14/06/2088		14/06/2095	
14/06/2077		14/06/2082		14/06/2088		14/06/2095		15/06/2103	
भ्राम	23/11/2073	भद्रि	23/02/2078	उल्क	14/06/2083	सिद्ध	24/10/2089	संक	25/03/2097
भद्रि	14/06/2074	उल्क	24/12/2078	सिद्ध	13/08/2084	संक	15/05/2091	मंग	14/06/2097
उल्क	13/02/2075	सिद्ध	14/12/2079	संक	13/12/2085	मंग	25/07/2091	पिंग	23/11/2097
सिद्ध	24/11/2075	संक	23/01/2081	मंग	12/02/2086	पिंग	14/12/2091	धांय	25/07/2098
संक	13/10/2076	मंग	15/03/2081	पिंग	14/06/2086	धांय	14/07/2092	भ्राम	14/06/2099
मंग	23/11/2076	पिंग	24/06/2081	धांय	14/12/2086	भ्राम	24/04/2093	भद्रि	25/07/2100
पिंग	12/02/2077	धांय	23/11/2081	भ्राम	14/08/2087	भद्रि	14/04/2094	उल्क	24/11/2101
धांय	14/06/2077	भ्राम	14/06/2082	भद्रि	14/06/2088	उल्क	14/06/2095	सिद्ध	15/06/2103

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
15/06/2103		15/06/2104		15/06/2106		15/06/2109		15/06/2113	
15/06/2104		15/06/2106		15/06/2109		15/06/2113		00/00/0000	
मंग	26/06/2103	पिंग	25/07/2104	धांय	14/09/2106	भ्राम	24/11/2109	भद्रि	24/02/2114
पिंग	16/07/2103	धांय	24/09/2104	भ्राम	14/01/2107	भद्रि	15/06/2110	उल्क	25/12/2114
धांय	15/08/2103	भ्राम	14/12/2104	भद्रि	15/06/2107	उल्क	14/02/2111	सिद्ध	15/12/2115
भ्राम	25/09/2103	भद्रि	26/03/2105	उल्क	15/12/2107	सिद्ध	25/11/2111	संक	06/05/2116
भद्रि	15/11/2103	उल्क	25/07/2105	सिद्ध	15/07/2108	संक	14/10/2112		00/00/0000
उल्क	14/01/2104	सिद्ध	14/12/2105	संक	16/03/2109	मंग	24/11/2112		00/00/0000
सिद्ध	25/03/2104	संक	26/05/2106	मंग	15/04/2109	पिंग	13/02/2113		00/00/0000
संक	15/06/2104	मंग	15/06/2106	पिंग	15/06/2109	धांय	15/06/2113		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध	
23/11/2025		25/07/2026		14/06/2027		24/07/2028		23/11/2029	
25/07/2026		14/06/2027		24/07/2028		23/11/2029		14/06/2031	
धांय	13/12/2025	भ्राम	30/08/2026	भद्रि	10/08/2027	उल्क	13/10/2028	सिद्ध	14/03/2030
भ्राम	10/01/2026	भद्रि	14/10/2026	उल्क	16/10/2027	सिद्ध	16/01/2029	संक	18/07/2030
भद्रि	12/02/2026	उल्क	07/12/2026	सिद्ध	03/01/2028	संक	04/05/2029	मंग	03/08/2030
उल्क	25/03/2026	सिद्ध	08/02/2027	संक	02/04/2028	मंग	18/05/2029	पिंग	03/09/2030
सिद्ध	11/05/2026	संक	21/04/2027	मंग	14/04/2028	पिंग	14/06/2029	धांय	21/10/2030
संक	04/07/2026	मंग	30/04/2027	पिंग	06/05/2028	धांय	24/07/2029	भ्राम	23/12/2030
मंग	11/07/2026	पिंग	18/05/2027	धांय	09/06/2028	भ्राम	17/09/2029	भद्रि	12/03/2031
पिंग	25/07/2026	धांय	14/06/2027	भ्राम	24/07/2028	भद्रि	23/11/2029	उल्क	14/06/2031

मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि	
14/06/2031		25/06/2031		15/07/2031		14/08/2031		24/09/2031	
25/06/2031		15/07/2031		14/08/2031		24/09/2031		14/11/2031	
मंग	15/06/2031	पिंग	26/06/2031	धांय	17/07/2031	भ्राम	19/08/2031	भद्रि	01/10/2031
पिंग	15/06/2031	धांय	27/06/2031	भ्राम	21/07/2031	भद्रि	24/08/2031	उल्क	09/10/2031
धांय	16/06/2031	भ्राम	30/06/2031	भद्रि	25/07/2031	उल्क	31/08/2031	सिद्ध	19/10/2031
भ्राम	17/06/2031	भद्रि	02/07/2031	उल्क	30/07/2031	सिद्ध	08/09/2031	संक	30/10/2031
भद्रि	19/06/2031	उल्क	06/07/2031	सिद्ध	05/08/2031	संक	17/09/2031	मंग	01/11/2031
उल्क	20/06/2031	सिद्ध	10/07/2031	संक	12/08/2031	मंग	18/09/2031	पिंग	04/11/2031
सिद्ध	22/06/2031	संक	14/07/2031	मंग	13/08/2031	पिंग	20/09/2031	धांय	08/11/2031
संक	25/06/2031	मंग	15/07/2031	पिंग	14/08/2031	धांय	24/09/2031	भ्राम	14/11/2031

मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय	
14/11/2031		13/01/2032		24/03/2032		14/06/2032		24/07/2032	
13/01/2032		24/03/2032		14/06/2032		24/07/2032		23/09/2032	
उल्क	24/11/2031	सिद्ध	27/01/2032	संक	11/04/2032	पिंग	16/06/2032	धांय	29/07/2032
सिद्ध	06/12/2031	संक	12/02/2032	मंग	14/04/2032	धांय	19/06/2032	भ्राम	05/08/2032
संक	19/12/2031	मंग	14/02/2032	पिंग	18/04/2032	भ्राम	24/06/2032	भद्रि	13/08/2032
मंग	21/12/2031	पिंग	18/02/2032	धांय	25/04/2032	भद्रि	29/06/2032	उल्क	24/08/2032
पिंग	24/12/2031	धांय	24/02/2032	भ्राम	04/05/2032	उल्क	06/07/2032	सिद्ध	04/09/2032
धांय	29/12/2031	भ्राम	03/03/2032	भद्रि	15/05/2032	सिद्ध	14/07/2032	संक	18/09/2032
भ्राम	05/01/2032	भद्रि	13/03/2032	उल्क	29/05/2032	संक	23/07/2032	मंग	20/09/2032
भद्रि	13/01/2032	उल्क	24/03/2032	सिद्ध	14/06/2032	मंग	24/07/2032	पिंग	23/09/2032

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक	
23/09/2032		13/12/2032		25/03/2033		24/07/2033		13/12/2033	
13/12/2032		25/03/2033		24/07/2033		13/12/2033		25/05/2034	
भ्राम	02/10/2032	भद्रि	27/12/2032	उल्क	14/04/2033	सिद्ध	21/08/2033	संक	19/01/2034
भद्रि	13/10/2032	उल्क	13/01/2033	सिद्ध	08/05/2033	संक	22/09/2033	मंग	23/01/2034
उल्क	27/10/2032	सिद्ध	02/02/2033	संक	04/06/2033	मंग	26/09/2033	पिंग	01/02/2034
सिद्ध	12/11/2032	संक	25/02/2033	मंग	07/06/2033	पिंग	03/10/2033	धांय	15/02/2034
संक	30/11/2032	मंग	27/02/2033	पिंग	14/06/2033	धांय	15/10/2033	भ्राम	05/03/2034
मंग	02/12/2032	पिंग	05/03/2033	धांय	24/06/2033	भ्राम	31/10/2033	भद्रि	27/03/2034
पिंग	06/12/2032	धांय	13/03/2033	भ्राम	08/07/2033	भद्रि	20/11/2033	उल्क	23/04/2034
धांय	13/12/2032	भ्राम	25/03/2033	भद्रि	24/07/2033	उल्क	13/12/2033	सिद्ध	25/05/2034

पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क	
25/05/2034		14/06/2034		13/09/2034		13/01/2035		14/06/2035	
14/06/2034		13/09/2034		13/01/2035		14/06/2035		14/12/2035	
मंग	25/05/2034	धांय	22/06/2034	भ्राम	27/09/2034	भद्रि	03/02/2035	उल्क	15/07/2035
पिंग	27/05/2034	भ्राम	02/07/2034	भद्रि	14/10/2034	उल्क	01/03/2035	सिद्ध	19/08/2035
धांय	28/05/2034	भद्रि	15/07/2034	उल्क	03/11/2034	सिद्ध	30/03/2035	संक	29/09/2035
भ्राम	30/05/2034	उल्क	30/07/2034	सिद्ध	27/11/2034	संक	03/05/2035	मंग	04/10/2035
भद्रि	02/06/2034	सिद्ध	17/08/2034	संक	24/12/2034	मंग	07/05/2035	पिंग	14/10/2035
उल्क	06/06/2034	संक	06/09/2034	मंग	27/12/2034	पिंग	16/05/2035	धांय	29/10/2035
सिद्ध	10/06/2034	मंग	08/09/2034	पिंग	03/01/2035	धांय	28/05/2035	भ्राम	19/11/2035
संक	14/06/2034	पिंग	13/09/2034	धांय	13/01/2035	भ्राम	14/06/2035	भद्रि	14/12/2035

धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम	
14/12/2035		14/07/2036		15/03/2037		14/04/2037		14/06/2037	
14/07/2036		15/03/2037		14/04/2037		14/06/2037		23/11/2037	
सिद्ध	24/01/2036	संक	06/09/2036	मंग	15/03/2037	पिंग	17/04/2037	भ्राम	02/07/2037
संक	12/03/2036	मंग	13/09/2036	पिंग	17/03/2037	धांय	22/04/2037	भद्रि	24/07/2037
मंग	18/03/2036	पिंग	26/09/2036	धांय	20/03/2037	भ्राम	29/04/2037	उल्क	21/08/2037
पिंग	30/03/2036	धांय	17/10/2036	भ्राम	23/03/2037	भद्रि	08/05/2037	सिद्ध	21/09/2037
धांय	16/04/2036	भ्राम	13/11/2036	भद्रि	27/03/2037	उल्क	18/05/2037	संक	27/10/2037
भ्राम	10/05/2036	भद्रि	17/12/2036	उल्क	01/04/2037	सिद्ध	30/05/2037	मंग	01/11/2037
भद्रि	09/06/2036	उल्क	26/01/2037	सिद्ध	07/04/2037	संक	12/06/2037	पिंग	10/11/2037
उल्क	14/07/2036	सिद्ध	15/03/2037	संक	14/04/2037	मंग	14/06/2037	धांय	23/11/2037

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : धनु 6 वर्ष 11 मास 17 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : भरणी - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
05/05/2008		23/04/2015		23/04/2019		23/04/2023		22/04/2033	
23/04/2015		23/04/2019		23/04/2023		22/04/2033		22/04/2040	
	00/00/0000	मक	02/07/2015	कुंभ	02/07/2019	मीन	06/07/2024	वृश्चि	24/11/2033
	00/00/0000	कुंभ	10/09/2015	मीन	25/12/2019	वृश्चि	10/05/2025	तुला	01/04/2035
	05/05/2008	मीन	04/03/2016	वृश्चि	26/04/2020	तुला	14/04/2027	कन्या	03/01/2036
मीन	05/09/2008	वृश्चि	06/07/2016	तुला	02/02/2021	कन्या	14/05/2028	तुला	10/05/2037
वृश्चि	10/07/2009	तुला	13/04/2017	कन्या	10/07/2021	तुला	18/04/2030	वृश्चि	11/12/2037
तुला	14/06/2011	कन्या	19/09/2017	तुला	18/04/2022	वृश्चि	20/02/2031	धनु	15/10/2038
कन्या	15/07/2012	तुला	27/06/2018	वृश्चि	19/08/2022	धनु	05/05/2032	मक	16/02/2039
तुला	19/06/2014	वृश्चि	29/10/2018	धनु	11/02/2023	मक	28/10/2032	कुंभ	19/06/2039
वृश्चि	23/04/2015	धनु	23/04/2019	मक	23/04/2023	कुंभ	22/04/2033	मीन	22/04/2040

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
22/04/2040		22/04/2056		22/04/2065		22/04/2081		22/04/2088	
22/04/2056		22/04/2065		22/04/2081		22/04/2088		00/00/0000	
तुला	23/05/2043	कन्या	13/04/2057	तुला	23/05/2068	वृश्चि	24/11/2081	धनु	06/07/2089
कन्या	15/02/2045	तुला	07/01/2059	वृश्चि	28/09/2069	धनु	28/09/2082	मक	29/12/2089
तुला	18/03/2048	वृश्चि	11/10/2059	धनु	02/09/2071	मक	29/01/2083	कुंभ	23/06/2090
वृश्चि	24/07/2049	धनु	10/11/2060	मक	09/06/2072	कुंभ	01/06/2083	मीन	06/05/2091
धनु	28/06/2051	मक	18/04/2061	कुंभ	18/03/2073	मीन	04/04/2084		00/00/0000
मक	04/04/2052	कुंभ	23/09/2061	मीन	20/02/2075	वृश्चि	06/11/2084		00/00/0000
कुंभ	11/01/2053	मीन	24/10/2062	वृश्चि	27/06/2076	तुला	14/03/2086		00/00/0000
मीन	16/12/2054	वृश्चि	28/07/2063	तुला	28/07/2079	कन्या	16/12/2086		00/00/0000
वृश्चि	22/04/2056	तुला	22/04/2065	कन्या	22/04/2081	तुला	22/04/2088		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - तुला		मीन - वृश्चि		मीन - धनु	
10/05/2025		14/04/2027		14/05/2028		18/04/2030		20/02/2031	
14/04/2027		14/05/2028		18/04/2030		20/02/2031		05/05/2032	
तुला	22/09/2025	कन्या	27/05/2027	तुला	27/09/2028	वृश्चि	14/05/2030	धनु	14/04/2031
कन्या	08/12/2025	तुला	11/08/2027	वृश्चि	25/11/2028	धनु	20/06/2030	मक	05/05/2031
तुला	23/04/2026	वृश्चि	14/09/2027	धनु	18/02/2029	मक	05/07/2030	कुंभ	26/05/2031
वृश्चि	21/06/2026	धनु	31/10/2027	मक	24/03/2029	कुंभ	20/07/2030	मीन	18/07/2031
धनु	14/09/2026	मक	19/11/2027	कुंभ	27/04/2029	मीन	26/08/2030	वृश्चि	25/08/2031
मक	18/10/2026	कुंभ	08/12/2027	मीन	21/07/2029	वृश्चि	21/09/2030	तुला	17/11/2031
कुंभ	21/11/2026	मीन	25/01/2028	वृश्चि	18/09/2029	तुला	19/11/2030	कन्या	04/01/2032
मीन	13/02/2027	वृश्चि	28/02/2028	तुला	01/02/2030	कन्या	23/12/2030	तुला	29/03/2032
वृश्चि	14/04/2027	तुला	14/05/2028	कन्या	18/04/2030	तुला	20/02/2031	वृश्चि	05/05/2032

मीन - मक		मीन - कुंभ		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या	
05/05/2032		28/10/2032		22/04/2033		24/11/2033		01/04/2035	
28/10/2032		22/04/2033		24/11/2033		01/04/2035		03/01/2036	
मक	14/05/2032	कुंभ	06/11/2032	वृश्चि	10/05/2033	तुला	27/02/2034	कन्या	01/05/2035
कुंभ	22/05/2032	मीन	27/11/2032	तुला	21/06/2033	कन्या	21/04/2034	तुला	23/06/2035
मीन	12/06/2032	वृश्चि	12/12/2032	कन्या	14/07/2033	तुला	25/07/2034	वृश्चि	17/07/2035
वृश्चि	27/06/2032	तुला	15/01/2033	तुला	25/08/2033	वृश्चि	05/09/2034	धनु	19/08/2035
तुला	31/07/2032	कन्या	03/02/2033	वृश्चि	12/09/2033	धनु	03/11/2034	मक	01/09/2035
कन्या	19/08/2032	तुला	09/03/2033	धनु	08/10/2033	मक	27/11/2034	कुंभ	15/09/2035
तुला	22/09/2032	वृश्चि	23/03/2033	मक	18/10/2033	कुंभ	21/12/2034	मीन	18/10/2035
वृश्चि	07/10/2032	धनु	14/04/2033	कुंभ	29/10/2033	मीन	18/02/2035	वृश्चि	10/11/2035
धनु	28/10/2032	मक	22/04/2033	मीन	24/11/2033	वृश्चि	01/04/2035	तुला	03/01/2036

वृश्चि - तुला		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - धनु		वृश्चि - मक		वृश्चि - कुंभ	
03/01/2036		10/05/2037		11/12/2037		15/10/2038		16/02/2039	
10/05/2037		11/12/2037		15/10/2038		16/02/2039		19/06/2039	
तुला	07/04/2036	वृश्चि	28/05/2037	धनु	17/01/2038	मक	21/10/2038	कुंभ	22/02/2039
वृश्चि	18/05/2036	धनु	23/06/2037	मक	01/02/2038	कुंभ	27/10/2038	मीन	08/03/2039
धनु	17/07/2036	मक	03/07/2037	कुंभ	16/02/2038	मीन	11/11/2038	वृश्चि	19/03/2039
मक	10/08/2036	कुंभ	14/07/2037	मीन	25/03/2038	वृश्चि	22/11/2038	तुला	12/04/2039
कुंभ	02/09/2036	मीन	09/08/2037	वृश्चि	20/04/2038	तुला	15/12/2038	कन्या	25/04/2039
मीन	01/11/2036	वृश्चि	27/08/2037	तुला	19/06/2038	कन्या	29/12/2038	तुला	19/05/2039
वृश्चि	12/12/2036	तुला	07/10/2037	कन्या	22/07/2038	तुला	21/01/2039	वृश्चि	29/05/2039
तुला	17/03/2037	कन्या	31/10/2037	तुला	19/09/2038	वृश्चि	01/02/2039	धनु	13/06/2039
कन्या	10/05/2037	तुला	11/12/2037	वृश्चि	15/10/2038	धनु	16/02/2039	मक	19/06/2039

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - मीन		तुला - तुला		तुला - कन्या		तुला - तुला		तुला - वृश्चि	
19/06/2039		22/04/2040		23/05/2043		15/02/2045		18/03/2048	
22/04/2040		23/05/2043		15/02/2045		18/03/2048		24/07/2049	
मीन	26/07/2039	तुला	25/11/2040	कन्या	31/07/2043	तुला	20/09/2045	वृश्चि	28/04/2048
वृश्चि	21/08/2039	कन्या	27/03/2041	तुला	30/11/2043	वृश्चि	24/12/2045	धनु	27/06/2048
तुला	19/10/2039	तुला	30/10/2041	वृश्चि	23/01/2044	धनु	09/05/2046	मक	20/07/2048
कन्या	22/11/2039	वृश्चि	02/02/2042	धनु	08/04/2044	मक	02/07/2046	कुंभ	13/08/2048
तुला	20/01/2040	धनु	18/06/2042	मक	09/05/2044	कुंभ	26/08/2046	मीन	12/10/2048
वृश्चि	15/02/2040	मक	11/08/2042	कुंभ	08/06/2044	मीन	08/01/2047	वृश्चि	22/11/2048
धनु	23/03/2040	कुंभ	05/10/2042	मीन	24/08/2044	वृश्चि	13/04/2047	तुला	25/02/2049
मक	07/04/2040	मीन	17/02/2043	वृश्चि	16/10/2044	तुला	17/11/2047	कन्या	20/04/2049
कुंभ	22/04/2040	वृश्चि	23/05/2043	तुला	15/02/2045	कन्या	18/03/2048	तुला	24/07/2049

तुला - धनु		तुला - मक		तुला - कुंभ		तुला - मीन		तुला - वृश्चि	
24/07/2049		28/06/2051		04/04/2052		11/01/2053		16/12/2054	
28/06/2051		04/04/2052		11/01/2053		16/12/2054		22/04/2056	
धनु	16/10/2049	मक	11/07/2051	कुंभ	18/04/2052	मीन	06/04/2053	वृश्चि	27/01/2055
मक	19/11/2049	कुंभ	25/07/2051	मीन	22/05/2052	वृश्चि	04/06/2053	तुला	02/05/2055
कुंभ	23/12/2049	मीन	28/08/2051	वृश्चि	15/06/2052	तुला	18/10/2053	कन्या	24/06/2055
मीन	18/03/2050	वृश्चि	20/09/2051	तुला	08/08/2052	कन्या	02/01/2054	तुला	27/09/2055
वृश्चि	16/05/2050	तुला	14/11/2051	कन्या	07/09/2052	तुला	18/05/2054	वृश्चि	08/11/2055
तुला	29/09/2050	कन्या	14/12/2051	तुला	01/11/2052	वृश्चि	16/07/2054	धनु	06/01/2056
कन्या	15/12/2050	तुला	07/02/2052	वृश्चि	24/11/2052	धनु	09/10/2054	मक	30/01/2056
तुला	29/04/2051	वृश्चि	01/03/2052	धनु	28/12/2052	मक	12/11/2054	कुंभ	23/02/2056
वृश्चि	28/06/2051	धनु	04/04/2052	मक	11/01/2053	कुंभ	16/12/2054	मीन	22/04/2056

कन्या - कन्या		कन्या - तुला		कन्या - वृश्चि		कन्या - धनु		कन्या - मक	
22/04/2056		13/04/2057		07/01/2059		11/10/2059		10/11/2060	
13/04/2057		07/01/2059		11/10/2059		10/11/2060		18/04/2061	
कन्या	31/05/2056	तुला	13/08/2057	वृश्चि	30/01/2059	धनु	28/11/2059	मक	18/11/2060
तुला	07/08/2056	वृश्चि	06/10/2057	धनु	05/03/2059	मक	17/12/2059	कुंभ	26/11/2060
वृश्चि	06/09/2056	धनु	21/12/2057	मक	18/03/2059	कुंभ	05/01/2060	मीन	15/12/2060
धनु	19/10/2056	मक	21/01/2058	कुंभ	01/04/2059	मीन	22/02/2060	वृश्चि	28/12/2060
मक	05/11/2056	कुंभ	20/02/2058	मीन	04/05/2059	वृश्चि	26/03/2060	तुला	28/01/2061
कुंभ	23/11/2056	मीन	08/05/2058	वृश्चि	27/05/2059	तुला	11/06/2060	कन्या	14/02/2061
मीन	05/01/2057	वृश्चि	30/06/2058	तुला	20/07/2059	कन्या	24/07/2060	तुला	16/03/2061
वृश्चि	04/02/2057	तुला	30/10/2058	कन्या	19/08/2059	तुला	08/10/2060	वृश्चि	30/03/2061
तुला	13/04/2057	कन्या	07/01/2059	तुला	11/10/2059	वृश्चि	10/11/2060	धनु	18/04/2061

चर दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 4 वर्ष 0 मास 0 दिन

कन्या 4 वर्ष	
05/05/2008	
05/05/2012	
तुला	04/09/2008
वृश्चि	04/01/2009
धनु	05/05/2009
मक	04/09/2009
कुंभ	04/01/2010
मीन	06/05/2010
मेष	04/09/2010
वृष	04/01/2011
मिथु	06/05/2011
कर्क	05/09/2011
सिंह	04/01/2012
कन्या	05/05/2012

तुला 6 वर्ष	
05/05/2012	
06/05/2018	
वृश्चि	04/11/2012
धनु	05/05/2013
मक	04/11/2013
कुंभ	06/05/2014
मीन	04/11/2014
मेष	06/05/2015
वृष	05/11/2015
मिथु	05/05/2016
कर्क	04/11/2016
सिंह	05/05/2017
कन्या	04/11/2017
तुला	06/05/2018

वृश्चिक 9 वर्ष	
06/05/2018	
06/05/2027	
तुला	04/02/2019
कन्या	05/11/2019
सिंह	05/08/2020
कर्क	05/05/2021
मिथु	03/02/2022
वृष	04/11/2022
मेष	05/08/2023
मीन	05/05/2024
कुंभ	03/02/2025
मक	04/11/2025
धनु	05/08/2026
वृश्चि	06/05/2027

धनु 12 वर्ष	
06/05/2027	
06/05/2039	
वृश्चि	05/05/2028
तुला	05/05/2029
कन्या	06/05/2030
सिंह	06/05/2031
कर्क	05/05/2032
मिथु	05/05/2033
वृष	06/05/2034
मेष	06/05/2035
मीन	05/05/2036
कुंभ	05/05/2037
मक	06/05/2038
धनु	06/05/2039

मकर 5 वर्ष	
06/05/2039	
05/05/2044	
धनु	05/10/2039
वृश्चि	05/03/2040
तुला	05/08/2040
कन्या	04/01/2041
सिंह	05/06/2041
कर्क	04/11/2041
मिथु	05/04/2042
वृष	04/09/2042
मेष	04/02/2043
मीन	06/07/2043
कुंभ	05/12/2043
मक	05/05/2044

कुम्भ 6 वर्ष	
05/05/2044	
06/05/2050	
मीन	04/11/2044
मेष	05/05/2045
वृष	04/11/2045
मिथु	06/05/2046
कर्क	04/11/2046
सिंह	06/05/2047
कन्या	05/11/2047
तुला	05/05/2048
वृश्चि	04/11/2048
धनु	05/05/2049
मक	04/11/2049
कुंभ	06/05/2050

मीन 3 वर्ष	
06/05/2050	
05/05/2053	
मेष	05/08/2050
वृष	04/11/2050
मिथु	04/02/2051
कर्क	06/05/2051
सिंह	05/08/2051
कन्या	05/11/2051
तुला	04/02/2052
वृश्चि	05/05/2052
धनु	05/08/2052
मक	04/11/2052
कुंभ	03/02/2053
मीन	05/05/2053

मेष 3 वर्ष	
05/05/2053	
05/05/2056	
वृष	05/08/2053
मिथु	04/11/2053
कर्क	03/02/2054
सिंह	06/05/2054
कन्या	05/08/2054
तुला	04/11/2054
वृश्चि	04/02/2055
धनु	06/05/2055
मक	05/08/2055
कुंभ	05/11/2055
मीन	04/02/2056
मेष	05/05/2056

वृष 11 वर्ष	
05/05/2056	
06/05/2067	
मेष	05/04/2057
मीन	06/03/2058
कुंभ	04/02/2059
मक	04/01/2060
धनु	04/12/2060
वृश्चि	04/11/2061
तुला	05/10/2062
कन्या	05/09/2063
सिंह	05/08/2064
कर्क	05/07/2065
मिथु	05/06/2066
वृष	06/05/2067

मिथुन 11 वर्ष	
06/05/2067	
06/05/2078	
वृष	05/04/2068
मेष	06/03/2069
मीन	03/02/2070
कुंभ	04/01/2071
मक	05/12/2071
धनु	04/11/2072
वृश्चि	05/10/2073
तुला	04/09/2074
कन्या	05/08/2075
सिंह	05/07/2076
कर्क	05/06/2077
मिथु	06/05/2078

कर्क 3 वर्ष	
06/05/2078	
05/05/2081	
मिथु	05/08/2078
वृष	04/11/2078
मेष	04/02/2079
मीन	06/05/2079
कुंभ	05/08/2079
मक	05/11/2079
धनु	04/02/2080
वृश्चि	05/05/2080
तुला	05/08/2080
कन्या	04/11/2080
सिंह	03/02/2081
कर्क	05/05/2081

सिंह 4 वर्ष	
05/05/2081	
05/05/2085	
कन्या	04/09/2081
तुला	04/01/2082
वृश्चि	06/05/2082
धनु	04/09/2082
मक	04/01/2083
कुंभ	06/05/2083
मीन	05/09/2083
मेष	04/01/2084
वृष	05/05/2084
मिथु	04/09/2084
कर्क	04/01/2085
सिंह	05/05/2085

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - धनु		वृश्चि - वृश्चि		धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या	
04/11/2025		05/08/2026		06/05/2027		05/05/2028		05/05/2029	
05/08/2026		06/05/2027		05/05/2028		05/05/2029		06/05/2030	
वृश्चि	27/11/2025	तुला	28/08/2026	तुला	05/06/2027	वृश्चि	05/06/2028	तुला	05/06/2029
तुला	20/12/2025	कन्या	20/09/2026	कन्या	06/07/2027	धनु	05/07/2028	वृश्चि	05/07/2029
कन्या	12/01/2026	सिंह	13/10/2026	सिंह	05/08/2027	मक	05/08/2028	धनु	05/08/2029
सिंह	03/02/2026	कर्क	04/11/2026	कर्क	05/09/2027	कुंभ	04/09/2028	मक	04/09/2029
कर्क	26/02/2026	मिथु	27/11/2026	मिथु	05/10/2027	मीन	04/10/2028	कुंभ	05/10/2029
मिथु	21/03/2026	वृष	20/12/2026	वृष	05/11/2027	मेष	04/11/2028	मीन	04/11/2029
वृष	13/04/2026	मेष	12/01/2027	मेष	05/12/2027	वृष	04/12/2028	मेष	05/12/2029
मेष	06/05/2026	मीन	04/02/2027	मीन	04/01/2028	मिथु	04/01/2029	वृष	04/01/2030
मीन	29/05/2026	कुंभ	26/02/2027	कुंभ	04/02/2028	कर्क	03/02/2029	मिथु	03/02/2030
कुंभ	20/06/2026	मक	21/03/2027	मक	05/03/2028	सिंह	06/03/2029	कर्क	06/03/2030
मक	13/07/2026	धनु	13/04/2027	धनु	05/04/2028	कन्या	05/04/2029	सिंह	05/04/2030
धनु	05/08/2026	वृश्चि	06/05/2027	वृश्चि	05/05/2028	तुला	05/05/2029	कन्या	06/05/2030

धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष	
06/05/2030		06/05/2031		05/05/2032		05/05/2033		06/05/2034	
06/05/2031		05/05/2032		05/05/2033		06/05/2034		06/05/2035	
कन्या	05/06/2030	मिथु	05/06/2031	वृष	05/06/2032	मेष	05/06/2033	वृष	05/06/2034
तुला	06/07/2030	वृष	06/07/2031	मेष	05/07/2032	मीन	05/07/2033	मिथु	06/07/2034
वृश्चि	05/08/2030	मेष	05/08/2031	मीन	05/08/2032	कुंभ	05/08/2033	कर्क	05/08/2034
धनु	04/09/2030	मीन	05/09/2031	कुंभ	04/09/2032	मक	04/09/2033	सिंह	04/09/2034
मक	05/10/2030	कुंभ	05/10/2031	मक	04/10/2032	धनु	05/10/2033	कन्या	05/10/2034
कुंभ	04/11/2030	मक	05/11/2031	धनु	04/11/2032	वृश्चि	04/11/2033	तुला	04/11/2034
मीन	05/12/2030	धनु	05/12/2031	वृश्चि	04/12/2032	तुला	05/12/2033	वृश्चि	05/12/2034
मेष	04/01/2031	वृश्चि	04/01/2032	तुला	04/01/2033	कन्या	04/01/2034	धनु	04/01/2035
वृष	04/02/2031	तुला	04/02/2032	कन्या	03/02/2033	सिंह	03/02/2034	मक	04/02/2035
मिथु	06/03/2031	कन्या	05/03/2032	सिंह	06/03/2033	कर्क	06/03/2034	कुंभ	06/03/2035
कर्क	06/04/2031	सिंह	05/04/2032	कर्क	05/04/2033	मिथु	05/04/2034	मीन	06/04/2035
सिंह	06/05/2031	कर्क	05/05/2032	मिथु	05/05/2033	वृष	06/05/2034	मेष	06/05/2035

धनु - मीन		धनु - कुंभ		धनु - मक		धनु - धनु		मक - धनु	
06/05/2035		05/05/2036		05/05/2037		06/05/2038		06/05/2039	
05/05/2036		05/05/2037		06/05/2038		06/05/2039		05/10/2039	
मेष	05/06/2035	मीन	05/06/2036	धनु	05/06/2037	वृश्चि	05/06/2038	वृश्चि	19/05/2039
वृष	06/07/2035	मेष	05/07/2036	वृश्चि	05/07/2037	तुला	06/07/2038	तुला	31/05/2039
मिथु	05/08/2035	वृष	05/08/2036	तुला	05/08/2037	कन्या	05/08/2038	कन्या	13/06/2039
कर्क	05/09/2035	मिथु	04/09/2036	कन्या	04/09/2037	सिंह	04/09/2038	सिंह	26/06/2039
सिंह	05/10/2035	कर्क	04/10/2036	सिंह	05/10/2037	कर्क	05/10/2038	कर्क	08/07/2039
कन्या	05/11/2035	सिंह	04/11/2036	कर्क	04/11/2037	मिथु	04/11/2038	मिथु	21/07/2039
तुला	05/12/2035	कन्या	04/12/2036	मिथु	05/12/2037	वृष	05/12/2038	वृष	03/08/2039
वृश्चि	04/01/2036	तुला	04/01/2037	वृष	04/01/2038	मेष	04/01/2039	मेष	15/08/2039
धनु	04/02/2036	वृश्चि	03/02/2037	मेष	03/02/2038	मीन	04/02/2039	मीन	28/08/2039
मक	05/03/2036	धनु	06/03/2037	मीन	06/03/2038	कुंभ	06/03/2039	कुंभ	10/09/2039
कुंभ	05/04/2036	मक	05/04/2037	कुंभ	05/04/2038	मक	06/04/2039	मक	22/09/2039
मीन	05/05/2036	कुंभ	05/05/2037	मक	06/05/2038	धनु	06/05/2039	धनु	05/10/2039

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चर दशा - प्रत्यन्तर

मक - वृश्चि		मक - तुला		मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क	
05/10/2039		05/03/2040		05/08/2040		04/01/2041		05/06/2041	
05/03/2040		05/08/2040		04/01/2041		05/06/2041		04/11/2041	
तुला	18/10/2039	वृश्चि	18/03/2040	तुला	17/08/2040	कन्या	16/01/2041	मिथु	18/06/2041
कन्या	31/10/2039	धनु	31/03/2040	वृश्चि	30/08/2040	तुला	29/01/2041	वृष	30/06/2041
सिंह	12/11/2039	मक	12/04/2040	धनु	12/09/2040	वृश्चि	11/02/2041	मेष	13/07/2041
कर्क	25/11/2039	कुंभ	25/04/2040	मक	24/09/2040	धनु	23/02/2041	मीन	26/07/2041
मिथु	08/12/2039	मीन	08/05/2040	कुंभ	07/10/2040	मक	08/03/2041	कुंभ	07/08/2041
वृष	20/12/2039	मेष	20/05/2040	मीन	20/10/2040	कुंभ	21/03/2041	मक	20/08/2041
मेष	02/01/2040	वृष	02/06/2040	मेष	01/11/2040	मीन	02/04/2041	धनु	02/09/2041
मीन	15/01/2040	मिथु	15/06/2040	वृष	14/11/2040	मेष	15/04/2041	वृश्चि	14/09/2041
कुंभ	27/01/2040	कर्क	27/06/2040	मिथु	27/11/2040	वृष	28/04/2041	तुला	27/09/2041
मक	09/02/2040	सिंह	10/07/2040	कर्क	09/12/2040	मिथु	11/05/2041	कन्या	10/10/2041
धनु	22/02/2040	कन्या	23/07/2040	सिंह	22/12/2040	कर्क	23/05/2041	सिंह	22/10/2041
वृश्चि	05/03/2040	तुला	05/08/2040	कन्या	04/01/2041	सिंह	05/06/2041	कर्क	04/11/2041

मक - मिथु		मक - वृष		मक - मेष		मक - मीन		मक - कुंभ	
04/11/2041		05/04/2042		04/09/2042		04/02/2043		06/07/2043	
05/04/2042		04/09/2042		04/02/2043		06/07/2043		05/12/2043	
वृष	17/11/2041	मेष	18/04/2042	वृष	17/09/2042	मेष	16/02/2043	मीन	19/07/2043
मेष	29/11/2041	मीन	01/05/2042	मिथु	30/09/2042	वृष	01/03/2043	मेष	31/07/2043
मीन	12/12/2041	कुंभ	13/05/2042	कर्क	13/10/2042	मिथु	14/03/2043	वृष	13/08/2043
कुंभ	25/12/2041	मक	26/05/2042	सिंह	25/10/2042	कर्क	26/03/2043	मिथु	26/08/2043
मक	07/01/2042	धनु	08/06/2042	कन्या	07/11/2042	सिंह	08/04/2043	कर्क	07/09/2043
धनु	19/01/2042	वृश्चि	20/06/2042	तुला	20/11/2042	कन्या	21/04/2043	सिंह	20/09/2043
वृश्चि	01/02/2042	तुला	03/07/2042	वृश्चि	02/12/2042	तुला	03/05/2043	कन्या	03/10/2043
तुला	14/02/2042	कन्या	16/07/2042	धनु	15/12/2042	वृश्चि	16/05/2043	तुला	15/10/2043
कन्या	26/02/2042	सिंह	28/07/2042	मक	28/12/2042	धनु	29/05/2043	वृश्चि	28/10/2043
सिंह	11/03/2042	कर्क	10/08/2042	कुंभ	09/01/2043	मक	10/06/2043	धनु	10/11/2043
कर्क	24/03/2042	मिथु	23/08/2042	मीन	22/01/2043	कुंभ	23/06/2043	मक	22/11/2043
मिथु	05/04/2042	वृष	04/09/2042	मेष	04/02/2043	मीन	06/07/2043	कुंभ	05/12/2043

मक - मक		कुंभ - मीन		कुंभ - मेष		कुंभ - वृष		कुंभ - मिथु	
05/12/2043		05/05/2044		04/11/2044		05/05/2045		04/11/2045	
05/05/2044		04/11/2044		05/05/2045		04/11/2045		06/05/2046	
धनु	18/12/2043	मेष	20/05/2044	वृष	19/11/2044	मेष	21/05/2045	वृष	19/11/2045
वृश्चि	30/12/2043	वृष	05/06/2044	मिथु	04/12/2044	मीन	05/06/2045	मेष	05/12/2045
तुला	12/01/2044	मिथु	20/06/2044	कर्क	20/12/2044	कुंभ	20/06/2045	मीन	20/12/2045
कन्या	25/01/2044	कर्क	05/07/2044	सिंह	04/01/2045	मक	05/07/2045	कुंभ	04/01/2046
सिंह	06/02/2044	सिंह	20/07/2044	कन्या	19/01/2045	धनु	21/07/2045	मक	19/01/2046
कर्क	19/02/2044	कन्या	05/08/2044	तुला	03/02/2045	वृश्चि	05/08/2045	धनु	03/02/2046
मिथु	03/03/2044	तुला	20/08/2044	वृश्चि	18/02/2045	तुला	20/08/2045	वृश्चि	19/02/2046
वृष	15/03/2044	वृश्चि	04/09/2044	धनु	06/03/2045	कन्या	04/09/2045	तुला	06/03/2046
मेष	28/03/2044	धनु	19/09/2044	मक	21/03/2045	सिंह	19/09/2045	कन्या	21/03/2046
मीन	10/04/2044	मक	04/10/2044	कुंभ	05/04/2045	कर्क	05/10/2045	सिंह	05/04/2046
कुंभ	23/04/2044	कुंभ	20/10/2044	मीन	20/04/2045	मिथु	20/10/2045	कर्क	21/04/2046
मक	05/05/2044	मीन	04/11/2044	मेष	05/05/2045	वृष	04/11/2045	मिथु	06/05/2046

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 9, 2
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	62%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	61%	सुख, दम्पति
नीलम	शनि	44%	व्यय, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
मोती	चंद्र	16%	दुर्घटना, हानि
गोमेद	राहु	3%	शत्रु व रोग, व्यय
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, दुर्घटना

रत्न की शुभता

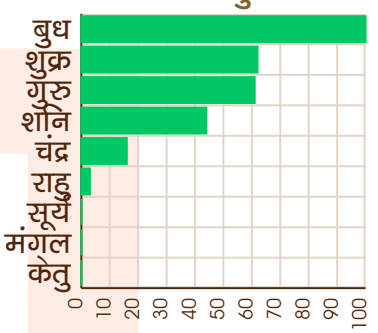

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	10/10/2016	0%	0%	0%	100%	61%	75%	53%	16%	0%
सूर्य	10/10/2022	0%	28%	0%	100%	67%	50%	19%	0%	0%
चंद्र	10/10/2032	0%	41%	0%	100%	61%	62%	44%	0%	0%
मंगल	11/10/2039	0%	28%	6%	100%	67%	62%	44%	0%	0%
राहु	10/10/2057	0%	0%	0%	100%	61%	69%	53%	28%	0%
गुरु	10/10/2073	0%	28%	0%	100%	73%	50%	44%	3%	0%
शनि	10/10/2092	0%	0%	0%	100%	61%	69%	59%	16%	0%
बुध	11/10/2109	0%	0%	0%	100%	61%	69%	44%	3%	0%
केतु	11/10/2116	0%	0%	0%	100%	61%	69%	19%	0%	6%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए हीरा एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती, गोमेद, माणिक्य, मूंगा व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण से आप बुद्धिमानी से संपति की प्राप्ति करेंगे। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठजनों का सहयोग प्राप्त होगा। यह रत्न आपको महत्वाकांक्षी और शुभकर्म करने वाला बनायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आप यशस्वी और अपने समाज के माननीय व्यक्तियों में गिने जायेंगे। पुखराज आपको उद्यमी कार्यरत और उद्योगी बनायेगा। आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। आपको राजकीय या सरकार द्वारा प्रदत्त घर की प्राप्ति होगी। आप गुरु भक्ति को महत्व देंगे। माता का सुख-स्नेह मिलेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु चतुर्थेश का पुखराज रत्न धारण करने से आपको सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। पुखराज रत्न आपको धार्मिक और संस्कारी जीवन साथी दे सकता है। यह रत्न चतुर्थ भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण आपको संपत्ति व माता सुख, विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष को सुखी रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। गुरु रत्न पुखराज आपको धनी, भाग्य व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दिला सकता है। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान

अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम आपको असंतोषी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आपका व्यक्तिगत विकास बाधित हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर हो सकता है कि आपको जीवन के मूल उद्देश्य की प्राप्ति न हों। इसका एक कारण आपके जीवन उद्देश्यों का अत्यंत दुष्कर होना भी हो सकता है। यह रत्न धारण कर आप वकालत एवं धर्म क्षेत्र में अनुकूल आय एवं सम्मान प्राप्त नहीं कर पायें। रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर और रुखे हो सकते है। नियमों और सिद्धान्तों का सख्ती से पालने कराने के कारण आपका परिवार आपसे कुछ भयभीत भी रहेगा। शनि रत्न नीलम आपको कुंसंगति का शिकार बना सकता है। कुटुंब से आपके संबंध प्रभावित होकर मधुरता में कमी ला सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। षष्ठेश शनि का रत्न नीलम आपके रोगों को प्रभावी कर सकता है। नीलम रत्न आपके रोग, ऋण और सेवा भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। स्वास्थ्य की अनियमितता भी यह रत्न आपको दे सकता है। शत्रु वृद्धि के कारण आप अपनी ऊर्जा शक्ति सकारात्मक कार्यों में नहीं लगा पाएंगे। छठे भाव का रत्न आपको जीवन में अर्थ की कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप नौकरी क्षेत्र में लगाए रखेगा। इसके कारण आपको व्यापार आदि कार्यों से दूर रहना पड़ सकता है। नीलम रत्न आपमें सदभाव और स्नेह की कमी कर सकता है। अधिक मेहनत के कार्यों में आपको रुचि की कमी हो सकती है। नीलम रत्न आपमें आलस्य भाव भी दे सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है।

मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार कर सकता है। प्रतियोगिताओ में सफल होने के लिए आप कुमार्ग का प्रयोग कर सकते है। विपरीत धर्म के लोगों से आपकी मित्रता संबंध बढ़ सकते है। यह मित्रता आपको लाभ भी दे सकती है। रोग और आयु पक्ष के लिए गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको बड़े बड़े कामों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव से आपको रोग, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करना होगा। ऊपरी बाधाओं या कोई रहस्यमयी बीमारियों के प्रभाव में आप आ सकते है। गोमेद रत्न धारण से आपको मामा, मौसी या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त होगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते है। ह्रदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते है। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी

बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्ति के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती है। आपके बड़े भाई बहन वादि-ववाद में सम्मिलित हो सकते है। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते है। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वादि-ववाद का कारण बन सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आप अलौकिक विद्याओं की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के लिए आप जीवन के दायित्वों से पीछे हट सकते है। आपकी सोच में नकारात्मकता का भाव प्रभावी हो सकता है। यह रत्न आपको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। संतान सुख और धन दोनों पक्ष के लिए रत्न की प्रतिकूलता हो सकती है। यह रत्न विदेश स्थानों में मिलने वाली आपकी सफलता को सीमित कर सकता है। आपके रोग बढ़ सकते है। ऋणों का भुगतान आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त रत्न प्रभाव से आपके शत्रुओं में बढ़ोतरी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके साहस में कमी करेगा।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य आठवें भाव में स्थित है। अतः

लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र
(10/10/2022 - 10/10/2032)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, मूंगा, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(10/10/2032 - 11/10/2039)

मंगल की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, माणिक्य, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(11/10/2039 - 10/10/2057)

राहु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन

शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/10/2057 - 10/10/2073)

गुरु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/10/2073 - 10/10/2092)

शनि की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, माणिक्य, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(10/10/2092 - 11/10/2109)

बुध की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य, मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक

कर सकते हैं।

केतु
(11/10/2109 - 11/10/2116)

केतु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, लहसुनिया, माणिक्य, मोती, मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शुक्र - 10/10/2016

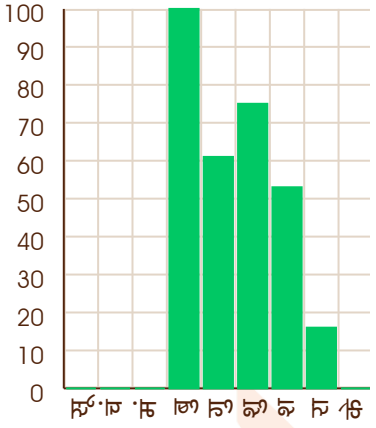

सूर्य - 10/10/2022

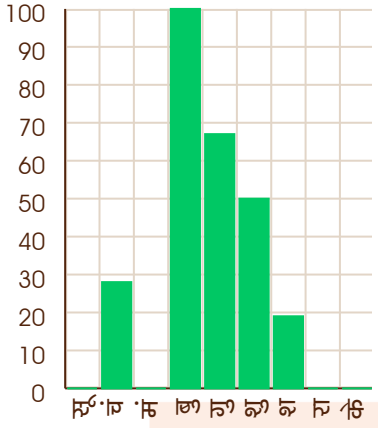

चन्द्र - 10/10/2032

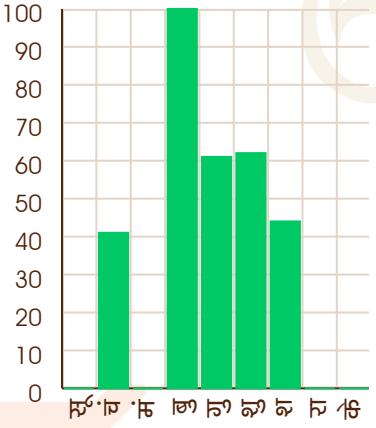

मंगल - 11/10/2039

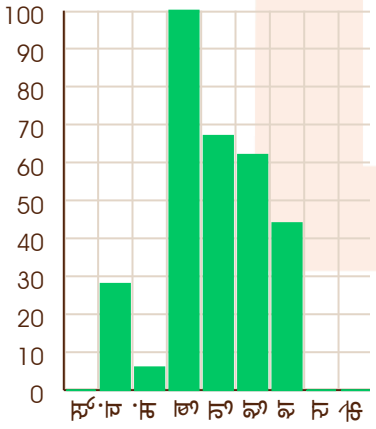

राहु - 10/10/2057

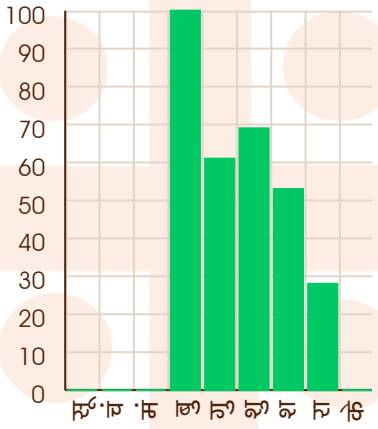

गुरु - 10/10/2073

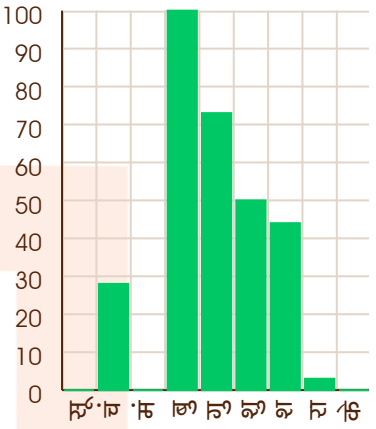

शनि - 10/10/2092

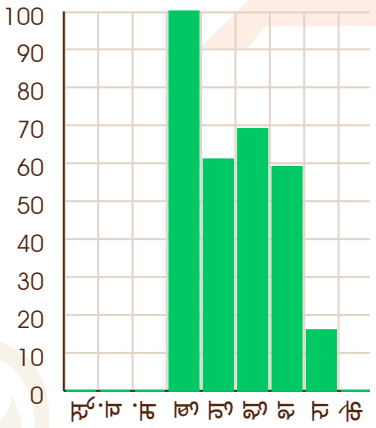

बुध - 11/10/2109

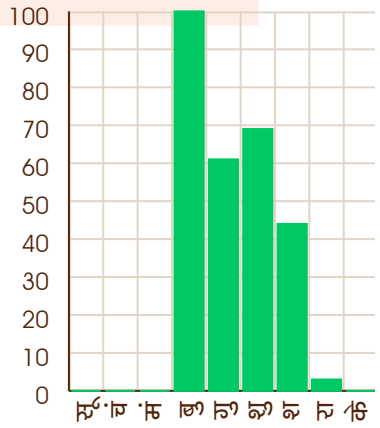

केतु - 11/10/2116

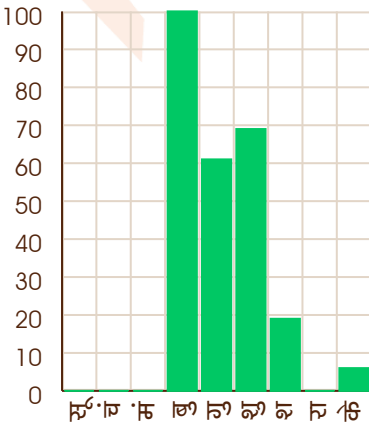

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता हैं। मगर इन संघषों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा हैं।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा हैं। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते है।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते है, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते है। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। लेकिन शास्त्रानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो जाता है इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा इसके शुभ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में अधिकांश रूप से सुखोपभोग की सामग्री से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह सुखद वातावरण में सम्पन्न हो जाएगा। विवाहोपरान्त अपनी पत्नी से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य भी सामान्यतया अच्छा ही रहेगा जिससे कोई अनावश्यक व्यवधान या समस्या दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न नहीं होगी।

चन्द्र कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप सम्पत्ति या जायदाद को भी प्राप्त करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव रहेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य में पूर्ण उन्नति करने में सफल रहेंगे। समाज में मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि आपकी आय साधनों में नित्य उन्नति दायक रहेगी। जिसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। अतः सभी प्रकार से सुख सम्पन्न रहकर आप का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या किसी ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करेंगे तो आप जीवन में भाग्यशाली पुरुष होकर समस्त भौतिक सुख संसाधनों धन वैभव तथा मान सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके परस्पर संबंधों मे भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा तथा किसी भी प्रकार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की चन्द्र कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही न हो क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आप सुख संसाधनों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करेंगे जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा फलतः इससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। अन्य भावों में मंगल रहने से उसका प्रभाव शुभ रहेगा जिससे जीवन में अनावश्यक कष्ट तथा परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। इससे आपका दाम्पत्य जीवन शान्त तथा सुखी रहेगा एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना सांसारिक, सामाजिक तथा परिवारिक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक निर्णय करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय -समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगे।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा।

मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 2 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है तथा मूलांक 5 और भाग्यांक 2 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश आपकी कल्पना शक्ति उच्च कोटि की व्यावसायिकता लिए रहेगी। मूलांक और भाग्यांक में शत्रु संबंध होने से आपको कभी-कभी विरोधाभासों का भी सामना करना पड़ेगा।

कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी भाग्यांक, तो कभी इनमें से एकाध अशुभ फल भी प्रदान करेगा। आपकी तर्क शक्ति उन्नत किस्म की रहेगी। आप शारीरिक श्रम की अपेक्षा बौद्धिक श्रम के द्वारा धनार्जन करेंगें एवं अपने जीवन में काफी मात्रा में सुख-संपदा प्राप्त करेंगे। आपके लिए नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अथवा वाणिज्यिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर अधिक रहेंगे। आपको चाहिए कि आप व्यापारिक संस्थानों से भरपूर लाभ प्राप्त करें। सामाजिक क्षेत्र में आपकी स्थिति उत्तम रहेगी एवं स्वबुद्धि के द्वारा आप उच्च कोटि की सफलता अर्जित करेंगे। आपके पास धन आता-जाता रहेगा, लेकिन धन के अभाव में कभी भी आपके कार्य रुकेंगे नहीं। आपका भाग्य मध्यम श्रेणी में उच्च कोटि का रहेगा।

आपका भाग्योदय 29 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 38 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 47 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की 3 एवं 9 से मित्रता है तथा भाग्यांक 2 की 7 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 5, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष, या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितंबर माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 5, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 5, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक होंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68

7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें आपके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी। इन तारीखों में आपके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहेगा।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना आपके लिए प्रतिकूल है। अतः आप इन तिथियों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार-व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपके सफल मित्र साबित होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

कोई भी महिला जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से आप स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक के अनुसार आपके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये आपके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहेंगे। हो सके तो आप इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि आप अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

शुभ वाहन नं

अगर आप स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। आपका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः आपके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। आपके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तभी आपके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा आप चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत कर के, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे आप सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्री लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगी तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगी। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र – ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधवार के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्रा, पफल, षट्रास भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में कन्या लग्नोदय काल हुआ था। लग्नोदय के साथ-साथ कन्या का नवमांश एवं वृषम लग्न का भी उदय आपके जन्मकाल ही हुआ था। कन्या तथा वृष राशि के संयोजन से यह स्पष्ट हो रहा है कि यह सभी संयोग आपके अनुकूल है। आपके जन्म का प्रभाव यह भी निश्चित करता है कि आपकी अभिलाषा के अनुरूप आपका जीवन आरामदेह, फलदायी एवं आनन्द प्रियता के साथ व्यतीत हो सकता है।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक है। आपकी उन्नत और चौड़ी ललाट तथा प्रभावशाली आंखे आपको सुव्यवस्थित बनाएगा तथा आपके सम्पर्क में आनेवाले सभी प्राणी आपको एवं आपके व्यक्तित्व को पसंद करंगे।

आप व्यक्तिगत रूप से साहसी एवं व्यवहारिक प्राणी है। आप शक्ति संपन्न तथा सामुदायिक भावना के प्राणी हैं। आप किसी भी प्रकार के आयोजनों का दायित्व ग्रहण कर, उस कार्यक्रम अर्थात् योजना को पूर्ण सफल बना सकते हैं। आप में इतनी क्षमता विद्यमान है कि आप बड़ी उपलब्धि प्राप्त करेंगे, परन्तु आप किसी भी वस्तु को सुरक्षित रखने के योग्य नहीं हैं क्योंकि आप मात्र एक अति शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही नहीं बल्कि आप महान खर्चीला अर्थात् धन को (नाश) अपव्यय करने वालें प्राणी हैं। आप सदैव प्रभावशाली तरीके से किसी भी आयोजनों में सम्मिलित होकर मुफ्त में विशिष्टता प्राप्त करते हो। आप स्वयं के लिए तथा अपने परिवारिक सदस्यों के लिए अपने ढंग से वस्त्राभूषणादि पर बहुत खर्च करोगे। सम्प्रति आप ऐसा चाहते है कि हर परिस्थिति में अधिक से अधिक बहुत व्यय करें जो सामान्य जीवन के लिए उपयुक्त हैं।

तथापि आपमें एक छोटी सी नकारात्मक भावना विद्यमान है तथा यदा कदा आप सहजता पूर्वक इसे सहज समझ लेते हो। जब इस के संबंध में सावधानी बरतना अपेक्षित हो जाता है तो इस विषय को स्थगित कर देते हैं। आपको अपनी अकर्मण्यता वाली मुद्रा का परित्याग करना होगा। तब ही आप अपने कार्य व्यवसाय के संबंध में एकाग्रता प्राप्त कर सकेंगे। यह आपके लिए उच्चतम लाभजनक स्थिति प्रमाणित होगी। विशेषतः आपके जीवन का 33 वें से 38 वें वर्ष तक आप सफलता की पराकाष्ठा तक पहुंच सकते हैं।

आप उच्चकोटि के धार्मिक प्राणी हैं। आप पराविज्ञान एवं ज्योतिष विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करने के प्रति रुचिवान तथा आकर्षित है। आपकी धारणा परोपकारी कार्य के सम्पादन संबंध में तथा पिछड़े लोगों तथा दुर्बल श्रेणी के व्यक्तियों को मदद करने की रहती है।

आपके संबंध में गम्भीर रूप से विचारणीय है कि आप समसामयिकी अनुकूल व्यंग विनोद प्रिय वार्त्तालाप करके जन सामान्य के द्वारा उच्च मूल्यांकित किए जाते हैं। अर्थोपार्जन के लिए आप निश्चित दिशा सुनिश्चित कर चुके हैं। आप सदैव अपनी पत्नी एवं सन्तान से युक्त सुखद घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

आपके लिए उपयुक्त व्यवसायों में अच्छी प्रकार व्यवहारणीय धन्धा यथा खेल-कूद

की सामग्री, मोटर पार्ट्स के अतिरिक्त पार्ट्स का व्यवसाय करना उत्तम होगा। पार्टनरशिप के व्यवसाय हेतु बुद्धिमान व्यक्ति के साथ संबंधित होकर वस्त्र विक्रय तथा आभूषण रत्नादि का धन्धा भी अनुकूल हो सकता है। यदि आप कोई नौकरी करना चाहते हैं तो चिकित्सक, अभियंता, वैज्ञानिक एवं रत्नाकर की सेवा धन्धा प्रारंभ कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य निःसन्देह अति उत्तम रहेगा। परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात् शरीर का वाह्य सतह अन्य प्रकार के रोगादि से प्रभावित हो सकता हैं। आप किडनी या मूत्रासय रोग से भी ग्रसित न होवें। अस्तु इन संभावित रोगादि के प्रकोप से सर्तक रहे।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए भाग्यशाली रंग पीला, सफेद, सूआपंखी एवं हरा रंग उत्तम है। इसके अतिरिक्त रंग लाल, काला एवं नीला रंग त्याजनीय है। आपके लिए अंकों में 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक आपके लिए लाभप्रद है। परन्तु अंक 1 एवं 8 अंक हानिकारक है।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ठग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रूचि रहती है। सदगुणों से वे युक्त रहते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति उनके मन में आकर्षण की प्रबलता रहती है। वे भाग्यशाली भी होते हैं तथा उनके सांसारिक महत्व के कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाते हैं फलतः कार्यक्षेत्र में वे उन्नतिशील रहते हैं। उनकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होती है तथा कठिन से कठिन विषय को समझने तथा समाधान करने में वे समर्थ रहते हैं। राजनीति में यद्यपि उनकी रूचि अल्प होती है तथापि राजकार्यों में सलाहकार या सचिव अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में वे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं तथा भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा कला लेखन मनोविज्ञान या आलोचना आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। अपनी योग्यता एवं स्वभाव से जीवन में आपको सुखैश्वर्य एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी एवं गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे।

लग्न में बुध की राशि के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे। आपकी वाणी मधुर एवं ओजस्वी होगी तथा आदर्श वक्ता के रूप में आप जाने जाएंगे। व्यावहारिक रूप से आप अत्यंत ही कुशलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं साहित्य के प्रति आपकी विशेष रूचि होगी तथा लेखन सम्पादन आदि में भी सफलता अर्जित करेंगे। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में इच्छित धनवैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप प्रतिष्ठित तथा यशस्वी व्यक्ति होंगे।

स्वभाव से आप शांत एवं उदार रहेंगे तथा समय पर अन्य जनों के उपकार करने में भी तत्पर होंगे श्रेष्ठ कार्यों को करने में आपकी हमेशा रूचि रहेगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करेंगे एवं गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आत्मसात करने में सफल होंगे।

धर्म के प्रति आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। अपने इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता योग्यता एवं पराक्रम से अपने महत्वपूर्ण कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित करके शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते है।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रूचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरूष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शाक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को याद करने में दीर्घकाल तक समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से युक्त होकर समस्त सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

चूंकि मंगल भाई बहिनों तथा भूमि संबंधी जायदाद का कारक है। अतः भाई बहिनों से युक्त रहकर उनका पूर्ण सुख, सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे एवं आपके प्रति हमेशा कर्तव्य परायण तथा विश्वसनीय रहेंगे। अतः उनकी गलतियों को आप समय समय पर क्षमा करते रहेंगे। साथ ही भूमि एवं जायदाद आदि से युक्त रहेंगे तथा इससे आपको प्रचुर लाभ तथा सुख प्राप्त होगा। आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः परेशानियों, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वाद विवाद आदि के समय स्वयं को नियंत्रित करने में समर्थ रहेंगे। आपकी नेतृत्व.प्रतिभा तथा अन्य सामाजिक गुणों से लोगों के मध्य अपना वर्चस्व बनाएं रखने में सफल रहेंगे। साथ ही संचार संबंधी उपकरणों की भी आपको प्राप्ति होगी एवं सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संगीत के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे। दूर समीप की यात्राओं से भी आप लाभ तथा मित्रों को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। परन्तु मित्रों से आपको सतर्क भी रहना चाहिए ।इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा अन्य जनों से भी यदाकदा विवाद भी हो सकता है अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा बृहस्पति भी स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। यह स्थिति आपके लिए अत्यन्त शुभ फलदायक होगी। इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सुखों को प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में भी समर्थ होंगे। आधुनिक एवं भौतिक सुख संसाधन भी आपके पास होंगे। आप एक आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक सौभागयशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति से चल या अचल सम्पत्ति की भी प्राप्ति हो सकती है। इससे आपकी धनाढ्यता में वृद्धि होगी। अचल सम्पति की अपेक्षा चल से आप वांछित धनसम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। अतः इससे पूंजीनिवेश करने से आप शीध्र लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी। यह विस्तृत सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा। आप किसी अच्छी कालोनी में निवास करेंगे तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं उनसे संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तम वाहन सुख भी प्राप्त होगा तथा युवावस्था से ही आप इसका उपयोग प्रारम्भ करेंगे। इनकी संख्या एक से अधिक हो सकती है।

आपकी माता जी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। परिवार के सदस्य भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा उन्हें वांछित मान सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा एवं समानुसार उनसे आपको आर्थिक एवं नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। आपकी उन्नति में भी उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे एवं सुख-दुख में उनका पूरा ध्यान रखेंगे।

आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा छोटी कक्षाओं से आप अच्छे अंको से परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। साथ ही स्नातक परीक्षा में भी आपको अच्छी सफलता मिलेगी एवं ससम्मान आप इसे उतीर्ण करेंगे। इससे आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं सामाजिक जनों के मध्य आप सम्मान एवं आदर के पात्र माने जाएंगे तथा वे प्रोत्साहित भी करेंगे। आप किसी व्यावसायिक प्रमाण पत्र की डिग्री भी अर्जित कर सकते है। इससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा तथा जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। ही विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रूचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगे। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढेगी।

पंचमभाव में मकर राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगे। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिक्ता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगे। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगे। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु तथा सद्प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे परन्तु कभी कभी अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपकी खुशहाली तथा वैभव से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप उच्च मान सम्मान प्राप्त करेंगे परन्तु आपका विरोध भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इससे यदा कदा ऋण मुक्ति में विलम्ब के कारण सम्बन्धित व्यक्ति से आपकी शत्रुता होने की संभावना रहेगी लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपके नौकर आज्ञाकारी होंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा करते रहेंगे तथा अपने कार्य से आपको वे सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे सामान्य हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्क रहना चाहिए। मुकद्दमे आदि के कार्यो में आप लापरवाह रहेंगे। अतः आपको ऐसे मामलों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने हिसाब को सही रखना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक अपने इन कार्यो को सम्पन्न करेंगे तो आपको किंचित इसमें विजय प्राप्त होगी। साथ ही फौजदारी मामलों में आप सफलता अर्जित करेंगे।

आपके मामा मामियों से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे प्रत्यक्ष रूप से वे आपके प्रति अपनत्व की भावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके लाभ या सहयोग में कोई रूचि नहीं रहेगी अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करें इसके अतिरिक्त आप वृद्धावस्था में उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी से भी पीड़ित हो सकते हैं। अतः खान पान संबंधी परहेज भी रखना चाहिये।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है। वह स्वभाव से सौम्य , कर्तव्य परायण एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील होंगी तथा स्वभाव से सौम्य रहेगी। सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रर्दशन करेंगी जिससे यथा समय कार्य पूर्ण होंगे।साथ ही कर्तव्य परायणता के भाव से भी युक्त होंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौलएवं पुष्ट होंगे जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। सौन्दर्य की वृद्धि के लिए समयानुसार आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। कला एवं संगीत में उनकी रूचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगी इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकते है विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ में आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे तथा विवाह के बाद भी उनसे नैतिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव अनुकूल रहेगा तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को प्रभावित तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रश्स्त रहेंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपका ज्यौतिष या तंत्र मंत्र अथवा आध्यात्मिकता के प्रति विशेष रूचि या श्रद्धा नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में व्यस्त रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही अन्यत्र भी अपने कार्य कलापों में संलग्न रहेंगे जिससे आपके पास समयाभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचा तो आप इसको खेल आदि में व्यतीत करना अधिक उचित समझेंगे। लेकिन यदा कदा आध्यत्म संबन्धी प्रवचनों का श्रवण कर सकते हैं। आप पैतृक सम्पत्ति से जीवन में लाभ अवश्य अर्जित करेंगे। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा विस्तृत जमीन जायदाद के स्वामी बनेंगे। यदि आप इसे बेचना भी चाहेंगे तो इसमें आपको मनोवांछित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही दिन पर दिन इसकी कीमत में वृद्धि होगी। अतः आप इच्छित कीमत पर इसे बेचकर प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे ।

आप शादी के समय दहेज या अन्य प्रकार के उपहारों को इच्छित मात्रा में प्राप्त करेंगे। यद्यपि आपके स्तर के अनुसार इसमें प्रचुरता नहीं होगी फिर भी इसके द्वारा आप अपने रहन सहन आदि के स्तर में वृद्धि करने में समर्थ सिद्ध होंगे। बीमा आदि से भी आपको लाभ होगा तथा समय समय पर स्वयं का तथा अन्य वस्तुओं यथा वाहन मकान आदि का भी बीमा करवाएंगे। आपकी कुडंली में घर में चोरी या डकैती के कोई योग नहीं बनते है। यदि ऐसी घटनाएं हो जाएं तो वह सामान्य होगी तथा तथा इसमें चिन्ता करने की कोई बात नहीं होगी क्योंकि आप बहुमूल्य वस्तुओं को पहले ही सुरक्षित स्थान पर रख देंगे। आपकी आयु लम्बी रहेगी तथा सामान्यतया आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा यह धार्मिकता आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों के रूप में प्राप्त होगी। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा के प्रति भी रूचिशील रहेंगे। यद्यपि युवावस्था में आप दैनिक पूजा अल्प मात्रा में ही सम्पन्न कर पाएंगे। लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। आप आध्यात्म तथा ध्यान योग के प्रति पूर्ण इच्छुक रहेंगे तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचिपूर्वक अध्ययन करके ज्ञानार्जित करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति भी उत्तम रहेगी तथा ज्यौतिष तंत्र मंत्र या हस्तविज्ञान का आपको उत्तम ज्ञान रहेगा या इनके प्रति श्रद्धा रहेगी तथा आपकी अधिकाशं भविष्यवाणियां सही होंगी। अन्तर्प्रज्ञा की वृद्धि के लिए आप समय समय पर ध्यान या पूजा का विशिष्ट आयोजन करेंगे।

आप उच्च शिक्षा अर्जित करेंगे तथा इसके द्वारा आपको समाज में मान सम्मान तथा कीर्ति प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की शुभ यात्राएं करने में भी इच्छुक रहेंगे तथा इन यात्राओं से लाभ ज्ञान तथा सम्मान अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भजन कीर्तन में व्यतीत करेंगे। आपको वैभव शाली तथा विश्राम पूर्ण जीवन व्यतीत करना अच्छा लगेगा। साथ ही अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। आपको अपने पौत्रों के द्वारा सुख सहयोग एवं आनंद की प्राप्ति होगी। वास्तव में आप ने पूर्व जन्म में कई पुण्य के कार्य किए जिससे आपका यह जीवन सर्व सम्पति से युक्त होकर व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाले दानी, सर्व अलंकारों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासानिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा उचित मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सौभाग्यशाली रहेंगे। माता के द्वारा या सहयोग से आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही समुद्र से उत्पन्न पदार्थो या रत्न आदि के अतिरिक्त कार्य से भी आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी जिसको जीवन में पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। माता की ओर से भी आपको उचित स्नेह मिलेगा तथा उनकी कृपा दृष्टि हमेशा आपके ऊपर बनी रहेगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी अच्छा रहेगा तथा मित्रों के मध्य आप सम्मानीय प्रतिष्ठित तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। साथ ही आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे अवस्था के साथ साथ समाज, मित्र मंडल एवं अन्य जनों के लिए आपके मन में अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा अपनी ओर से उन्हें आप पूर्ण स्नेह देंगे। साथ ही अवसरानुकूल उनकी सहायता के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा घर में परिवार के साथ अतिरिक्त समय व्यतीत करना आपको अच्छा लगेगा। साथ ही सामाजिक सम्मान एवं ख्याति के भी योग बनते है जीवन में यदा कदा कार्य क्षेत्र में आपको परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपका व्यापार सुदृढ़ रहेगा तथा भूमि से संबंधित उत्पादों से आपको आर्थिक लाभ होता रहेगा। आप शीघ्रातशीघ्र धनवान होने की मन में इच्छा करेंगे अतः उद्देश्य की पूर्ति के लिए अत्यंत ही परिश्रम करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यधिक सतर्क रहेंगे तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका पूर्ण ध्यान रखेंगे। अतः प्रायः शुभ व्यय ही करेंगे एवं वह भी अत्यधिक सोच विचार के बाद। इस प्रवृति से आप पूंजीनिवेश में अधिक धन लगाएंगे तथा बचत भी बनी रहेगी। इस प्रकार आप मध्यमवस्था तक एक धनवान पुरूष के रूप में समाज के मध्य अपने आपको स्थापित करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपके पास धन हमेशा रहेगा तथा बैंक में आपकी स्थिति सम्माननीय रहेगी। आपके पास व्यसन अल्प मात्रा में ही होंगे जिससे अनावश्यक व्यय से हमेशा सुरक्षित रहेंगे परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेदारी समझेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करेंगे। साथ ही बच्चों का रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन पर भी विशेष व्यय करेंगे।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे भी आपकी भ्रमण प्रिय प्रवृति रहेगी। आपकी यात्राएं व्यवसाय से ही सम्बन्धित होंगी। साथ ही यदाकदा धूमने के लिए या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी आप सपरिवार यात्राएं सम्पन्न कर सकते है। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आप विदेश भ्रमण पर जाएंगे यात्राओं से आपको लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। इस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रफल

आप भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाडी मध्य, योनि गज तथा वर्ग मृग होगा। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका राशिनाम "ले" से होगा। यथा लेखराज।

भरणी नक्षत्र में जन्म होने के कारण आप मनोरंजन के कार्यक्रमों यथा गीत,संगीत, नाटक तथा खेल कूदों के अधिक शौकीन होंगे तथा इन्हीं कार्यों पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। यहां तक स्नानादि की इच्छा का भी यदा कदा अभाव रहेगा। आप चंचल प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा लोगों से मधुरता का व्यवहार अल्प मात्रा में ही करेंगे।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे तथा जो निश्चय एक बार कर लेंगे उसे पूरा करके ही छोडेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा तथापि यदा कदा रोग ग्रस्त रहेंगे। कार्य आप जो भी करेंगे चतुराई से सम्पन्न करेंगे तथा सामान्य जीवन आपका समस्त सुखों से पूर्ण होकर व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपका स्वभाव अनावश्यक रूप से जिदद्ी बन जाता है। जो हठ करते हैं उसे छोडते नही हैं। इससे अन्य जनों को भी परेशानी होगी। सम्पत्ति या धन दौलत तथा वैभव का आपको जीवन भर अभाव नहीं रहेगा। धनार्जन पर्याप्त मात्रा में होगा तथा शरीर की आरोग्यता बनी रहेगी। मुखाकृति भी आपकी निश्चित रूप से दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।
जातक दीपिका

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

आप समय समय पर मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का अनुभव करेंगे तथा लोग आपके चरित्र पर भी कभी कभी सन्देह प्रकट करेंगे। आप के हृदय में यदा कदा कठोरता का भाव भी रहेगा। आपके पास धन पर्याप्त मात्रा में रहेगा तथा संसार में धनवान बन कर रहेंगे।

याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड़ित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मेष राशि में पैदा होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे। तथा आप अपने अन्य भाई-बहनों में अकेले श्रेष्ठ रहेंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आखें लालिमा युक्त गोलाकार होंगी। आपके सिर पर किसी चोट या घाव का निशान हो सकता है।

सिर पर अल्प केश होंगे तथा हाथ पैर कमल की कान्ति के समान सुन्दर होंगे। जल से आप स्वभाविक रूप से भय करेंगे। धन को आप सम्मान समझेंगे तथा उसे इससे भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे। साहस एवं बुद्धि का आपके पास अभाव नहीं होगा जो भी कार्य करेंगे साहस तथा बुद्धिबल से उसे पूर्ण करेंगे। पुत्रों, सहयोगियों तथा मित्रों की आपके पास कभी भी कमी नहीं होगी। ये बडी संख्या में आपके साथ हमेशा रहेंगे। स्त्री वर्ग से आप पराजित रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के प्रति भी स्नेहशील रहेगा। जिससे आप समाज में मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप शीघ्र ही नाराज हो जाएंगे परन्तु जल्दी प्रसन्न भी हो जाएंगे यह आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा सैर सपाटा करना आपको अच्छा लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अति प्रिय तथा सम्माननीय होंगे। दूसरे लोगों की सेवा करना तथा उन्हे सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे आपकी परिस्थितियां कैसी ही हों इसकी आप चिन्ता नहीं करेंगे।

वृतताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करना से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट होंगे। इसके फलस्वरूप या तो वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप खुद उनसे अलग होंगे। आपके घर के सारे कार्य चूंकि अपनी पत्नी के सलाह से ही सम्पन्न होंगे तथा दूसरे लोगो की राय को कोई महत्व नहीं देंगे। अतः यह भी एक अलगाव का मुख्य कारण बनेगा। धन पुत्र तथा वैभव से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा समाज में अपने वैभव से कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते हैं जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंध भी आपके विस्तृत होंगे। अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता की झलक भी देखने को मिलेगी। लेकिन जब कभी आप अनावश्यक उग्रता का प्रर्दशन करेंगे आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपकी प्रवृति चंचल होगी तथा मौका पड़ने पर आप मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्कताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाएं आपको रूचिकर लगेगी। आपके सिर में अल्प मात्रा में केश होंगे। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले प्रदार्थो का परहेज रखे नहीं तो मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है। साथ ही शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं की आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। अभिमान भी आपके स्वभाव में रहेगा। धन की आपके पास कमी नहीं रहेगी। दया का भाव आपके अन्तःकरण में विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप विशेष रूप से दयालु रहेंगे। आप शरीर से वलिष्ठ रहेंगे। आप कई कलाओं या कार्यों में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में आपकी गहन रूचि होगी। शरीर आपका कान्तियुक्त रहेगा तथा आपके द्वारा कई लोगों को सुख प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी बने रहेंगे। आखें आपकी बडी बडी होंगी तथा निशानेबाजी में सिद्धहस्त होंगे। शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे। आप नगर के सम्मानीय नेता या अधिकारी भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा के प्रिय होंगे अर्थात् बडे बडे मंत्रियों

तथा अधिकारियों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल, बाहुबल तथा बुद्धिबल से सुशोभित रहेंगे तथा अपने सारे कार्य आप अपने ही बल पर सुसम्पन्न करेंगे। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या खुद भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आपकी प्रवृति उत्साही रहेगी तथा इसी प्रवृति से आप उन्नत शिखर पर पहुचेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे।

आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा नक्षत्र, रविवार, विष्कुम्भ योग, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा यह समय आपके लिए अशुभ है अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियों तथा मघा नक्षत्र एवं विष्कुम्भ योग में कोई भी शुभ कार्य न करें। इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही रविवार प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा में भी कोई शुभ कार्य न करें अनिष्ट ही होगा तथा इन दिनों शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

जब समय आपके लिए अनुकूल न लग रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का अहसास हो रहा हो, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान हो रहा हो तो ऐसे समय में आप को अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गेँहू, गुङ, घी, लाल वस्त्र, रक्त वस्त्र आदि पदार्थों का दान करना चाहिए। तथा साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। साथ ही मंगलवार के उपवास करने से भी शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य आठवें खाने में है। इसकी वजह से आप बहुत गुस्सा करेंगे। आप अधीर, स्त्रियों के लिए लालायित, सच्चाई से आगे बढ़ने वाले, तपस्वी होंगे। मरने के वक्त आपको भयानक रोग या कष्ट नहीं होगा। आपकी आयु की रक्षा होगी। बहन की ससुराल में रह कर चोरी न करें तो अच्छा फल मिलेगा। यदि आप चोरी न करें तो भाग्यशाली होंगे। आपके सामने किसी की मौत नहीं होगी। आप बीमार व्यक्ति के पास बैठें तो रोगी स्वस्थ हो जाएगा। आमतौर पर आपका जीवन सुखी रहेगा। आप सच्चे और नर्म स्वभाव के होंगे। कभी तिरस्कृत भी होना पड़ सकता है। आप हर काम करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आपके धन का दूसरे लोग भी उपयोग करेंगे। आपका साधु स्वभाव होगा तो अपने लिये किये कार्यों को संसार को समर्पित करने की आप में भावना भी रहेगी।

यदि आपने स्त्रियों से झगड़ा किया, ससुराल वालों को धन के लिए तंग किया, चोरी ठगी की नियत रखी, दक्षिण दिशा के मुख्य दरवाजे वाले मकान में रिहाईश की तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से गुप्त रोग से दुःखी, अस्वस्थ रहेंगे। सरकारी विभाग से परेशानी, आर्थिक स्थिति खराब और आंखों की रोशनी कम हो सकती है। गंदी सोहबत में पड़ कर आप तबाह हो जाएंगे। आप पत्नी के अलावा दूसरी औरत से संबंध रखेंगे तो आपके भाग्य में धोखा लिखा है। जहरीले जीव-जंतुओं से सावधान रहें ये आपके मौत के कारण हो सकते हैं। आपको पीठ में दर्द, रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। आपको आर्थिक नुकसान की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रसोई को अपवित्र न बनायें।
2. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।

उपाय :

1. बड़े भाई या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा आठवें घर में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी औलाद पर अच्छा असर पड़ेगा। आपको पुत्र सुख निश्चय प्राप्त होगा। कृषि कार्य तथा आपकी पत्नी से विशेष मदद की आशा है। बहुत सी मुश्किलों को आप आसान कर सकते हैं, आपके जीवन के 34 साल तक समय साधारण रहेगा। विवाह के बाद आपका भाग्य चमक सकता है या 34 वर्ष के बाद भाग्य चमकेगा। आप ईर्ष्यालु, रोगी, पिता या माता दोनों में से किसी एक के सुख से

वंचित रहेंगे। धन कमाने में माहिर होंगे। ननिहाल-ससुराल का सुख मिलेगा। आप माता-पिता की सेवा करेंगे। आपको बुजुर्गों की संपत्ति मिलेगी।

यदि आपने दिल में छल-कपट रखा, सट्टा-जुआ आदि खेला, बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध बन्द किया, ननिहाल/ससुराल में झगड़ा किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी सोच निराशाजनक या निराशात्मक भी हो सकती है। मन की शक्ति कमजोर या क्षीण होगी। आपके जन्म समय में माता को बहुत कष्ट हुआ होगा या माता का आप्रेशन हो, ऐसी संभावना है। आप कर्म-धर्म हीन हो जाएंगे, बाधाएं बढ़ेंगी। घर से बेघर होना पड़ सकता है। चरित्रहीन औरतों की संगति से आप बर्बाद हो सकते हैं। परिवार में दमे या मिरगी की बीमारी होने का भय है, पितृदोष से पुत्र का सुख नहीं मिल पाएगा। आप यदि जौहरी का काम करेंगे तो बुरा असर होगा। अकारण लोगों से शत्रुता हो सकती है। झूठ-जूठ आपकी आयु को कम कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. रात्रि के समय दूध न पीयें।
2. छल कपट न करें।

उपाय :
1. मीठा भोजन या केसर-दाल चना या गुड़-गेहूं धर्मस्थान में देवें।
2. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें या अमावस्या के दिन दूध-खीर दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगे। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाले होंगे। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगे। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगे, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू

होंगे या परिवार में बच्चा गोद भी लेना पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :
1. जीजे-साले-भांजे या दोहते की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी कुंडली में नौवें घर में बुध पड़ा है। इसकी वजह से संगीत या ज्योतिष में रुचि रह सकती है। आप परिवार का भरण-पोषण करते रहेंगे। आपको अपना भाग्य बनाने में अधिक समय लगेगा। धन-दौलत में बरकत होने में समय लगेगा फिर भी आप खुश रहेंगे। आपके काम-धन्धे पर तथा राजदरबार में आपका अच्छा असर रहेगा। जन्मस्थान से दूर विदेश तक की यात्रा करनी पड़ सकती है परंतु विदेश प्रवास का फल भी अच्छा या अनुकूल रहेगा।

यदि आपके घर में गाने-बजाने का सामान और रेडियो-घड़ियां आदि खराब पड़े होंगे, जुबान में तोतलापन, हरे रंग की चीजें अधिक होंगी या साधू-महात्मा आदि ताबीज़ लेकर रखा तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपके काम से आपके पिता की बदनामी हो सकती है। धोखेबाजी से कदम-कदम पर मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। गृहस्थ जीवन और औलाद से संबंध में खराबियां पैदा होंगी। मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अधर्म के कार्य करेंगे तो भाग्य में भी रुकावटें आती रहेंगी। जीवन में उत्थान-पतन से तंग आ जाएंगे। जीवन के हालात से तंग आकर साधू-फकीर बनने की इच्छा होगी परंतु साधू-फकीर बनना अच्छा नहीं होगा। आप पिता के लिए मनहूस रहेंगे। पिता के सुख का अभाव हो सकता है। आप अपने पिता की आयु पर भारी हैं। पिता के नौकरी-व्यापार में बाधा हो सकती है। जलील और खराब काम करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. जल-भभुतिया, धागे-ताबीज न रखें।
2. मकान की सीढ़ियां गिरा कर दुबारा न बनायें बल्कि उसकी मरम्मत करें।

उपाय :
1. गऊ ग्रास देवें।

2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से वकील-जज या उच्च पद प्राप्त होगा। आपके दिमाग में उपजी बातें अवश्य पूरी होगी। आप दूसरों का भला करते समय अपने नुकसान का ख्याल नहीं रखेंगे। आपको लॉटरी से या अचानक धन की प्राप्ति हो ऐसी उम्मीद है। आपको सरकार द्वारा भी लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन एवं सवारी का सुख मिलेगा। 24वें वर्ष की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप बहुत ही चालाक और भाग्यवान होंगे। आप सभी के मददगार होंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से ऊंचा होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करेंगे तो आप अच्छे अफसर हो सकते हैं। सरकारी यात्रा का शुभ परिणाम मिलेगा। आपके माता-पिता की दीर्घायु, चाचा-ताऊ सुखी होंगे। आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे आपको मानसिक शांति तथा मन को प्रसन्नता मिलेगी। आप भूमि के स्वामी होंगे तथा आपका मकान आलीशान होगा। लक्ष्मी आपके घर में निवास करेगी। आपको स्त्री-औलाद और माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। भूमि में गड़े धन की प्राप्ति हो सकती है। लोहा आदि, मशीनरी के काम से बहुत लाभ उठाएंगे।

यदि आपका निर्धन व्यक्ति से संबंध रहा, टूटा सामान या टूटे हुए खिलौने चिपकाने या जोड़ने वाले पदार्थों आदि से जोड़ कर रखे होंगे, परस्त्री संबंध हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अपनी बेड़ी डोव मल्लाह की तरह आपका हाल होगा। आपके जीवन का 23, 34, 48 एवं 55वां वर्ष अच्छा होगा परंतु इन वर्षों में माता पर बुरा असर पड़ेगा। आप पर कुछ लांछन लग जाएं या सम्मान को खतरा पहुंचे ऐसी आशंका है। आप पर कोई भयानक मुसीबत नहीं आएगी। एक से अधिक औरतों से संबंध रखने का फल अच्छा नहीं होगा। राजा होते हुए भी फकीरी लेने का विचार दिमाग में आता रहेगा। आपकी पत्नी के वक्षस्थल या गर्भाशय में कैंसर हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. टूटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

उपाय :

1. धर्म मंदिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित की सेवा करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के आठवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपकी अच्छी

आमदनी होगी। किसी भी लड़ाई-झगड़े में आपकी जीत होगी। औलाद की बीमारी के प्रति चौकन्ना रहें। आप में काम शक्ति की अधिकता रहेगी। अपने भोजन खाने-पीने पर पूरी चौकसी बरतें। आप परिश्रम करने में संकोच नहीं करेंगे। परंतु आलस्य आपको कर्महीन बना सकता है। आपको पत्नी और औलाद का अच्छा सुख मिलेगा। जन्म स्थान से दूर, देश से विदेश तक कहीं भी निवास स्थान बनाना पड़ेगा। जल से संबंधित कामों या समुद्री यात्रा में तथा विदेशी औरतों से सावधान रहना जरूरी है। आपकी पत्नी की जुबान से निकला शब्द पत्थर पर लकीर होगा अर्थात् आप अपनी पत्नी को न कष्ट देवें और न सतायें।

यदि आपका चाल-चलन खराब हुआ, ससुराल वालों को धोखा दिया या झगड़ा किया, सफेद बिना सींग की गाय घर में रखी तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप पर हमेशा ही कर्ज का बोझ बना रहेगा। अधिकतर बीमार रहा करेंगे। आपकी पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की कुटिल होगी। आप किसी की जमानत न दें, वरना जमानत आपको भरनी पड़ सकती है। जिसका भाग्य पर बुरा असर पड़ेगा। 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें अन्यथा पत्नी सुख में बाधा आ सकती है। आपकी बदनामी भी हो सकती है। आपके गुप्तांग में रोग हो सकता है। आलस्य के कारण भी शराबी और कबाबी होना तथा पराई स्त्री से संबंध रखने से, गुप्त रोग हो सकते हैं और आपके कामों में रुकावट पैदा होने के कारण बनेंगे। आप अपने जीवन में कुछ ऐसा कर गुजरेंगे जिससे आपको पश्चात्ताप होता रहेगा। पत्नी से झगड़ा करना आप को हार और हानि देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दान या भिक्षा न मांगें।
2. ससुराल से धन आदि का धोखा न करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्मस्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप पैसे की परवाह नही करेंगे और बेबाक खर्च करेंगे। पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी। आप असहायों को सहारा देंगे और उजड़ों को बसाएंगे। आपका कोई शत्रु नहीं होंगा। आप धनवान और सुखी होंगे। आपकी जो भी इच्छा होगी देर-सबेर पूरी होगी। आपके पास विभिन्न प्रकार की जायदाद होगी। आपका जीवन आराम से बीतेगा। आपका परिवार खानदानी होगा। आपकी कमाई में बरकत होगी। आप अपने पिछले जन्म की इच्छाओं के अनुरूप कोई बड़ा कार्य संपन्न करेंगे। आप में साधना करने की कला विद्यमान हैं। आप मुखिया या नेता हों या ऐसा सम्मान प्राप्त हो यह संभावना है। आपकी आमदनी और सुख के लिए शुभकारक है। आपमें जरूरत से ज्यादा

होशियारी रहेगी। आपको रात्रि में पूरा आराम और सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने प्लाट खरीद कर मकान बनाया, मकान के अंत में अंधेरा कमरा हो उसको रोशनी में बदला, झूठ को धर्म बनाया, दूसरे के माल पर नजर रखी तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से झूठ बोलना या शराब आदि का चस्का लग जाना बहुत हानिकारक हो सकता है। आप गुप्त रूप से कुछ धोखा-फरेब करने के आदी हो जाएंगे। आप झूठ बोलने वाले, चरित्रहीन स्त्रियों से संबंध रखने वाले या शराब आदि का सेवन कर, अशुभ फल के भागी बनेंगे। जुबान का चस्का भी आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आंखों की नजर संबंधी दोष हो सकता है। एक से अधिक विवाह की आशंका है। आप कभी-कभी बहुत ज्यादा गुस्सा कर बैठते हैं जो बड़ा नुकसानदेह है। आप अपनी पत्नी के गुलाम होंगे। हर वक्त आप चालाकी करते रहेंगे। संतान सुख में विघ्न या संतान देरी से होगी। आप पर कत्ल या दीवानी का मुकद्दमा चल सकता है। पुलिस/कोर्ट में जुर्माना या दण्ड का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूसरों के माल पर नजर न रखें।

उपाय :

1. तांबे के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. तख्त पोश पर शयन करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शत्रुहंता होंगे। आप भाग्यवान और धनवान होंगे। आप बहादुर होंगे। आप किसी व्यक्ति को फांसी की सजा से बचाने में मदद्गार होंगे। आप स्वयं शक्तिशाली होंगे। आपके मान-सम्मान, धर्म-ईमान के लिए राहु का शुभ प्रभाव रहेगा। आप विदेश की यात्रा करेंगे। आपमें अहंकार की भावना रहेगी। ऐशो आराम की सभी चीजें प्राप्त होंगी। किसी प्रकार की मुसीबत का असर आप पर लंबे समय तक नहीं रहेगा। आपकी दिमागी हालत ऊंचे दर्जे की होगी।

यदि आपने चाचा से झगड़ा किया, बिना लाइसेंस की पिस्तौल-बंदूक रखी, भाई की हत्या की या भाई से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारणवश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से घर में किसी की आपके जन्म के कुछ दिन के बाद मृत्यु हो जाये ऐसी शंका है। भाई का अहित करने से आपकी औलाद पर बुरा असर पड़ेगा। आपकी आवारा और बदमाश लोगों से दोस्ती होगी। नीच स्तर की स्त्री का साथ आपको नीच बना सकता है। आप अचानक धन-संपत्ति को बर्बाद करेंगे या लुटा देंगे ऐसी शंका है। बड़े भाई या बहन से लड़ाई-झगड़ा करें तो खुद बर्बाद हो जाएंगे। आपके जीवन में अग्नि,

रोगभय या धन नाश की आशंका है। आप नामी चोर भी, सजा का भय क्यों, ऐसी कहावत आप पर लागू हो सकती है। आपको गोली लगने का भय है। आपके चाचा की मौत के बाद आपका घर बर्बाद हो जायेगा। यदा-कदा आप अपने हितैषी का भी नाश करने पर तुल जाएंगे। यदि आप कभी बीमार हो जायें जो आपकी खबर लेने आयेंगे वह भी बीमार होकर जायेंगे। संतान से दुःखी होंगे या संतान को क्या कष्ट है उसका पता न चलेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोरी न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के बारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप ऐश्वर्य संपन्न, सुखी वैवाहिक जीवन और जमीन-जायदाद के सुख से पूर्ण होंगे। आप सरकारी पक्ष की सेवा करेंगे। समयावधि में तबदीली की अपेक्षा तरक्की के अवसर अधिक आयेंगे। आप शुभ कार्यों में खर्च करेंगे। आपके जीवन के 24वें वर्ष में पुत्र प्राप्ति के योग बनेंगे। पुत्र जन्म के बाद घर में बहुत मात्रा में धनागम शुरू हो जाएगा। आपकी संतान भी धनवान होंगी। आपको भवन निर्माण एवं विदेश प्रवास से लाभ मिलेगा। आप आध्यात्मिक भावना के प्राणी होंगे। मन में त्याग की भावना रहेगी। निःसंतान व्यक्ति से मकान या भूमि न खरीदें। आपमें कामवासना अधिक रहती है। कई संतान का सुख प्राप्त होने की संभावना है। आपके जीवन में हमेशा ही भोग और सुख प्राप्त होंगे। आपका ससुराल पक्ष सुखी रहेगा और दौलतमंद होगा। आपके परिवार की तरक्की होगी। आप अय्याश होंगे, यह आपके लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने कुत्ते मारे या मरवाये, भाई-बंधुओं से झगड़ा किया समाज विरोधी कार्य किये, आवारा फिरना शुरु किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से पिता की जायदाद बर्बाद होगी। भाई-बंधुओं से और समाज में अपमानित हों, ऐसी आशंका है। कुत्तों को मारने से या कुत्ते से नफरत करने से संतान को कष्ट या संतान सुख से महरुम, निःसंतान या बच्चा गोद लेने की नौबत आ सकती है। संतान प्राप्ति में कुछ बिलंब हो सकता है। ठगी-धोखेबाजी से कमाया धन कफन का सबूत बनेगा और धन की कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. कुत्तों को चोट न मारें।
2. ठगी-धोखेबाजी से दूर रहें।

उपाय :

1. घर में हमेशा काला-सफेद कुत्ता पालें।
2. दोहता-जमाई-साले या जीजा की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहींरहेंगे। वर्ष के पुर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगीपरन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्य ार्थियो के लिए समय अच्छा है। तकनीकि शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएंहोती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्राद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे।आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु प क्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे

तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाग्योन्नति संबधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे।आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा ।साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी।अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट

रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे।अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते है। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे।साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव रहेगा।संबधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्ठान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी।आपका शारीरिक

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करना चाहिए।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्नकरेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गूरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध मे छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से वे विभिन्न प्रकार से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगें। पारिवारिक जनों से भी इस समय अनावश्यक रूप से अनबन रहेगी जिससे पारिवारिक वातावरण अशान्त रहेगा। साथ ही मानसिक रूप से भी आप यदाकदा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास आपके कार्य में मंदी आ सकती है या आपका कोई कार्य छूट सकता है। आपके अन्य समाजिक जनों से विवाद भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी तथा धनहानि की भी सम्भावना होगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता,मन में सन्तोष एवं बुद्धि की वृद्धि होगी जिससे यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपका प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा सभी महत्पूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। साथ ही आपको पुत्र सुख तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसे मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही आप अनेक प्रकार के शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं शुभ समाचार भी प्राप्त होंगे। देवता तथा ब्राहमण के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा आप विधिपूर्वक इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी एवं मानसिक चिन्ताएं भी दूर होंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा पदोन्नति भी मिल सकती है। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं।साथ ही अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ तथा दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी उत्पन्न होंगे जिससे अनावश्यक चिन्ताएं तथा समस्याएं बढ़ेंगी। इस समय चोरों से भी सावधान रहना चाहिए तथा अपने उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें अन्यथा आप दंडित हो सकते हैं। इस मास में आपको सांसारिक कार्यों में भी असफलता मिलेगी तथा धन भी अनावश्यक रूप से व्यय होगा। इसके साथ ही आप किसी गलत कार्य को करने के लिए

भी प्रेरित होंगे तथा ऐसे कार्यों को करके आप बाद में पश्चाताप करेंगे। अपने सम्बन्धियों से भी आपकी अनबन हो सकती है तथा मान हानि का भी योग बनता है एवं आशाओं में भी असफलता प्राप्त होगी।

परन्तु उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री से सुखी , बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी धार्मिक कार्य को भी सम्पन्न करेंगे।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु की तरफ से भी चिन्ता बनी रहेगी। आप में इस समय उत्साह की न्यूनता भी परिलक्षित होगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। आप शरीर से भी अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे तथा मन में लालच के भाव की भी प्रधानता होगी। साथ ही आप अपने शरीर का पूर्ण ध्यान नहीं रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके सम्बन्धों में तनाव भी उत्पन्न होगा एवं मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी संघर्ष होने का भय बना रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी समय समय पर घटित होंगे।अतः आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं बुद्धिमत्ता से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस समय आपको शत्रुओं से भय एवं चिन्ता बनी रहेगी साथ ही घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। इस समय आपका अनावश्यक रूप से व्यय होगा एवं धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी। शारीरिक रूप से भी आप विभिन्न प्रकार से कष्टानुभूति करेंगे परिणामतः आपके बल में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप घर से दूर किसी यात्रा को सम्पन्न कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी इस समय आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी के कारण बुखार आदि से भी कष्टानुभूति करेंगे। इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

जून 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण

प्रसन्न रहेगा। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव या कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। सन्तति से आप सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं अवसरानुसार आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे।समाज में यशार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में भी उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगे एवं मित्रों से मधुर संबन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

साथ ही आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सन्तुष्टि भी प्राप्त करेंगे। इस मास में आप नवीन वस्त्रों तथा अन्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगे।अतः इससे आपको मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी आपसे पूर्णरूपेण प्रसन्न रहेंगे। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों की आप पूर्ण सहायता करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ कार्य भी सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार से धन लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्थान या नवीन आवास आदि की भी प्राप्ति कर सकते हैं। इसके साथ ही सर्व प्रकार से शुभ फल होंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिस्त पिछले महीने की असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे।जिससे आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे प्रतिष्ठा में न्यूनता हो सकती है। इस समय अग्नि के द्वारा भी किंचित धन हानि होने की सम्भावना रहेगी।अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी। स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से धन लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा हृदय से भी पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी उन्नति करेंगे। इस समय मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वांछित पदार्थों का आप उपभोग करके प्रसन्न रहेंगे। संतति पक्ष से भी आप शुभ फल ही प्राप्त करेंगे एवं सम्बन्धियों में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे। इस प्रकार यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदा कदा अशुभ फल भी होंगे।जिसके

प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं एवं किसी कठोर कार्य को करने से सम्मान में अल्पता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अग्नि के द्वारा धन हानि की भी संभावना रहेगी।अतः बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आपका इस समय व्यय अधिक होगा एवं दुष्ट मनुष्यों की आपको संगति प्राप्त होगी। सामान्य रूप से आप शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अत्यंत परिश्रम एवं पराक्रम से भी अल्प मात्रा में ही कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा की भावना उत्पन्न होगी तथा अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। साथ ही मित्रों एवं संबन्धियों से सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस समय आपकी नौकरी या व्यापार में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुओं से भय एवं चिन्ता नित्य बनी रहेगी। साथ ही जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी तथा यदाकदा आप मन में बैचेनी भी अनुभव करेंगे।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे ।अतः आप पुत्र एवं स्त्री का सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे शत्रु वर्ग आपसे भयभीत रहेगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आपकी आय होती रहेगी जिससे आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण सुदृढ़ रहेंगे। इसके शुभ प्रभाव से आप समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा भाग्य में भी उन्नति होगी एवं कोई विलम्ब हुआ शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो सकेगा। इसके, अतिरिक्त सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी एवं सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इससे आप गर्मी से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रूधिर सम्बधी विकार भी हो सकता है। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही आग के द्वारा भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना हो सकती है। अतः सतर्क रहें।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने ही उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा समाज से आपको पूर्ण यश तथा मान प्राप्त होगा।साथ ही अपने समस्त बन्धुओं तथा मित्रों से आप पूर्ण प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस समय उच्चाधिकरी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा

मिष्ठान्न का अधिक मात्रा में उपभोग करने में रूचिशील रहेंगे।आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं बल की उसमें वृद्धि होगी। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास सुखोपभोग में व्यतीत करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी आपसे पराजित होगे एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापार मेंभी आप लाभ अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री वर्ग से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे एवं बुद्धि में निर्मलता का भी समावेश होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रचुर मात्रा में धनलाभ अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक धर्मानुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे।साथ ही समाज में आपका यश भी व्याप्त होगा।धर्म के प्रति आपके मन में आस्था होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय परोपकार की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप पूर्ण यशार्जन करेंगे एवं आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही भाइयों से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने मानसिक विचारों या संकल्पों को पूर्ण करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी एवं सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे । चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दुर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान है उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये सयम बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रहीहै। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रुकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा करसकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है।धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक पस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्तूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्तूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरूस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्तूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगा। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-
  ॐ गं गणपतये नमः ।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि एकादश भाव में और सिंह राशि का राहु द्वादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है। कानून से जुड़े लोगों अच्छा लाभ मिलेगा। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

अप्रैल के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी से मतभेद हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको घबराना नहीं चाहिए और बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि अन्त में सफलता आपको ही मिलने वाली है। अतः आत्मविश्वसा के साथ कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति को देखें तो वर्ष के प्रारम्भ में ही आय के स्रोत सृजित होंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। ऐसे में आपको अनावश्यक खर्च रोकना चाहिए। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति में कुछ उतार-चढ़ाव होंगे। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे। भाईयों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे, लेकिन माता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। चिंता न करें इससे आपकी माता की भावनाएं आहत नहीं होंगी। रिश्तेदारों और चाहने वालों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या

विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य के प्रति आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप रोग मुक्त रहने वाले हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आपके अंदर रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। आप अपने आप को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफे बढ़ सकती हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा। आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

6 अप्रैल के बाद समय कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाया जा सकता है, जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। द्वादश स्थान के राहु अचानक आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तसे दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि अष्टम स्थान का गुरु एवं द्वादश स्थान का राहु चोट चपेट का प्रबल योग बना रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यो के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास रहेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वो को हंसी खुशी मनाएंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें और सूर्य नमस्कार करें आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी, परन्तु गुरु एवं राहु ग्रह का गोचन प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं। जो कि आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें।

गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें, वरना सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं और आप कानून की जद में आ सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएँ। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अगस्त के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी। कार्यस्थल पर मान-संमान व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करे नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चो पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। अप्रैल के बाद आपके बंद आय के आय के मार्ग खुलेंगे। बहुत दिनो से फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 9 सितम्बर के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

15 अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई-बहनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आप बहुत ज्यादा बीमार हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में खान-पान के साथ दिनचर्या को भी अनुशासित बनाएं और समय समय पर डॉक्टर की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

15 अप्रैल के बादे नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 15 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो

सकती हैं।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपकी रुचि नहीं रहेगी। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाएगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन की लड्डू दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का नित्य पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सफलता मिलेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। एकादश स्थान का राहु अचानक सफलता का मार्ग खोल सकता है, जिससे व्यापार में उन्नति मिल सकती है। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा, जो आपके लिए अनुकूल रहेगा।

सितम्बर के बाद आपका समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है और कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह साल सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। 26 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों कीा सलाह अवश्य लें।

शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं होने के कारण बीमारी इत्यादि में भी धन व्यय हो सकता है। सितम्बर के बाद अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः उस समय लेन देन के मामले में सावधान रहें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि घर में कुछ विषम स्थितियां भी उत्पन्न कर सकती है। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। परन्तु 26

अप्रैल के बाद से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही बढ़िया है।

आपको परिवार में बुजुर्ग सदस्यों का सहयोग मिलेगा। परिवार के प्रति आपका भी आकर्षण बढ़ेगा। माता-पिता जी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सितम्बर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यह सब आपके अच्छे व्यक्तित्व के कारण होगा।

संतान

संतान के दृष्टि कोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अप्रैल के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। परन्तु 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय गर्भाधान व संतानोत्पति के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसे स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है।

अप्रैल के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्यता से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 19 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। छोटी-मोटी यात्राओं के

साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगा। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- तुला दान करें। (अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।)
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं एकादश में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से साल का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। 11 मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। यदि उस समय किसी के साथ मिलकर व्यापार करें तो कुछ सफलता मिल सकती है। फिर भी व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अक्टूबर के बाद क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियां का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। 11 मई के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे।

अक्टूबर के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए आप छोटी छोटी बातों पर ध्यान दें। दशम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपके माता-पिता जी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। परन्तु 11 मई से

समय शुभ हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी।

एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से मान संमान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था से भी जुडेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

संतान

राहु एवं गुरु का चण्डाल योग संतान के लिए बहुत अच्छा नही रहेंगे। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। 11 मई के बाद यह योग समाप्त हो रहा है। गुरु ग्रह के शुभ होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति होगी।

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

11 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ समझेंगे। खान पान पर ज्यादा ध्यान दें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

11 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल कॉलेज में दाखिला मिल

जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। अक्टूबर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय संबंधित यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। मई के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यावसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में भी फंसा सकते हैं। परन्तु 2 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप सभी शत्रुओं को पीछे छोड़ कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्नति रुक सकती है अथवा प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। ऐसे प्रतिकूल समय में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकरी रहेगा। व्यापार में उन्नति व आशा से अधिक लाभ की संभावना बढ़ेगी। आर्थिक लाभ होगा एवं कार्यों में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदार व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें। नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। 4 नवम्बर से समय आपके पक्ष में आ रहा है। उस समय आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे और शेयर बाजार लॉटरी इत्यादि क्षेत्रों से धन लाभ हो

सकता है।

घर-परिवार, समाज

दाम्पत्य जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं है। जीवानसाथी के रूखे व्यवहार का सामना करना पड़ सकता है। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। 5 अप्रैल के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। द्वितीय स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं होता। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं।

समाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। 13 जुलाई के बाद भाईयों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु आपके मातुल पक्ष के लोगों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्म पत्नी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। 4 नवम्बर से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पारिवारिक अनुकूलता प्राप्त होगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी खराब हो सकती है, जिससे उन्नति में व्यवधान आ सकती है। 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा योग बना रहा है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपने योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 2 जून से समय प्रभावित हो रहा है। परन्तु चिंता न करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। उसके बाद आपके बच्चे निर्विघ्नता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। 3 मार्च से 2 जून तक का समय अच्छा रहेगा। आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु उसके बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का

विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 4 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा हो जाएगा तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 3 मार्च से पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च से 2 जून तक का समय बहुत ही शुभ है क्योंकि सफलता के सारे मार्ग आपके पक्ष में है। उसके बाद समय प्रभावित हो रहा है।

साल के उत्तरार्द्ध में उन्नति के मार्ग प्रभावित हो रहे हैं। आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के गुरु वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 3 मार्च के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप मानसिक अशान्त रहेंगे। नवमस्थ राहु के कारण ज्यादातर यात्राएं आपकी अचानक ही होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना इत्यादि कर्मों को ही आप अपना धर्म समझेंगे। 4 नवम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु, केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं प्रथम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके प्रतिद्वंदी व्यवसाय में बाधा डालने की काशिश करेंगे, जिससे आपको मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। 6 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपको दूसरों के लिये भी काम करना पड़ सकता है। किसी भी व्यासायिक यात्रा को करने से पहले भली भांति जांच लें कि वह यात्रा आपके लिए लाभकारी है या नहीं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध खनिज, खाद्य विभाग व रासायनिक विभागों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए शुभ है। नौकरी या व्यवसाय में अच्छा सुधार होगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। लेकिन कुछ कामों में आप अनुभवी लोगों की सलाह को भी नजरअंदाज कर सकते हैं और गलत निर्णय लेकर चिंताग्रस्त हो सकते हैं। सरकारी व्यक्ति की सहायता से भी आपके काम बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्चे बढें .गे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। 6 अप्रैल के बाद घर परिवार में रोग व्याधियों की अधिकता होने से धन का अपव्यय अधिक होगा। पैसे का लेन देन करते समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। इस समय के अंतराल में अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें।

किसी नए काम को शुरु करने के लिए बडा निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। लेकिन उत्तरार्द्ध में अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की सम्भावना बन रही है। यदि आप जुआ, लॉटरी आदि के माध्यम से कमाई करते हैं तो इनमें बडा निवेश करने से बचें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे। वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों में यह वर्ष मिले जुले परिणाम देने वाला रहेगा। वर्ष के प्रथम पक्ष में परिवार का वातावरण भी उत्तम व मेल-जोल वाला रहेगा। परिवार के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। परिवार के सभी लोग आपका सम्मान और आदर करेंगे। 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित होगा। नवम स्थान का राहु अचानक आपके पिताजी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं। परिवार के कुछ सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति रूखा या असहयोगात्मक रह सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध परिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल रहेगा। परिवार में सुख और शान्ति का माहौल बनेगा। आप पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। आपके अन्दर अहंकार युक्त भावनाएं पनप सकती हैं जिससे घर-परिवार में आपकी जनप्रियता घट सकती है। बेहतर होगा आप अपनी अन्तर्दृष्टि से स्वयं को परखें। जरूरत से ज्यादा तर्क-वितर्क करने से बचें अन्यथा परिवारीजनों को आपकी निष्ठा और आपके पारिवारिक स्नेह पर संदेह होने लगेगा।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। संतान की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा, परन्तु उसके बाद समय फिर से उत्तम हो जाएगा तथा पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षान्त में आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे, जिससे आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से गुजर रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हांलाकि 28 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध साकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय शुभ है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं है। जून के बाद आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग व हार्डवेयर की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को अधिक सफलता नहीं मिलेगी।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

28 जून के बाद आपकी लम्बी यात्रा होगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आप का अटुट विश्वास होगा। 6 अप्रैल के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गोशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान देंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार की सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा भी अधिक होंगी।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं नित्य उसका दर्शन करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके लगेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे तथा चाह कर भी अपने शत्रुओं का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। व्यापार में कोई बड़ा निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें, क्योंकि यह साल आपके के लिए अच्छा नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है।

6 मई से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपकी मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों को इच्छित लाभ होगा। नौकरी करने वालों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। वर्षान्त अधिक प्रतिकूल रहने वाला है, अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

धन संपत्ति

द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु एवं लग्नस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि के योग बन रहे हैं। आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वसीयत प्राप्ति से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप किसी धार्मिक कार्य में धन खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे। 26 सितम्बर के बाद किसी प्रकार का निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके छोटे भाई

बहनों के लिए अच्छी नहीं है। 6 मई के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपसी मतभेद व तनाव हो सकता है।

26 सितम्बर के बाद पारिवारिक क्लेश होने की संभावना बन रही है। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में वैचारिक मतभेद उत्पन्न कर सकती है। इस समय के अंतराल में आपको बड़े विवेक से काम लेना होगा तथा अपनी धैर्यशक्ति बनाए रखनी होगी। समाजिक स्तर में कुछ कमी आ सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। संतान आज्ञापालक भी होगी।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति हेतु यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें एवं अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

6 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से खराब सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनों में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनीयर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 6 मई के बाद आप बड़ी यात्राओं का आनन्द

लेंगे, जिसमें व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पायेंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 6 मई के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक व पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। विरोधी तथा शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना होगा। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। फिर भी व्यावसायिक मामलों में आपको बहुत सावधान रहना होगा।

यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है। वर्षान्त में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें।

धन संपत्ति

शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक मामलों में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को वांछित लाभ मिल सकता है। अकस्मात् व गुप्त धन मिलने की संभावना बन रही है। बैंकिंग संस्थानों से कर्ज लेना चाहते हैं तो शीघ्र ही आपको लोन मिल जाएगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के स्वास्थ्य पर आपका अधिक व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक मामलों के लिए अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालांकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से

आपके छोटे भाई-बहनो के साथ संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। फिर आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे को आलसी व बीमार बना सकती है, जिसके चलते उनको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग बने हुए हैं। उनका भाग्योदय होगा तथा व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंदियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकती है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए और तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु ग्रह के गोचर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें। तुला दान व महामृत्यंजय जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले जातकों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। मैनेजमेंट, प्रशासनिक शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। धार्मिक यात्रा का सुन्दर योग बन रहा है।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि राहु एवं शनि दोनो ग्रहों का गोचर प्रतिकूल है। चोरी व दुर्घटना का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होंगे। किसी तीर्थस्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

शिवजी की उपासना करें एवं मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें। मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं। आपके लिए अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।

- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। किसी गैरकानूनी क्रिया-कलापो में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदि आप अपनी पत्नी के साथ कार्य कर रहे हैं तो वांछित उन्नति नहीं मिलेगी।

नौकरीपेशा लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आपको खास मुनाफा होगा। यह मुनाफा आपको सैलरी में वृद्धि तथा नई नौकरी के मौके के रूप में मिल सकता है। आपके बड़े अधिकारी आपकी काफी मदद करेंगे। आपके काम की सराहना होगी। अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अगस्त से सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः उस समय सावधान रहने की आवश्यकता है। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे आपकी छवि खराब हो जाए तथा वरिष्ठजनों और सहकर्मियो के साथ आपके संबंध खराब हो जाएं।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। इसके लिए आपको थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए बिना किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द करके विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें हो सकती हैं।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा है तो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में तथा धार्मिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा।

माता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगी। भाई-बहनों सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिससे में आपकी अहम भुमिका होगी। सप्तम स्थान का राहु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे। देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य में सुधार व कार्यक्षमताओं की वृद्धि होगी। आपकी सन्तान इस वर्ष कोई नई सम्पत्ति या वाहन के क्रय में धन का निवेश कर सकती है। आपका दूसरी सन्तान से टकराव या वैचारिक मतभेद भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्कता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। समय समय पर शिकायत होने पर जांच कराते रहें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

19 सितम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। फिर भी अपनी सेहत का विशेष ख्याल रखें। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें तथा योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। सुबह सुबह टहलना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वष के उत्तरार्द्ध में छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इसलिए दी गई

परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 19 सितम्बर के बाद आपको इच्छित नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। जलीय मार्ग से दर्शनीय स्थल की यात्रा अधिक करेंगे। यदि आप अपनी जन्मभूमि से दूर रहते हैं तो परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा भी कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में उच्चपद प्राप्ति व स्थानांतरण के योग बन रहे हैं। नौकरी व व्यापार के मामलों को लेकर अधिक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे, जिसमें परिवार के सभी सदस्य शामिल होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष अभिमन्त्रित कर सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। व्यापारिक व्यक्तियों को इस वर्ष अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे, कारोबार का विस्तार होगा। व्यापार में पूंजी लगाने वाले कुछ नए लोग मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधी मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप नौकरी में हैं तो अच्छे परिणाम मिलेंगे तथा कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। षष्ठस्थ राहु के कारण नौकरी से संबंधित इच्छाएं पूर्ण होंगी।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में ही आपको भूमि, भवन व वाहन सुख की प्राप्ति हो सकती है। 16 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी।

छोटे भाई या मातुल पक्ष के लोगों से आपको ज्यादा लाभ होगा। संतान की शिक्षा पर व मांगलिक कार्यों में आप ज्याद खर्च करेंगे। पंचमस्थ गुरु के कारण शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा मुनाफा होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

16 फरवरी के बाद समय आपके बच्चों के लिए अनुकूल हो रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

पंचमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। सफलता के मार्ग पर आगे बढेंगे। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़ कर उन्नति करेंगे और आप गर्व का अनुभव करेंगे। आपके प्रति उनके दिल में सम्मान का भाव बढ़ेगा तथा वे आपकी सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। 16 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिसके फलस्वरूप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

यदि आपने खाने पीने पर ध्यान नहीं दिया तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। क्योंकि वर्ष के उत्तरार्द्ध में मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग करें और स्फूर्ति के लिए व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप विषयों को ज्यादा से ज्यादा पढ़ेंगे। इससे आपका अभ्यास पहले से बहुत अच्छा होगा एवं नतीजों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको करियर में सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राओं का प्रबल योग बन रहा है। नौकरी करने वाले

व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। तृतीयस्थ शनि के कारण आप छोटी -मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी करेंगे।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपको धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। 16 फरवरी के बाद आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से आप अपना दैनिक पूजा करते रहेंगे। आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चे की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- साधू, संन्यासी एवं गरीबों को भोजन कराएं।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- नौ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरू कुम्भ राशि एंव छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही उत्तम रहने वाला है। कारोबारियों को इस समय अप्रत्याशित मुनाफा प्राप्त हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपकी नकल करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे पूरी तरह से विफल रहेंगे। छठे स्थान का राहु आपको शत्रुओं से भी लाभ प्राप्त करा सकता है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। कुछ कारणों को लेकर आपसे बड़े अधिकारी आपके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। लापरवाह और अति आत्मविश्वासी बिल्कुल न बनें। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपने कार्यों को तेजी से करें।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आमदनी के कई नये स्रोत मिलेंगे जिससे आपके संचित धन में तेजी से वृद्धि होगी। वर्षारम्भ में छठे स्थान का राहु अचानक कोई बड़ा लाभ करा सकता है। पिता एवं आपके बड़े भाईयों से भी धन लाभ होगा। शेयर बाजार, सट्टा व लॉटरी इत्यादि के माध्यम से आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिसके फलस्वरूप आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। अतः वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्दकर विश्वास न करें। जोखिम भरे कार्यों मे धन निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्यों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा वे लोग हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। यह समय आपके जीवनसाथी के लिए उत्तम रहेगा तथा भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं। इस संस्था से बहुत सारे लोगों का कल्याण होगा, जिसका पूरा श्रेय आपको मिलेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए बहुत ही शुभ है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी। बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

15 जून के बाद आप संतान को लेकर चिंतित रहेंगे आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधान रहें, गर्भपात की सम्भावना है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहने वाला है। आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। मानसिक प्रसन्नता के साथ आपका समय व्यतित होगा तथा आप शारीरिक रूप से पूर्ण आरोग्य रहेंगे। 2 मार्च को गुरु ग्रह के गोचर के साथ आपका समय किंचित प्रभावित होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ न कुछ शारीरिक कष्ट होता रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से आपको परेशान कर सकती है। आंख, पेट, पाचन और नसों में परेशानी हो सकती है। इलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमरियों से बचा जा सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। प्रतियोगिता परीक्षा में आपको वांछित सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष उपलब्धी प्राप्त करेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावट उत्पन्न कर सकता है तथा गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके करियर में एकाग्रता नहीं रहेगी और आपका मन भी अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

2 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपके छोटी मोटी परेशानियां भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे। 15 जून के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। इस समय आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएंगी।

- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- अपने पूजा घर में लड्डू गोपाल की स्थापना कर उनका पूजन करें।
- पांचमुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(10/10/2022 - 10/10/2032)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/10/2022 को आरम्भ और 10/10/2032 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। वैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(10/09/2025 - 10/01/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/10/2022 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 10/09/2025 को प्रारंभ होकर 10/01/2027 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि धर्म, अध्यात्म आदि में रहेगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, भाग्य साथ देगा, सुख-शांति प्राप्त होंगे। घरेलू वातावरण मंगलमय रहेगा। विरोधी निर्बल रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(10/01/2027 - 10/08/2028)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 10/10/2022 को प्रारंभ हुई और 10/10/2032 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 10/01/2027 को प्रारंभ होकर 10/08/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि बहुत शक्तिशाली ग्रह है जो जातक की कर्मठता की परीक्षा लेता है। भाग्योदय में देरी हो सकती है, मगर होता जरुर है।

इस अवधि में आपकी बुद्धि की कुशाग्रता कम हो सकती है। बहुत सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि व्यापार आदि में धनहानि हो सकती है। शत्रु बढ़ेंगे, निराशा अधिक रहेगी। गुप्त रुप से पाप करने की प्रवृत्ति हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं। भोजन का पहला कौर गाय को दें। शिव की उपासना कम से कम प्रत्येक शनिवार को अवश्य करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(10/08/2028 - 09/01/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 10/10/2022 को प्रारंभ हुई थी और 10/10/2032 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 10/08/2028 को प्रारंभ होकर 09/01/2030 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध नवम भाव में स्थित होकर कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप ज्ञान और धन अर्जित करेंगे। आपका दृष्टिकोण वैज्ञानिक रहेगा। आप देश-विदेश में व्याख्यान दे सकते हैं। विदेश से आपके लिए आमंत्रण आ सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(09/01/2030 - 10/08/2030)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 10/10/2022 को प्रारंभ हुई ओर 10/10/2032 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 09/01/2030 को प्रारंभ होकर 10/08/2030 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आपका मष्तिष्क बेचैन हो सकता है; आप इधर-उधर भटक सकते हैं। विदेश भी जा सकते हैं। गरीब लोगों की सहायता करेंगे। अपने स्तर के लोगों के साथ व्यवहार में सावधानी की आवश्यकता है। भटकने के कारण संचित धन में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(10/08/2030 - 10/04/2032)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/10/2022 को प्रारंभ होकर 10/10/2032को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/08/2030 को प्रारंभ होकर 10/04/2032 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्धटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली होंगे। धन-धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। भावनात्मक समस्याओं से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(10/04/2032 - 10/10/2032)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 10/10/2022 को प्रारंभ होगी और 10/10/2032 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 10/04/2032 से प्रारंभ होकर 10/10/2032 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य सर्वाधिक बली ग्रह है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। वाक्शक्ति प्रबल रहेगी, परंतु आर्थिक तंगी और निराशा की आशंका है। सट्टेबाजी या अन्य माध्यम से अचानक लाभ हो सकता है।

जीवन में कुछ अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं जो आपकी स्मृति पर अमिट छाप छोड़ेंगी। अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न टोटके लाभदायक हैं।

1. दूध और शहद का सेवन करें, अग्नि में दूध अर्पित करें।
2. गरीबों को आटा, गुड़ और तांबे का दान करें।

3. किसी नदी, नहर आदि में तांबे के सिक्के डालें और उन्हें प्रवाहित होते देखें।

महादशा :- मंगल
(10/10/2032 - 11/10/2039)

मंगल की महादशा 10/10/2032 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 11/10/2039 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी।

आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(10/10/2032 - 08/03/2033)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 10/10/2032 को प्रारंभ होकर 08/03/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्चे भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई-बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ-पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(08/03/2033 - 26/03/2034)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 08/03/2033 को प्रारंभ होकर 26/03/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके धन और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। शारीरिक और मानसिक कार्यक्षमता उत्तम रहेगी; सब बाधाएं पार करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके कर्मचारी या मातहत वफ़ादार रहेंगे। अगर आप नौकरी करते हैं तो बहुत लाभ होगा। खर्चे बढ़ सकते हैं। पराविद्या या समाजकार्य में रुचि ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं या विदेशियों से संपर्क बढ़ सकता है। आपके पिता कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे। आपकी माता लक्ष्य को प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहन

भौतिक सुख-साधन क्रय करेंगे, उनके जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी संतान अगर शिक्षारत हैं तो घर से दूर जा सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यो में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता सुखी रहेंगे। व्यापारियों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं; विदेश से लाभ संभव है।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। चोट आदि से बचाव करें। रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम रहेगी। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार को शिवजी की पूजा भैरव रूप में करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(26/03/2034 - 02/03/2035)

आपकी मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/03/2034 को प्रारंभ होकर 02/03/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको घरेलू सुख मिलेगा। धन और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। भूमि से आमदनी अच्छी होगी। अदालत में जायदाद संबंधी मुकदमे में जीत होगी। शिक्षा के लिए समय अच्छा है। निवास बदलने के लिए समय शुभ है। सरकार से फ़ायदा हो सकता है। उत्तम कार्यक्षमता और परिश्रम के लिए प्रसिद्ध होंगे। धन और जायदाद की अचानक प्राप्ति हो सकती है। शत्रुओं पर विजय होगी। यात्रा हो सकती है। आध्यात्मिकता की ओर रुझान होगा।

आपके जीवनसाथी की किस्मत चमकेगी। धन प्राप्त करेंगे, व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन हो सकता है या धन कमाएंगे। माता भाग्यशाली होंगी। आपके भाई-बहन धन प्राप्त करेंगे, उत्तम वस्त्र और भोजन का सुख होगा, कार्यो में सफल होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा और धनसंचय की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति या वांछित तबादले का संकेत है। परामर्शदाताओं को कार्यो में सफलता मिलेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा मगर बदपरहेजी न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(02/03/2035 - 10/04/2036)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/10/2032 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/03/2035 को प्रारंभ होकर 10/04/2036 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। शत्रुओं को परास्त करेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। यात्रा, सौभाग्य और धन का संकेत है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। पिता से संबंध मधुर रहेंगे; संतान से सुख मिलेगा। धन संचित होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है, उससे आय में बढ़त होगी। माता की यात्रा हो सकती है; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा, उन्हें प्रसिद्धि मिलेगी, धन का संचय होगा।

आपकी संतान के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा, लघु यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(10/04/2036 - 07/04/2037)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 10/04/2036 को प्रारंभ होकर 07/04/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा

सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई-बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।

अंर्तदशा :- मंगल - केतु
(07/04/2037 - 04/09/2037)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 07/04/2037 को प्रारंभ होकर 04/09/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप उत्तम कार्य करेंगे; प्रसिद्धि और सम्मान पाएंगे। नौकरी में प्रोन्नति मिल सकती है। व्यापार में तरक्की होगी। विदेश में निवास हो सकता है। अगर अध्ययनरत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। अकेले किये कार्य सफलता दिलाएंगे। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। रिश्तेदार प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी लक्ष्य को प्राप्त करेंगे, उन्हें मामा से लाभ होगा। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता भाग्यशाली होंगी, सुख के सब साधन प्राप्त होंगे। आपके भाई-बहन कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे, लाभ और सुविधाओं में वृद्धि होगी, घरेलू सुख रहेगा।

आपकी संतान के वातावरण में परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, पराविद्या में रुचि ले सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को लक्ष्य पाने के लिए परिश्रम करना होगा। व्यापारियों के कर्मचारियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और पैरों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भूरा कुत्ता पालें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(04/09/2037 - 04/11/2038)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 04/09/2037 को प्रारंभ होकर 04/11/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप हर प्रकार से समृद्ध बनेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में धन या अचल संपत्ति प्राप्त हो सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। व्यापार में आय बढ़ेगी। सम्मान में वृद्धि होगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। परिवार में खुशहाली रहेगी। विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। दान-धर्म में रुचि लेंगे। परिवाजन और मित्र इज्ज़त करेंगे।

आपके जीवनसाथी विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता सौभाग्यशाली रहेंगी, प्रसिद्ध और धनी बनेंगी, मित्र उनकी मदद करेंगे। भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रु परास्त होंगे, कार्यालय उत्तम रहेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(04/11/2038 - 12/03/2039)

आपकी मंगल की महादशा 10/10/2032 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 04/11/2038 को प्रारंभ होकर 12/03/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी अप्रत्याशित स्थान से धन प्राप्त हो सकता है। सेवानिवृत्त होने वालों को पेंशन, ग्रेच्युटी आदि प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी जिससे आपको भी लाभ पहुंचेगा। शिक्षा उत्तम होगी। धन प्राप्त हो सकता है। वाक्शक्ति से दूसरों को प्रभावित करने में सफल होंगे।

महादशा :- राहु
(11/10/2039 - 10/10/2057)

राहु की महादशा 11/10/2039 को आरम्भ और 10/10/2057 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वासथ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, ड्रग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इन्जीनियरिंग और सभी बौद्धिक-कार्यों में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अंतरदशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

अंर्तदशा :– राहु – राहु
(11/10/2039 - 23/06/2042)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/10/2039 को प्रारंभ होकर 10/10/2057 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 11/10/2039 को प्रारंभ होकर 23/06/2042 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। छठे भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको कई बीमारियां हो सकती हैं, मन विचलित रह सकता है। किसी कांड में फंस सकते हैं, अतः प्रत्येक कदम पर सावधानी की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र के जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – गुरु
(23/06/2042 - 15/11/2044)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/10/2039 को प्रारंभ होकर 10/10/2057 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 23/06/2042 को प्रारंभ होकर 15/11/2044 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। आप संतुष्ट और प्रसन्नचित्त रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप विद्वान और दार्शनिक प्रवृत्ति के होंगे ; आलोचकों के साथ कठोरता से पेश आएंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :– राहु – शनि
(15/11/2044 - 22/09/2047)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 11/10/2039 को प्रारंभ होकर 10/10/2057 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 15/11/2044 को प्रारंभ होकर 22/09/2047 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है, शुभफल अवश्य मिलता है, मगर कुछ देरी से।

इस अवधि में आपका मष्तिष्क सुस्त हो सकता है। धन की हानि हो सकती है। व्यापार में तनाव हो सकता है। निराश रह सकते हैं। गुप्त रूप से पापकर्म में लिप्त रह सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

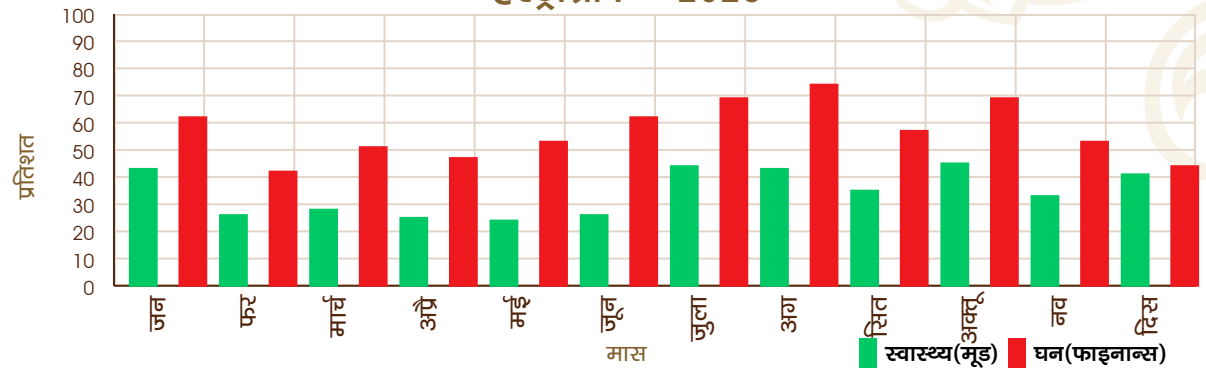

एस्ट्रोग्राफ - 2027

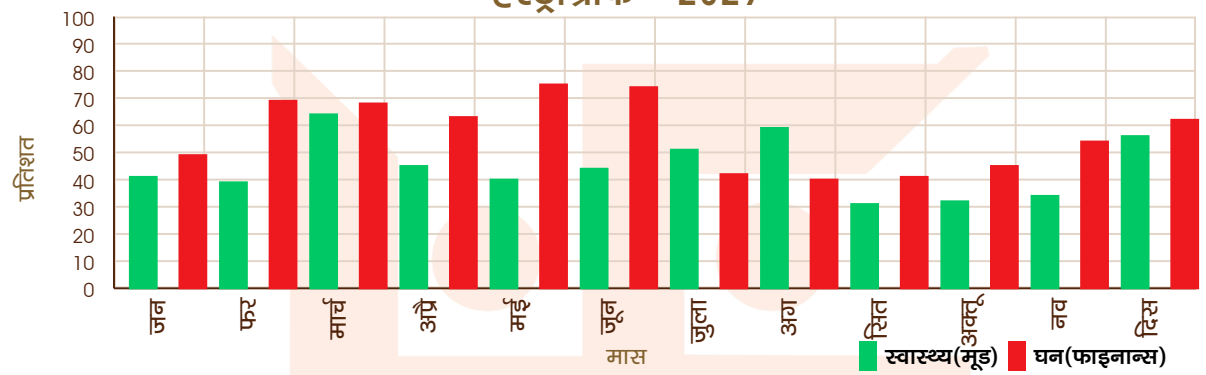

एस्ट्रोग्राफ - 2028

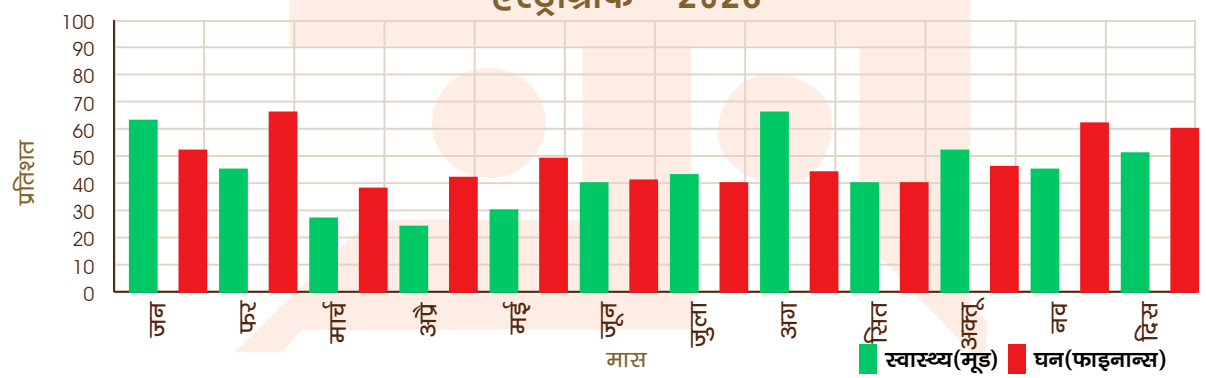

एस्ट्रोग्राफ - 2029

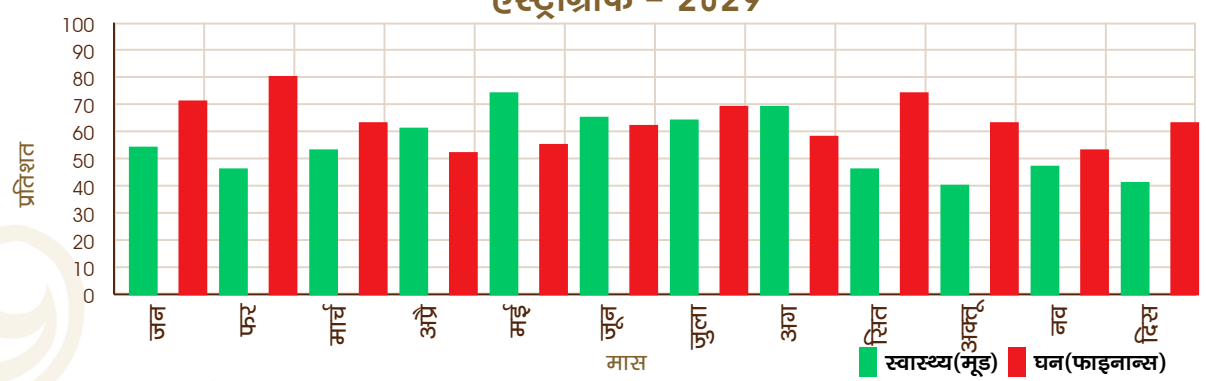

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2030

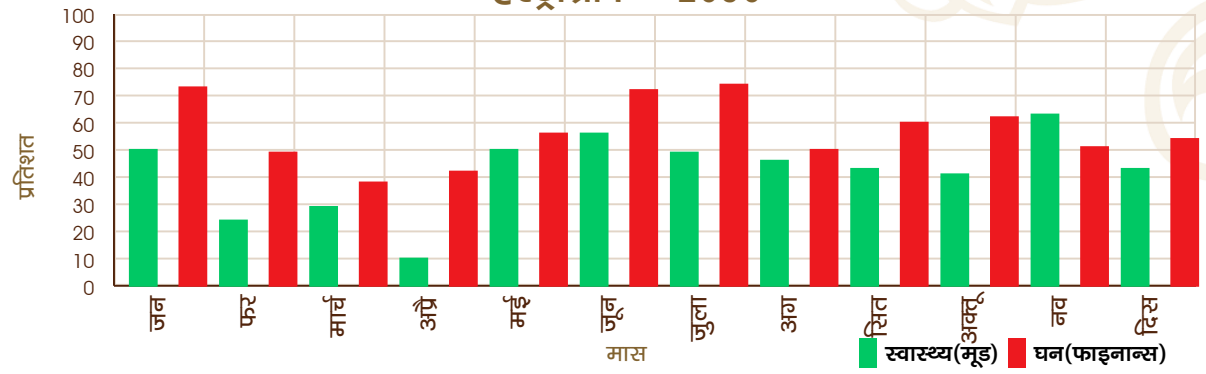

एस्ट्रोग्राफ - 2031

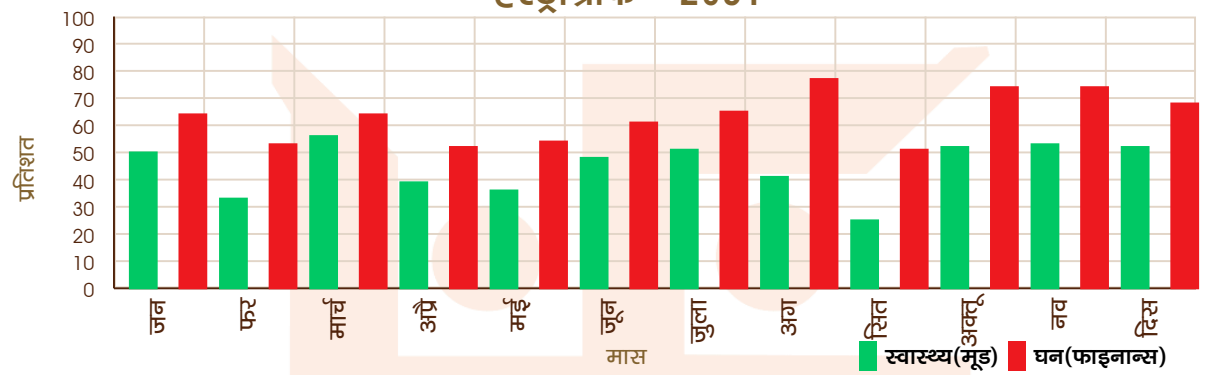

एस्ट्रोग्राफ - 2032

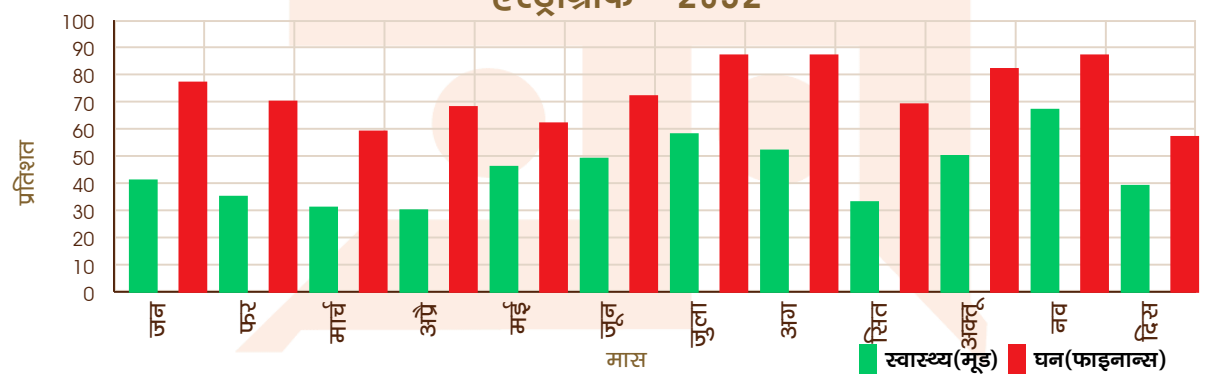

एस्ट्रोग्राफ - 2033

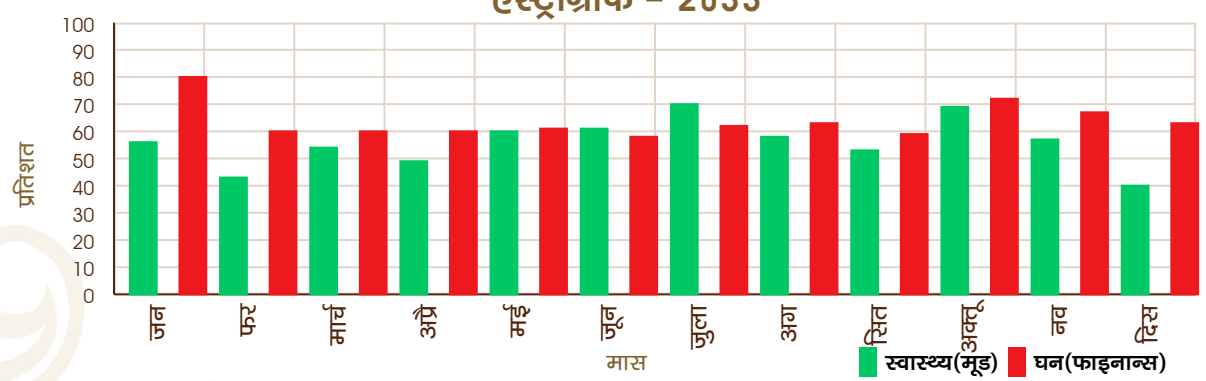

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2034

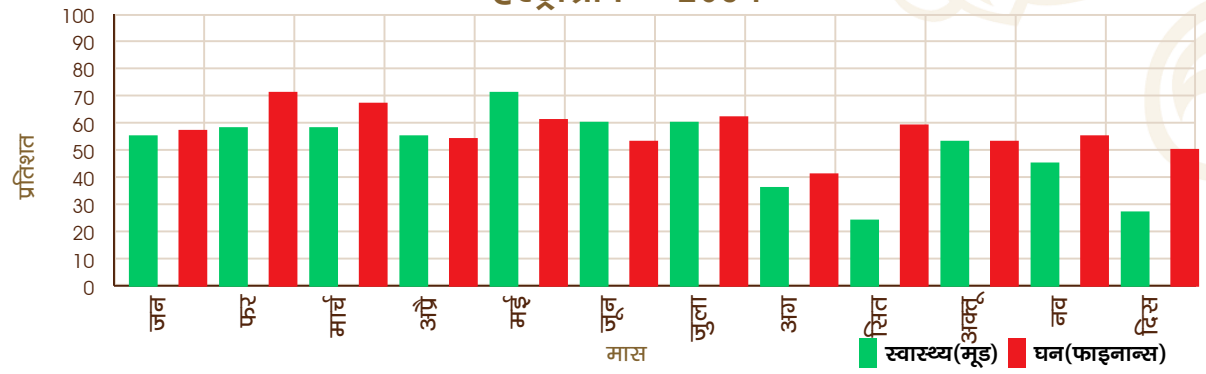

एस्ट्रोग्राफ - 2035

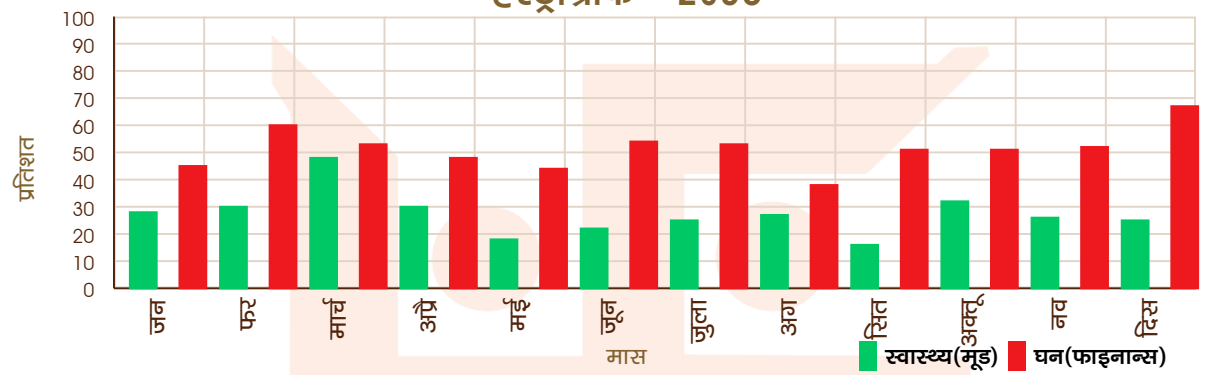

एस्ट्रोग्राफ - 2036

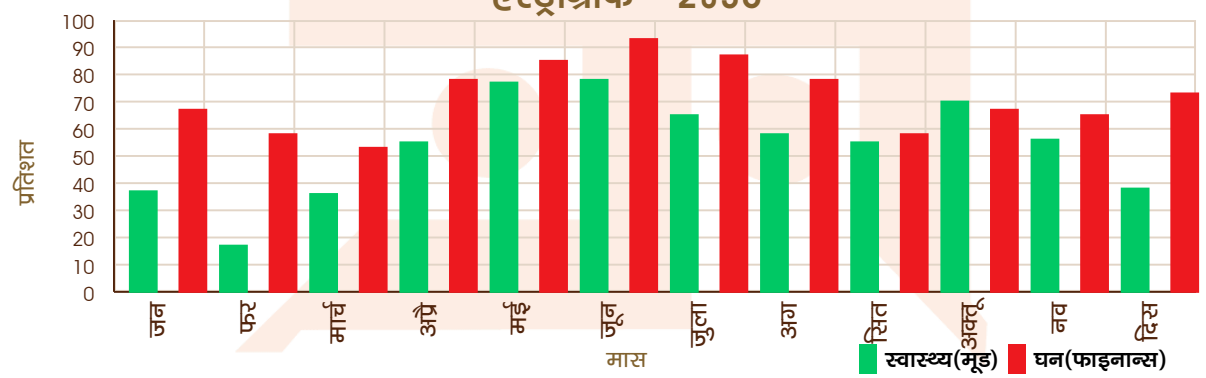

एस्ट्रोग्राफ - 2037

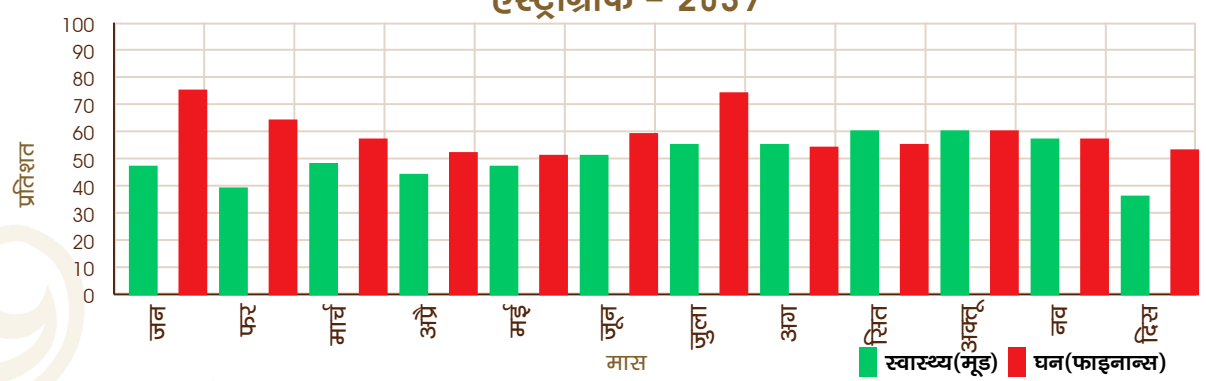

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

एस्ट्रोग्राफ - 2038

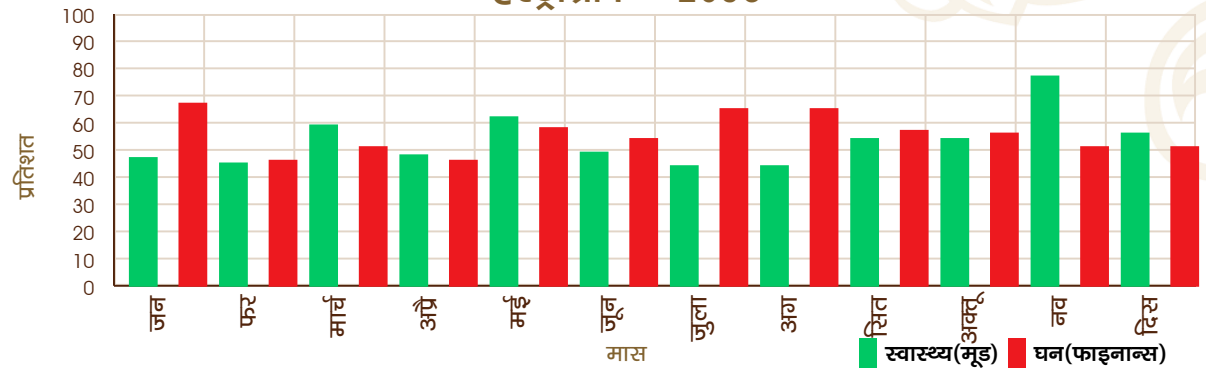

एस्ट्रोग्राफ - 2039

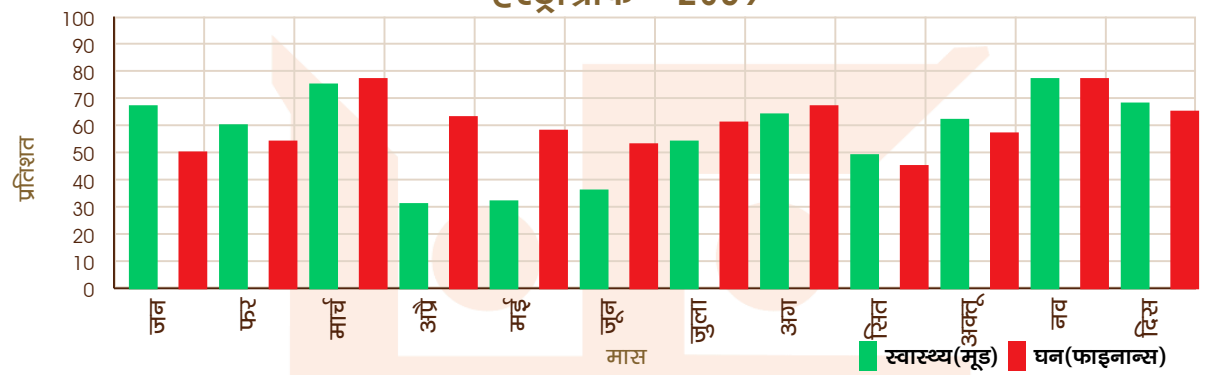

एस्ट्रोग्राफ - 2040

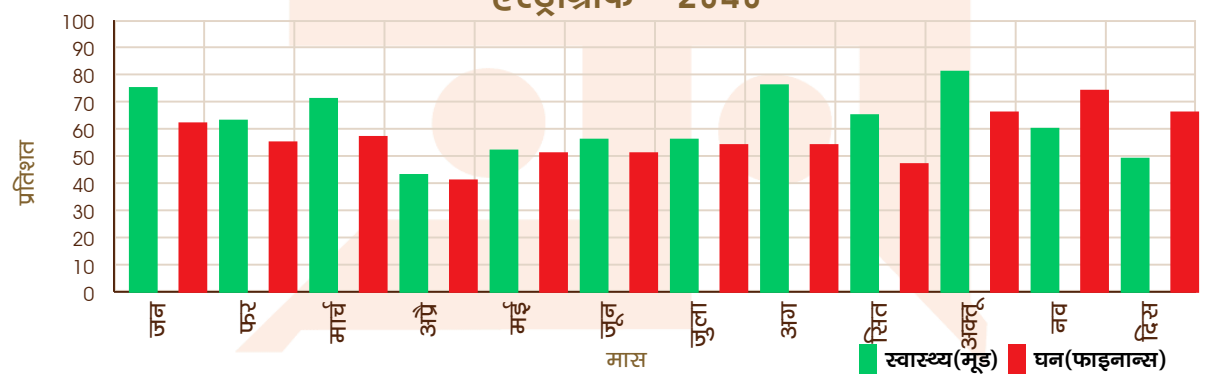

एस्ट्रोग्राफ - 2041

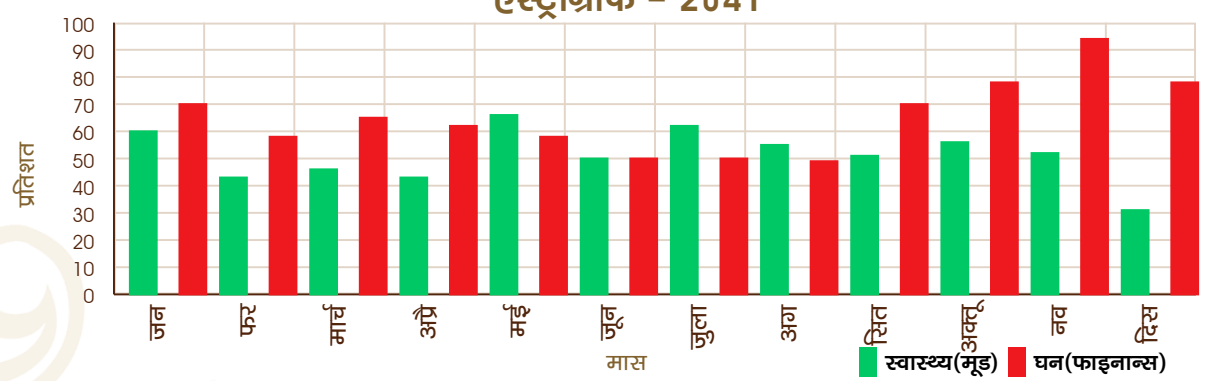

एस्ट्रोग्राफ - 2042

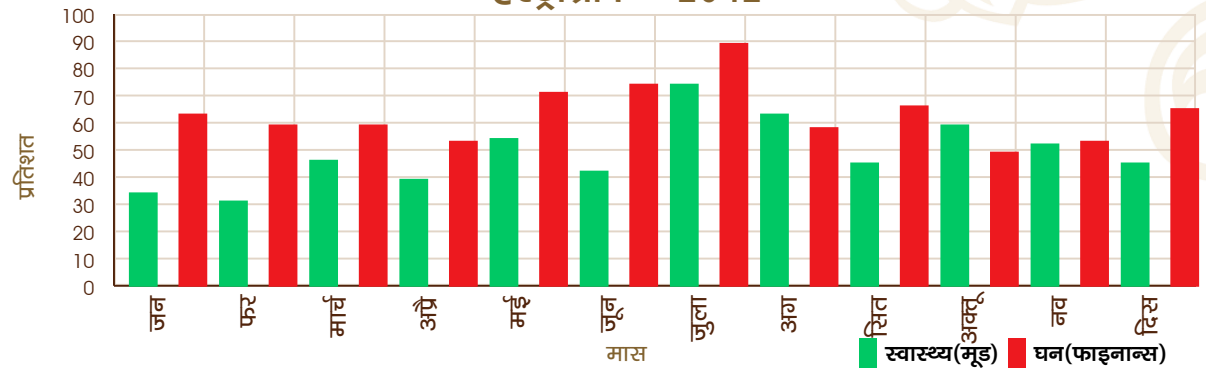

एस्ट्रोग्राफ - 2043

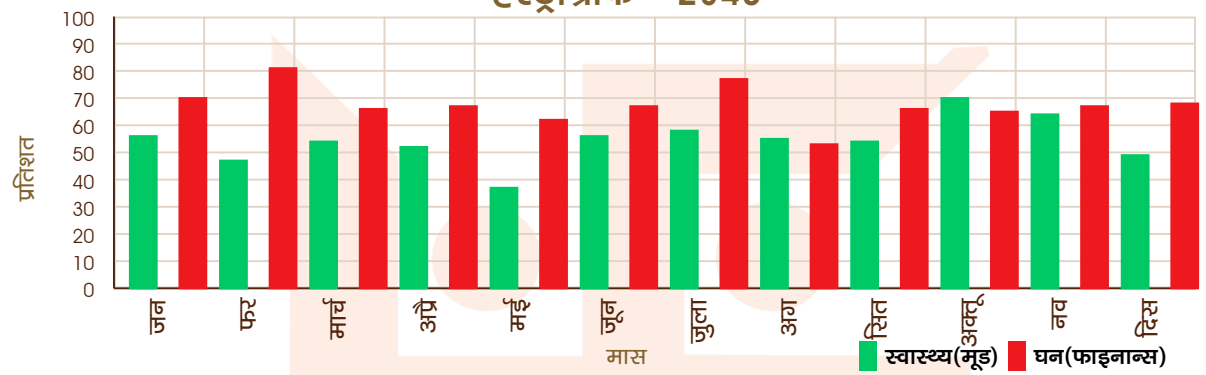

एस्ट्रोग्राफ - 2044

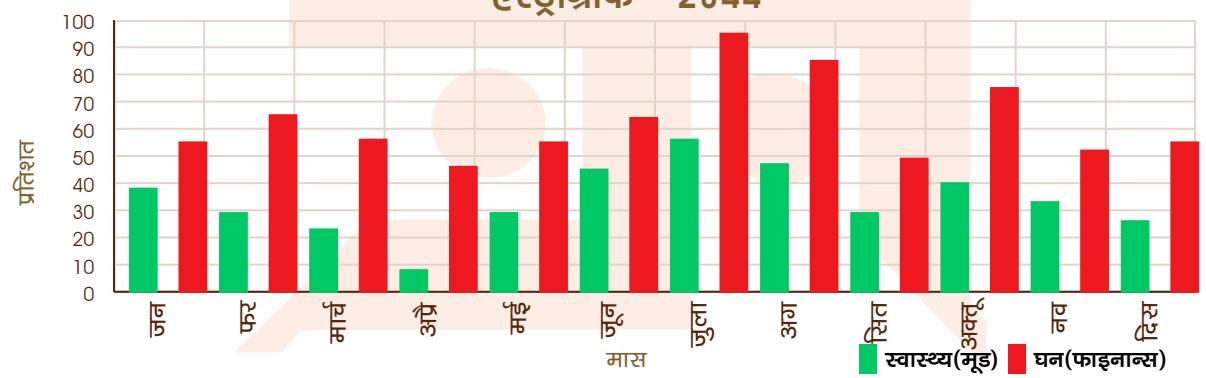

एस्ट्रोग्राफ - 2045

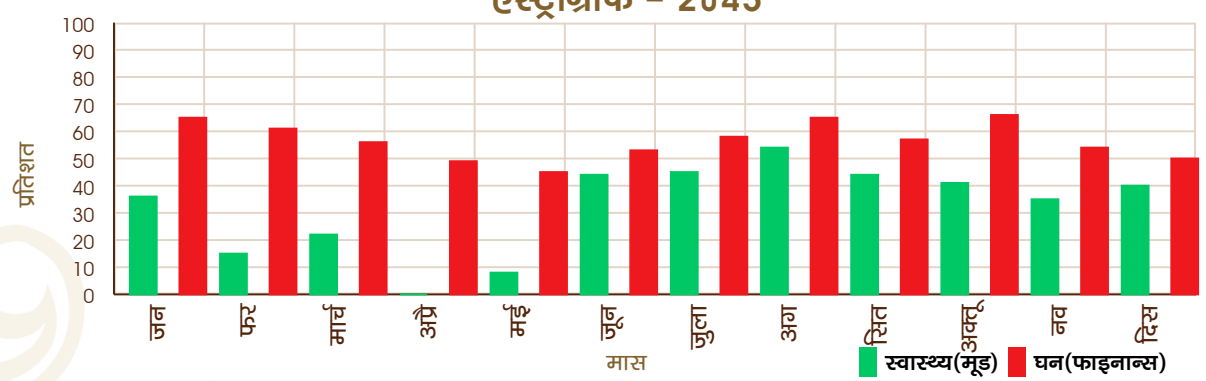

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

योग

हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः।।
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनूनम्।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः।।
वाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अच्ग प्रत्यच्ग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अच्कुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पांव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है। जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है। वाह्लीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे। आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में

अपना जीवन व्यतीत करेगें।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढ्गात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,राहु,केतु,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

जलधियोग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

गोसंपद्धनधान्यशोभिसदनं बन्धुप्रपूर्णं वर-
स्त्रीरत्नाम्बरभूषणानि महितस्थानं च सर्वोत्तमम्।
प्राप्नोत्यम्बुधियोगजः स्थिरसुखो हस्त्यश्वयानादिगो
राजेड्यो द्विजदेवकार्यनिरतः कूपप्रपाकृत्पथि।।
।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 48।।

यदि जन्मकुंडली में सुखस्थान में शुभग्रह हों अथवा चतुर्थस्थान पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ रही हो और चतुर्थेश अस्त न हो तथा अपनी स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में हो तो जलधि (समुद्र) योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धन-धान्य गोधन से युक्त उच्च भवन में निवास करेंगे तथा बंधु-बाधवों से सुख प्राप्त करेंगे। पत्नी, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि सुख से सुखी होंगे। आप स्थिर लक्ष्मीवान होंगे तथा धार्मिक कार्यों में रूचि रखेंगे। हर प्रकार का सुख आपके भाग्य से प्राप्त होता रहेगा।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

विपरीत राज योग

रिपुपतौ व्यये स्थिते।
अन्योन्यर्क्षगता निरीक्षणयुताश्चान्यैरयुक्तेक्षिता
जातोऽसौ नृपतिः प्रशस्तविभवो राजाधिराजेश्वरः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। पृ. 135 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठे भाव का स्वामी द्वादश (हानि) भाव में स्थित हो, इन भावों के स्वामी एक दूसरे की राशि में हों या एक दूसरे से वीक्षित हो और अन्य भावों के स्वामियों से युत या निरीक्षित न हो तो विपरीत राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप विपरीत राजयोग के अनुकूल प्रभावानुसार आप ग्राम प्रधान, जिला प्रधान, वार्ड प्रधान, विधायक, सांसद, प्रशासनिक अधिकारी अथवा राजपत्रित पदाधिकारी पद पर आसीन होकर पूर्ण रूपेण राजसुख का आनन्द प्राप्त करेंगे।

वाहन योग

धनाधिपेन संयुक्ते व्ययेशे स्वोच्चराशिगे ।
भाग्याधिपेन संदृष्टे वाहनाधिपतिर्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-173 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश अपनी उच्च राशि में धनेश से युक्त एवं नवमेश से दृष्ट हो तो जातक वाहनों का स्वामी होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 576 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः

।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-30 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.-57।।

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अच्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।